

सामुदायिक

**GOONJ**

RNI No. MPBIL02443/2020-TC

National News Magazine

वर्ष : 01 अंक : 11

नवंबर 2021

मूल्य: ₹ 25 पृष्ठ : 52

# दीपोत्सव का वर्ल्ड रिकार्ड





अक्टूबर 2021 का अंक

### ग्वालियर, नवंबर 2021

(वर्ष 01, अंक 11, , पृष्ठ 52, मूल्य 25 रुपए)

#### प्रेरणास्रोत

श्रीमती संधा सिकरवार

#### चेयरमैन

डॉ. जे. एस. सिकरवार

#### सम्पादक

कृति सिंह

#### सह संपादक

मनोज सिंह भद्रोरिया

#### उप संपादक

अंतिमा सिंह - कौस्तुभ सिंह

#### कार्यकारी संपादक

डॉ. आर. एन. एस. तोमर

#### सहायक संपादक

अषेन्द्र सिंह कुशवाह

#### सब एडिटर/एडिटिंग

इमरान गौरी

#### क्रिएटिव टीम

दर्शिता चौबे, नेहल सिंह

#### एडिटोरियल प्रभारी

सुनुति सिंह, स्निध तोमर

#### संकलन

भरत सिंह, सचिन सिंह

#### कानूनी सलाहकार

अरविंद दूदावत

#### कार्यालय प्रभारी

आकांक्षा तिवारी

#### छायांकन/सिटी रिपोर्टर

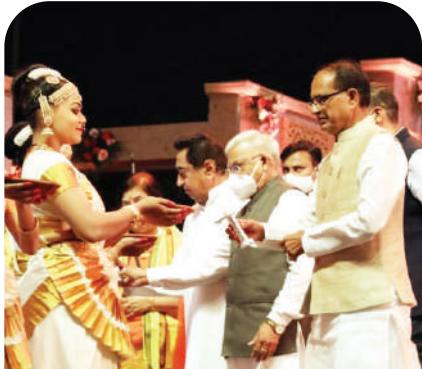
अनिल सिंह सिकरवार

#### गृज पत्रिका संपादकीय कार्यालय

ई-69/70, हरिथंकरपुरम लक्खकर ग्वालियर मध्य प्रदेश  
(संपर्क: 7880075908)

## IN THIS ISSUE...

### अयोध्या में दिवाली



मप्र स्थापना दिवस.....04



धूपद समारोह का केंद्रीय मंत्री रंद्रें सिंह तोमर ने किया शुभारंभ 05



आचार्य पुरोहितों का सम्मान..06



RADIOLOGY DAY : PERSON OF THE MONTH Dr. J.S. Sikarwar 43



परिवहन आयुक्त.....26



गृज स्टार....46

स्वात्वाधिकारी एवं प्रकाशक कृति सिंह के लिए मुद्रक संदीप कुमार सिंह द्वारा नेहा ग्राफिक्स, 32 ललितपुर कॉलोनी, लश्कर ग्वालियर मध्य प्रदेश से मुद्रित एवं

ई-69/70, हरिथंकरपुरम लक्खकर ग्वालियर मध्य प्रदेश से प्रकाशित। संसाधक कृति सिंह। सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र ग्वालियर होगा।

RNI.Title Code-MPBIL02443/2020-TC (समाचार वर्णन के लिए पीआरबी एकट के तहत जिम्मेदार) पत्रिका में प्रकाशित सामग्री, रचनाएं, एवं

स्तरभ लेखक के स्वयं के हैं इसमें संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। (पत्रिका में सभी पद अवैतनिक एवं अस्थाई हैं।) संपर्क: 7880075908



# अंधेरे में जलाएं रौशनी का दीया

दी

पावली दीपों का त्योहार है इसे दीवाली या दीपावली भी कहते हैं। दीवाली अंधेरे से रोशनी में जाने का प्रतीक है। भारतीयों का विश्वास है कि सत्य की सदा जीत होती है द्यूट का नाश होता है दीपावली स्वच्छता व प्रकाश का पर्व है।



अंधकार से प्रकाश की ओर दीपों का पावन पर्व दीपावली भी यही संदेश देता है यह अंधकार पर प्रकाश की जीत का पर्व है। दीपावली का अर्थ है दीपों की शृंखला। दीपावली शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के दो शब्दों दीप एवं आवलीअर्थात् शृंखला के मिश्रण से हुई है। दीपावली का पर्व कार्तिक अमावस्या को मनाया जाता है। वास्तव में दीपावली एक दिवसीय पर्व नहीं है, अपितु यह कई त्योहारों का समूह है, जिनमें धन त्रयोदशी अर्थात् धनतेरस, नरक चतुर्दशी, दीपावली, गोवर्धन पूजा और भैया दूज सम्मिलित हैं।

'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अर्थात् 'अंधेरे से ज्योति अर्थात् प्रकाश की ओर जाइ' यह उपनिषदों की आज्ञा है। इसे सिख, बौद्ध तथा जैन धर्म के लोग भी मनाते हैं। माना जाता है कि दीपावली के दिन अयोध्या के राजा श्री रामचंद्र अपने चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात लौटे थे। अयोध्यावासियों का हृदय अपने परम प्रिय राजा के आगमन से उल्सित था। श्री राम के स्वागत में

अयोध्यावासियों ने धी के दीए जलाए। कार्तिक मास की सघन काली अमावस्या की वह रात्रि दीयों की रोशनी से जगमगा उठी। तब से आज तक भारतीय प्रति वर्ष यह प्रकाश-पर्व हर्ष व उल्लास से मनाते हैं। दीपावली का अर्थ है दीपों की पंक्ति। दीपावली शब्द 'दीप' एवं 'आवली' की संधि से बना है आवली अर्थात् पंक्ति, इस प्रकार दीपावली शब्द का अर्थ है, दीपों की पंक्ति भारतवर्ष में मनाए जानेवाले सभी त्योहारों में दीपावली का सामाजिक और धार्मिक दोनों दृष्टि से अत्यधिक महत्व है। इसे दीपोत्सव भी कहते हैं।

दीपावली का त्योहार भारतीयों के इस गुण को बढ़ाने का काम करता है। अंधेरे की हार की चाहत और उजाले की जीत का यह उत्सव है। इसमें जहां दीये के संघर्ष की दास्तान है, वहीं अर्धम पर धर्म की जीत का उल्लास भी। खुशियों से लबरेज इस त्योहार को हम वैश्विक महामारी कोरोना के बीच मना रहे हैं इसलिए हमें ज्यादा सावधानी बरतने के जरूरत है। मास्क का इस्तेमाल और दो गज शारीरिक दूरी का पालन बहुत जरूरी है। सरकारी दिशा-निर्देश में इस त्योहार को मनाकर हम अपनी खुशियों को बढ़ा सकते हैं। दिवाली की पहचान दीयों से है। बदलते समय में दीया की जगह बिजली के बल्ब ने ले लिए हैं। इस बार तो हम सभी पहली बार एक जानलेवा महामारी के दौर में दिवाली मना रहे हैं। इस महामारी ने कई घरों के दीपक सदा के लिए बुझा दिया है। फिर, शरद ऋतु के आगमन के साथ वायु प्रदूषण का स्तर भी बढ़ने लगा है, जिससे कोरोना-संक्रमितों की संख्या में इजाफा हो सकता है। दिल्ली में तो तीसरी लहर की बात कही भी जा रही है। ऐसे में, जब हम जानते हैं कि पटाखों की वजह से हवा जहरीली हो जाती है और खुद एनजीटी ने पटाखों की बिक्री पर रोक लगा दी है, तो क्या हमें इस त्योहार को पटाखों के बिना नहीं मनाना चाहिए? मानवता से बढ़कर कोई दूसरा धर्म नहीं है। कोरोना वैक्सीनेशन का रिकार्ड 100 करोड़ टीकों का कीर्तिमान बन चुका है इसलिए अभी तक जिस किसी ने भी वैक्सीन नहीं लगवाई कृपया सबसे पहले वैक्सीन लगाएं और मैं सतर्कता के साथ वायु प्रदूषण के स्तर को नियंत्रित करने के प्रयास करने चाहिए।

**पाठकों को दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं**



**कृति सिंह**  
संपादक

“

दीपावली का त्योहार भारतीयों के इस गुण को बढ़ाने का काम करता है। अंधेरे की हार की चाहत और उजाले की जीत का यह उत्सव है। इसमें जहां दीये के संघर्ष की दास्तान है, वहीं अर्धम पर धर्म की जीत का उल्लास भी। खुशियों से लबरेज इस त्योहार को हम वैश्विक महामारी कोरोना के बीच मना रहे हैं इसलिए हमें ज्यादा सावधानी बरतने के जरूरत है। मास्क का इस्तेमाल और दो गज शारीरिक दूरी का पालन बहुत जरूरी है। सरकारी दिशा-निर्देश में इस त्योहार को मनाकर हम अपनी खुशियों को बढ़ा सकते हैं।

“



# अयोध्या में बना वर्ल्ड रिकॉर्ड, 12 लाख दीयों से जगमग हुई राम की नगरी

● (गूँज न्यूज नेटवर्क)

दे

शभर में धूमधाम से दीपाली मनाई गई। इस दैरान लोगों में त्योहार को लेकर उत्साह देखा गया। लोगों ने देर रात जमकर पटाखे छोड़े। लोग दिन में



बाजारों में खरीदारी देखे गए। हालांकि वायु प्रदूषण को देखते हुए दिल्ली-एनसीआर में इस बार पटाखों पर प्रतिबंध लगा हुआ है, लेकिन ग्रीन पटाखे चलाने की अनुमति मिली हुई। इस पौके पर राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों को बधाई दी। राष्ट्रपति कोविन्द ने कहा, दीपावली के शुभ अवसर पर मैं सभी देशवासियों को बधाई और शुभकामनाएं देता हूं। दीपावली बुराई पर अच्छाई की ओर अंधकार पर प्रकाश की विजय का पर्व है। आइए, हम सब मिलकर, इस त्योहार को स्वच्छ और सुरक्षित तरीके से मनाएं और पर्यावरण की रक्षा में योगदान करने का संकल्प लें।

राममय अयोध्या ने 5वें दीपोत्सव में वर्ल्ड रिकॉर्ड तोड़ दिया। दीपोत्सव की शुरुआत राम राज्याभिषेक शोभायात्रा

## अयोध्या में दिवाली



## धूमधाम से मनाई गई दीपावली, रोशनी में नहाया हुआ है पूरा देश

से हुई। सीएम योगी आदित्यनाथ अयोध्या पहुंचे। जहां उहोंने हॉलिकाऊपर स्वरूप पुष्पक विमान से उतरे प्रभु राम, सीता व लक्ष्मण का स्वागत किया। पूरी भव्यता के साथ उहोंने दीपोत्सव के लिए सजे मंच पर लाया गया। वियतनाम, केन्या, त्रिनिदाद और टोंबैगो के राजदूत ने प्रभु का राजतिलक किया। साथ ही, राम की पैड़ी पर दीपों को जलाने की प्रक्रिया शुरू हुई। सरयू के किनारे राम की पैड़ी से जुड़े 32 घाट पर करीब 9.51 लाख दीप जले और गिनीज रिकॉर्ड बना। वहीं, पूरी अयोध्या नगरी में मिलाकर 12 लाख दीये जलाए गए। विहंगम दृश्य राम की पैड़ी पर हजारों लोगों के सामने नजर आया। इस दैरान हुए लेजर लाइट शो ने लोगों को बांधे रखा। इस आयोजन को देखने के लिए गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स की एक टीम भी अयोध्या पहुंच गई है। विश्व रिकॉर्ड बनाने के लिए मिट्टी के एक दीप एको को कम से कम पांच मिनट तक जलाना होगा। भव्य दीपोत्सव कार्यक्रम के लिए प्रदेश की राज्यपाल आनंदेनन पटेल और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अयोध्या पहुंच चुके हैं। दीपोत्सव के मुख्य अतिथि केंद्रीय पर्यटन मंत्री जी किशन रेड़ी हैं। दीपोत्सव समारोह में भाग लेने अयोध्या पहुंचे सीएम योगी ने कहा, आज हमने नौ लाख मिट्टी के दीये जलाए हैं। मैं इस दीपोत्सव कार्यक्रम पर सभी प्रदेशवासियों को बधाई देना चाहता हूं। 12 लाख दीयों से जगमग हुई राम की नगरी। राम की पैड़ी में 9 लाख, राम मंदिर में 51 हजार और बाकी हिस्सों में 2.5 लाख दीये जलाए गए।



# आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश बनाने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दें

● (गृज न्यूज नेटवर्क)

**म**ध्यप्रदेश का 66वाँ स्थापना दिवस आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश की थीम पर मध्यप्रदेश उत्सव के रूप में मनाया गया। राज्य-स्तरीय कार्यक्रम भोपाल के लाल पेरेड ग्राउण्ड में राष्ट्रगान और मंत्रोच्चारण के साथ शुरू हुआ। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल, मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, नेता प्रतिक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ, संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुश्री उषा ठाकुर उपस्थित रहीं। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने नागरिकों को आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश के निर्माण का संकल्प दिलवाया।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने प्रदेश के नागरिकों को स्थापना दिवस और दीपावली के पावन पर्व की बधाई दी। उन्होंने कहा कि आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश के लिए सरकार के साथ समाज खड़ा हो, तभी हमारा विकास का संकल्प पूरा होगा। विकास में आम जनता का सहयोग और साथ चाहिए। प्रत्येक नागरिक कोई एक कार्य हाथ में ले। पर्यावरण सुरक्षा में भी सहयोग दें। हर व्यक्ति विशेष अवसरों पर पौधा लगाये। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि इस दिवाली पर आप सामान खरीदी में स्थानीय उत्पाद को प्राथमिकता दें। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भी कहा है कि इस दीपावली पर दीपक, मूर्ति आदि जो लोकल कारीगरों द्वारा बनी हैं, ऐसे उत्पाद ही खरीदें। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि कारीगरों की दिवाली भी अच्छी बन जाए, ऐसे हम सबको प्रयास करना होगे। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि कोरोना के कठिन काल के बाद यह आयोजन

हो रहा है। कोरोना से बचाव के लिए सभी को अनिवार्य रूप से दोनों डोज लगवाना है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने स्वदेशी वैक्सीन के माध्यम से जनता को सुरक्षा चक्र

को सहयोग दिया जाएगा। उनके द्वारा उत्पादित विद्युत को खरीदने की व्यवस्था शासन द्वारा होगी। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना प्रारंभ



उपलब्ध करवाया है, इसका उपयोग करें। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि विकास का प्रकाश बेमानी है यदि गरीब का घर न जगमगाए। हमारा संकल्प है कि गरीब की जिंदगी बदलते हों। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अधिकार के साथ कर्तृत्व का पालन भी करना है। कुसुम योजना मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि नवीन कुसुम योजना प्रारंभ होगी, जिसमें 2 मेगावाट के पावर प्लांट स्थापित करने के लिए स्थानीय निकायों

की जाएगी, जो युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने की दिशा में काफी मददगार होगी। योजना में युवाओं को उद्यम स्थापित करने के लिये एक से 50 लाख रुपये तक का ऋण दिया जायेगा, जिसकी गारंटी सरकार देगी। इसमें 3 प्रतिशत ब्याज अनुदान भी दिया जायेगा। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि पुरानी योजनाओं को नया स्वरूप दिया जायेगा। लघु, मध्यम और सूक्ष्म उद्योगों के क्षेत्र में तेजी से कार्य होगा।

# केंद्रीय मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने ग्वालियर-चंबल अंचल में 8 ऑक्सीजन प्लांट का किया लोकार्पण

● (गूँज न्यूज नेटवर्क)

**कें**

द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री तथा आतिथ्य एवं नगर विमानन मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया की अध्यक्षता में एक कार्यक्रम में ग्वालियर-चंबल अंचल में स्थापित 8 ऑक्सीजन प्लांट का वर्तुअल लोकार्पण किया गया। मध्य प्रदेश में स्वास्थ्य सुविधाएं बढ़ाने की दृष्टि से, लगभग ढाई करोड़ रुपए

GOVERNMENT OF INDIA



लागत के ये ऑक्सीजन प्लांट ग्वालियर जिले में मोहना व हसिनापुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, मुरैना जिले में सबलगढ़ उप-स्वास्थ्य केंद्र, भिंड में गोहद उप-स्वास्थ्य केंद्र, शिवपुरी में करोरा व पोहरी उप-स्वास्थ्य केंद्र, गुना जिले में चाचौड़ा उप-स्वास्थ्य केंद्र तथा अशोक नगर जिले के चदेरी उप-स्वास्थ्य केंद्र में स्थापित किए गए हैं। इनके सहित अनेकों स्वास्थ्य सुविधाएं पिछले एक-डेढ़ साल में केंद्र व राज्य सरकार के फंड, पीएम केयर्स तथा सीएसआर फंड से श्री तोमर तथा अन्य मंत्रियों के प्रयासों से अंचल सहित म.प्र. को प्रदान की गई है। इन आठ ऑक्सीजन प्लांट का लोकार्पण करते हुए केंद्रीय मंत्री श्री तोमर ने कहा कि इससे पहले अंचल में बाहर ऑक्सीजन प्लांट चालू किए जा चुके हैं। साथ ही, दो सीटी स्कैन मशीनें लगाई गई हैं, दस एंबुलेंस प्रदान की गई है, मुरैना में ब्लड सेप्रेटर मशीन लागई गई है तथा कई बड़ी व पोर्टेबल एक्सरे मशीनें भी लगाई गई हैं। ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर, सिलेंडर व अन्य सामग्री प्रदान की गई है। कोरोना महामारी का संकट आने के बाद इतने कम समय के भीतर, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा पीएम केयर्स फंड तथा अन्य मदों में एवं मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा स्वास्थ्य सुविधाएं जुटाई गई। राज्य के अस्पतालों में 202 ऑक्सीजन जनरेशन प्लांट्स की स्थापना की जा रही



## धूपद समारोह का केंद्रीय मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने किया शुभारंभ

ग्वालियर के महाराज बाड़े पर स्थित टाउन हॉल में धूपद समारोह का केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने इस भव्य और गरिमामय आयोजन का दीप प्रज्ञालित कर शुभारंभ किया। इस मौके पर मध्य प्रदेश सरकार में संस्कृति मंत्री उषा ठाकुर और खेल एवं युवक कल्याण मंत्री यशोधरा राजे सिंधिया एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभारी श्री भारत सिंह कुशवाह भी उपस्थित रहे। ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर को धूपद का जनक माना जाता है और यह आयोजन उनके प्रति श्रद्धांजलि है। दक्षिण मध्य क्षेत्र सारकृतिक केंद्र नागपुर और राजा मानसिंह तोमर सहित संस्कृति मंत्री उषा ठाकुर और खेल एवं युवक कल्याण मंत्री यशोधरा राजे सिंधिया और प्रदेश के उद्यानिकी राज्यमंत्री भारत सिंह कुशवाह ने धूपद का आनंद लिया...



है, जिनमें से 171 प्लांट्स क्रियाशील किए जा चुके हैं। इन क्रियाशील प्लांट्स से प्रतिदिन 187 मैट्रिक टन ऑक्सीजन का उत्पादन किया जा सकेगा एवं आवश्यकता पड़ने पर 9345 रोगियों को 10 लीटर प्रति मिनट की दर से ऑक्सीजन प्रदाय कर उपचारित किया जा सकेगा। म.प्र. में पीएम केयर्स द्वारा 88, मुख्यमंत्री राहत कोष द्वारा 13 एवं अन्य विभिन्न माध्यमों जैसे स्वास्थ्य विभाग, सीएसआर एवं स्थानीय प्रयासों से शेष 101 प्लांट्स की स्थापना की जा रही है। प्रदेश में 202 ऑक्सीजन जनरेशन प्लांट्स के द्वारा प्रतिदिन कुल लगभग 230 मैट्रिक टन मेडिकल ऑक्सीजन गैस का उत्पादन किया जा सकेगा एवं उत्पादित मेडिकल ऑक्सीजन गैस चिकित्सालयों में स्थापित ऑक्सीजन जनरेशन प्लांट के द्वारा सीधे मरीजों को उपलब्ध कराई जा सकेगी। श्री तोमर ने स्थानीय प्रशासन से इन स्वास्थ्य सुविधाओं की देखभाल तथा जनहित में उपयोग की अपेक्षा भी व्यक्त की है। श्री तोमर ने प्रधानमंत्री श्री मोदी जी को हार्दिक धन्यवाद दिया, जिन्होंने भारत सहित दुनियाभर में फैली

इस महामारी से निपटने के लिए देश में तुरंत आवश्यक कदम उठाएं और स्वास्थ्य सुविधाएं बढ़ाने पर दिन-रात मेहनत कर अमल कराया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जी के प्रोत्साहन और केंद्र व राज्य सरकारों के जबरदस्त तालमेल के कारण अभी तक भारत में वैक्सीन के 109 करोड़ से ज्यादा डोज लग चुके हैं, जो कि एक कीर्तिमान है और कोरोना के इस संकटकाल में पूरी दुनिया ने भारत के प्रयासों की भूर्भूरि प्रश়ংসा की है। उन्होंने बाकी बचे लोगों से दूसरा डोज शीघ्र लगावाने व कोरोना प्रोटोकाल का पालन करने का अनुरोध किया। केंद्रीय मंत्री श्री सिंधिया ने कहा कि प्रधानमंत्री जी ने इच्छाशक्ति दिखाई व स्वास्थ्य सुविधाएं बढ़ाने के तेजी से प्रयास किए गए, जिसके कारण कोरोना के संकट से देशवासी काफी हद तक बच सके हैं और मरीजों का लाभ पहुंचा है। श्री सिंधिया ने कहा कि वैक्सीन सुरक्षा कवच है, जिसे सभी पात्र लोग तुरंत लगवाएं। श्री सिंधिया ने ग्वालियर-चंबल अंचल सहित प्रदेश में स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने के लिए श्री तोमर के प्रयासों की सराहना की।



## आचार्यों, पुरोहितों और पुजारियों का अभिनंदन समारोह में हुआ सम्मान

ग्वालियर, संत समाज का अधिग्रान हैं स्वाभिग्रान हैं और गोरव हैं। संत तो देव के अवारार हैं इस पृथी और भूमि पर। अगर हमने उनका सानिध्य पा लिया तो हम सही रूप से मोक्ष के रास्ते पर चल रहे हैं। हम सभी लोग बंधनों में जकड़े हैं लेकिन संत सभी बंधनों से मुक्त हैं। शास्त्रों में लिखा गया है एक शब्द मम् मेरा मान, मेरा सम्मान, मेरी कीर्ति और मेरा दीलत। हमारे शास्त्रों ने सिखाया है कि भगवान के दरबार में गोका तभी मिलेगा जब हम इस मम् को त्याग कर देंगे। हुग उद्धार केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने मंगलवार को विद्वत परिषद द्वारा आयोजित आचार्यों, पुरोहितों और पुजारियों के अभिनंदन समारोह में व्यक्त किए। शिवपुरी लिंक रोड स्थित एक निजी कॉलेज में आयोजित समारोह की अध्यक्षता दंदरोआ सरकार के महांत रामदास महाराज ने की

तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में खनेता आश्रम के संत रामभूषण दास महाराज उपरिथत थे। अपने संबोधन में आगे सिंधिया ने कहा कि सत्य परेशान हो सकता है लेकिन सत्य कभी पराजित नहीं हो सकता। ब्रह्मण समाज की यहीं विशेषता रही है निर्भकता, निंदरात और सत्य का साथ देना। हमें भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है क्योंकि हम भी जो सही हैं उसे सही कहते हैं जो गलत है उसे गलत कहते हैं। उन्होंने कहा कि सरसग के बिना विवेक नहीं होता और श्रीराम की कृपा के बिना सत्यंग सहज नहीं मिलता नहीं। जब हम प्रवचन सुनने जाते हैं जब हम सरसग में उपस्थित होते हैं उस समय मनव की अंतआमा की भावना उस सत्यंग में उस प्रवचन में स्वतः की नहीं लेकिन देव देवताओं के दरबार में नतमस्तक होकर उनका आर्शीवाद प्राप्त करने की होनी चाहिए।

## प्रजातंत्र में पत्रकार सही राह दिखाते हैं: सिंधिया

### ● (गूंज न्यूज नेटवर्क)

**प्र** जातंत्र में राजनेता और पत्रकार एक ही सिक्के के दो पहलू के सामन हैं। दोनों का एक ही लक्ष्य है जनसेवा। माध्यम भर अलग-अलग होते हैं। इस आशय के विचार केन्द्रीय नागरिक उद्घ्यन मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने व्यक्त किए। श्री सिंधिया डिजियाना उद्द्वव राष्ट्रीय पत्रकार सम्मान समारोह को संबोधित कर रहे थे। श्री सिंधिया ने कहा कि प्रजातंत्र में राजनेताओं की भूमिका जनसेवक की और पत्रकारों की भूमिका पहरेदार के रूप में होती है। पहरेदार, जनसेवकों अर्थात् राजनेताओं को सही रास्ता दिखाने का काम करते हैं। भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंधन संस्थान के स्व. काशीनाथ चतुर्वेदी सभागार में आयोजित हुए भव्य व गरिमामयी कार्यक्रम में देश के जानेमाने लेखक विश्लेषक व पत्रकार तथा भारत सरकार के सूचना आयुक्त श्री उदय माहुरकर को वर्ष 2021 का लाइफ टाईम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें केन्द्रीय नागरिक उद्घ्यन मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने प्रदान किया। इस अवसर पर विभिन्न श्रेणियों में एक दर्जन से अधिक पत्रकार भी सम्मानित किए गए। कार्यक्रम में प्रदेश के नगरीय विकास एवं आवास राज्य मंत्री श्री ओपीएस भदौरिया भी विशेष रूप से मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ पत्रकार श्री पुष्टेंद्र सिंह ने किया। अंत में भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंधन संस्थान के निदेशक श्री आलोक शर्मा ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में डिग्जियाना मीडिया समूह के एम.डी. श्री तेजिन्दर पाल सिंह विशिष्ट

अतिथि के रूप में उपस्थित थे। सेवानिवृत्त अपर आयुक्त जनसंपर्क श्री आएमपी सिंह व वरिष्ठ पत्रकार श्री अभिलाष खाण्डेकर सहित ज्यूरी के अन्य सदस्यगण मौजूद थे। आरंभ में समारोह के सम्बन्ध में

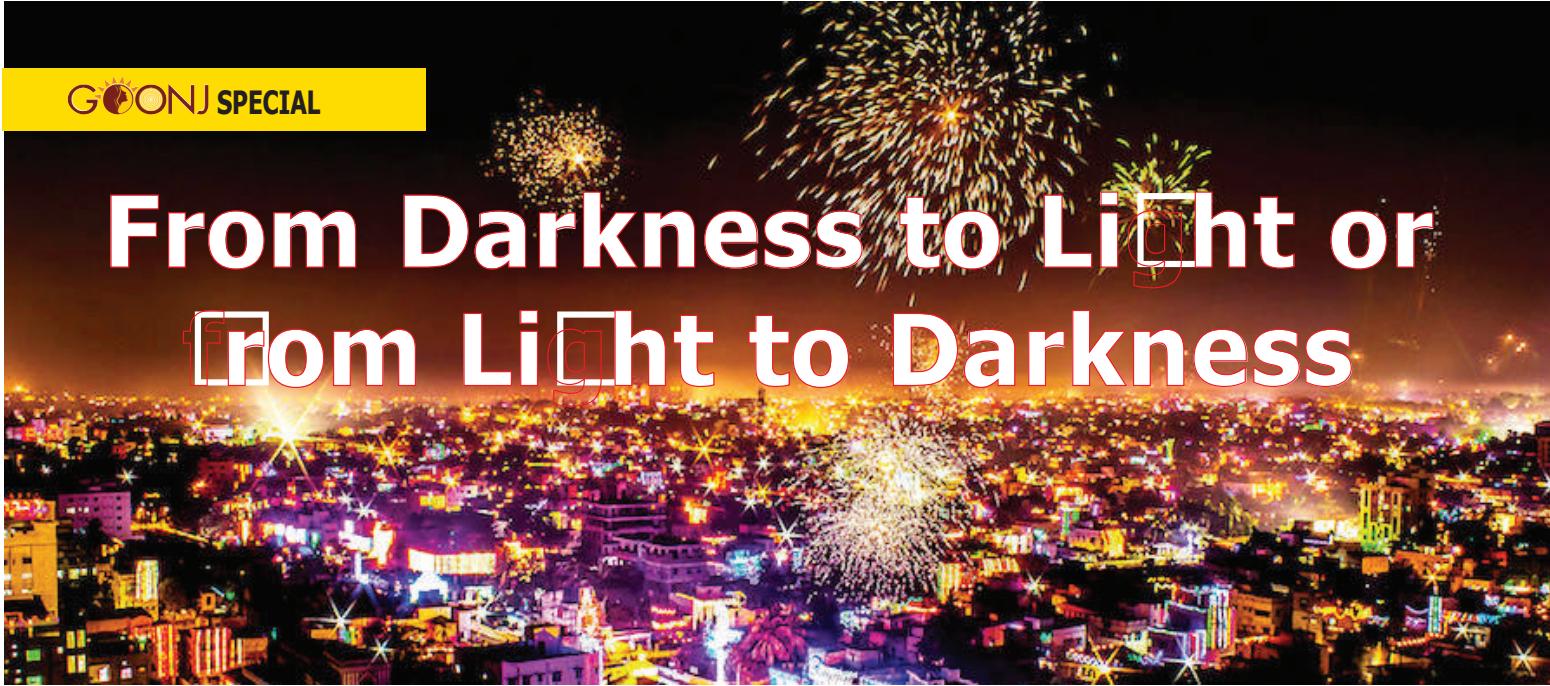


उद्घव संस्था के अध्यक्ष डॉ. केशव पाण्डेय व सचिव श्री दीपक तोमार ने कार्यक्रम की प्रस्तावना प्रस्तुत की। पत्रकारिता की विभिन्न श्रेणियों में इनका हुआ सम्मान : उद्घव राष्ट्रीय पत्रकारिता समान समारोह में 'राज्य स्तरीय सम्मान' प्रिन्ट मीडिया केटेगरी में ग्वालियर के धर्मेन्द्र सिंह भदौरिया तथा इलेक्ट्रोनिक केटेगरी में भोपाल के श्री शरद द्विवेदी को प्रदान किया गया। साथ ही दि प्रेसिडेंस मैगजीन के सौजन्य से यंग ऐचीवर अवार्ड भी प्रदान किया गया। ग्वालियर के देव श्रीमाली, भोपाल के प्रमोद भारद्वाज एवं इन्दौर के उज्जवल शुक्ला को उत्कृष्ट पत्रकारिता के लिये विशेष

पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। स्तम्भकार लेखक की श्रेणी में कृष्ण मोहन झा सम्मानित किए गए। एजेंसी श्रेणी में आई.ए.एन.एस. भोपाल के संदीप पॉराणिक तथा पी.आर.ओ. श्रेणी में ग्वालियर के मधु

सोलापुरकर को सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त उत्कृष्ट पत्रकारिता के लिये ग्वालियर के स्टार रिपोर्टर्स एवं फोटोग्राफर को भी उद्घव पत्रकारिता समान से सम्मानित किया गया। इनमें ग्वालियर से उत्कृष्ट पत्रकारिता के लिए स्टार रिपोर्टर्स समान मनीष शर्मा (दैनिक भास्कर) एवं महेश गुप्ता (पत्रिका) को प्रदान किया गया। यंग एचीवरस् अवार्ड वरुण शर्मा (नई दुनिया) को एवं फोटो जर्नलिस्ट अवार्ड से राजेश जायसवाल (स्वदेश) को सम्मानित किया गया। साथ ही ग्वालियर हलचल की श्रीमती कविता मांडे को भी सम्मानित किया गया।

# From Darkness to Light or From Light to Darkness



**Palak Sanjay Gupta**

The grand festival of lightCelebrated on new moon nightSweets are tasty and full of delightLet the shine be brightAs evil ends after a prolonged fightAnd good with all its mightLead us from darkness to lightThe light of the candles belowThe sparkling firework up aboveFills the heart with amusement and love.Diwali, the “Festival of Lights” is here again upon us with prayers, sweets, gifts, apparels and fireworks and is celebrated with great pomp and show as a remembrance. Remembrance of good over evil, righteousness over wickedness, light over darkness in every era and every religion. The festival, which is observed by Hindus, Sikhs and Jains, last five days in its entirety. There are vivid stories of mythology and how these ancient tales in epics becomes part of religious practice sharing a common theme of triumph of justice.To assist humanity in its time of need, Lord Rama and Lord Krishna, the holy incarnations of God Vishnu, killed the demons – Ravana, Kumbhkarna, Indrajeet in Sri Lanka; Narakasur in Tamil Nadu that came their way thus restoring peace in heaven and earth.It is also said that Goddess Lakshmi was born on the darkest of the night; the new moon of Karthik month during the churning of cosmic ocean. Also, when she grew up, she married Lord Vishnu on Diwali and there were many lamps lit at that time to commemorate the holy event, in the Hindu tradition, Lakshmi is worshipped as the goddess of wealth, while Vishnu is seen as the preserver of

humanity.Goddess Kali an incarnation of Goddess Durga is worshipped during Diwali festival in West Bengal. She killed all the demons that came in her way. She lost control on herself and in her rage, she started destroying anything that came in her way. To stop her Lord Shiva lay down on her path and after

Also, Golden temple got its foundation stone on this day.The festival of Diwali in India is celebrated for five days. The first day is called Dhanteras. On this day, Lord Dhanwantari, the god of medicine, came out of the ocean with the science of Ayurveda for mankind. The second day of Diwali is called Naraka

Chaturdashi. The third day is for Lakshmi Puja. The fourth day is Govardhan puja, the day when lord Krishna asked the people of Vrindavan to pray to Giri Govardhan, the hill, instead of Indra. The fifth day is dedicated to brothers and sisters and is celebrated as Bhai Dauj. It is based on the belief that in the



stepping on him she came back to her senses. So, Diwali is celebrated to commemorate the containment of Goddess Kali’s rage.According to the epic Mahabharata the Pandavas returned to Hastinapur after thirteen years of exile. People loved and welcomed them by lighting their houses with earthen lamps.For Jains, Diwali celebrates the nirvana (enlightenment) of Mahavir, spiritual teacher of the Jain’s path.Sikhs consider Diwali a commemoration of the release of Guru Hargobind, the sixth of 10 spiritual leaders, who was held prisoner by Mughal emperor Jahangir was liberated from prison on this day.

Vedic Era, lord of death, Yama, once visited his sister Yamuna. He gave her a boon that whoever would visit her sister on this day, would be liberated of all his sins and will achieve moksha.In these five days, fireworks are handled by us. Loud noise of fireworks causes noise pollution leading to hypertension and temporary deafness. On this auspicious occasion unknowingly harmful gases and toxic substances released to environment by bursting crackers which disturb the Eros of animals like birds and dogs.Before using fireworks we should ask ourselves that where are we heading towards

# तेज हुई रप्तार

## क्लाइमेट चेंज

### की रप्तार

# कहीं आग तो कहीं बाढ़

**जि** तीर्ते तेजी से जलवायु परिवर्तन हो रहा है इसके लिए मानव क्रियाएं जिम्मेदार हैं। घरेलू कामों, कारखानों और परिचालन के लिए मानव तेल, गैस, कोयले के इस्तेमाल की वजह से जलवायु पर इसका असर पड़ रहा। ये जीवाशम ईंधन जलते हैं तो उनसे ग्रीन हाउस गैस निकलती है जिसमें सबसे अधिक मात्रा कार्बन डायोक्साइड की होती है। इन गैसों की सघन मौजूदी की वजह से सूर्य का ताप धरती से बाहर नहीं जा पाता है और यही धरती का तापमान बढ़ने का कारण है। 19वीं सदी की तुलना में धरती का तापमान लगभग 1.2 सेल्सियस अधिक बढ़ चुका है और वातावरण में CO<sub>2</sub> की मात्रा में भी 50प्रश्न तक वृद्धि हुई है। दुनिया में कहीं जंगलों की आग कहर बरपा रही कहीं ग्लोशियर पिछल रहे। ये सामान्य घटनाएं नहीं। ये सारी घटनाएं अप्रत्याशित हैं।

जलवायु परिवर्तन या फिर कहें क्लाइमेट चेंज का मतलब पृथ्वी के औसतम तापमान में हो रही वृद्धि से है। लेकिन इस वृद्धि की वजह क्या है? ये तो आपको पता ही है कि पृथ्वी को प्रकाश और गर्मी सूरज से मिलती है। सूरज की किरणें जब पृथ्वी पर पड़ती हैं तो उनमें से कृछु किरणें परावर्तित होकर बस अंतरिक्ष में चली जाती हैं और कुछ किरणों को हमारे वायुमंडलों में मौजूद ग्रीन हाउस गैसें परावर्तित होने से रोक लेती हैं। इसे ग्रीन हाउस इफेक्ट कहते हैं। वायुमंडल को आप पृथ्वी के चारों ओर गैसों का एक कवच कह सकते हैं। सूरज की इस गर्मी को वायुमंडल में मौजूद ग्रीन हाउस गैसें परावर्तित होने से रोक लेती हैं। इसी से पृथ्वी पर जीवन संभव हो पाता है। वरना बेहद ठंड के कारण न

सिफ इंसानों का रहना मुश्किल हो जाएगा बल्कि खेती भी आसान नहीं होगी। फिर दुनिया की आबादी का पेट भरना मुश्किल होगा। ये तो ही गई टेक्निकल बात अगर

बैमैसम गर्मी और बरसात भारत के कई इलाकों को परेशान कर रहा है तो बाढ़ और बारिश से लोगों की जान जा रही है। केरल में अक्टूबर के महीने में बाढ़ से कम

से कम 42 लोगों की मौत।

अक्टूबर में ही उत्तराखण्ड में बाढ़, बारिश और भूस्खलन से 100 से ज्यादा लोगों की मौत। अक्टूबर महीने में गंगा का उफान पर होना। ये सामान्य घटनाएं नहीं हैं। ये सारी घटनाएं अप्रत्याशित हैं। मतलब ऐसी आपदाओं का अनुमान किसी ने भी नहीं किया था। लेकिन चिंता की बात ये है कि इन आपदाओं की संख्या लगातार बढ़ रही है। लेकिन अगर आपको ये लग रहा है



सरला शब्दों में बताने की कोशिश करें तो किसी भी इलाके में उसे वेडर पैटर्न क्लाइमेट कहते हैं। जैसे हमारे हिन्दुस्तान की बात करें तो सावन, भादो में पानी बरसता है। पूस के महीने में खूब ठंड परती है। अगर इस सामान्य स्थिति में बदलाव आए जैसे मान लीजिए कि अगस्त में कड़के की ठंड पड़ने लगे और नवंबर में खूब पानी गिरे तो क्या होगा खेती का पूरा पैटर्न बदल जाएगा। सारी चीजें खराब हो जाएंगी क्योंकि हम शारिरिक और मानसिक रूप से इसके लिए तैयार नहीं होंगे।

कि ये बहुत है तो आपको गलतफहमी है। जो अतीत में देखने को मिला वो तो एक ट्रेलर है असली पिछर तो अभी बाकी है मेरे दोस्त। ये सीधे तौर पर इंसानी सभ्यता के अस्तित्व से जुड़ी है। अगर इसे गंभीरता से नहीं लिया गया तो दुनियाभर के तमाम तटीय शहर एक दिन समंदर का निवाला बन जाएंगे और मानव सभ्यता का वजूद भी मिट सकता है। क्या है जलवायु परिवर्तन, किन देशों पर इसका सबसे ज्यादा खतरा है, भारत के संदर्भ में क्या है और इससे बचाव के लिए आगे का रास्ता क्या होगा सब आपको तप्सील से बताते हैं।



## निःस्वार्थ सेवा के लिए कई हस्तियों को मिले पद्म पुरस्कार

**इ**

स बार 141 लोगों को पद्म पुरस्कार दिए गए। जिन्हें पद्मविभूषण, पद्मभूषण और पद्मश्री पुरस्कार मिलता है, उन्हें उनके मित्र और रिश्तेदार प्रायः बधाइयां भेजते हैं हाँ लेकिन मैं या तो चुप रहता हूँ या अपने कुछ अभिन्न मित्रों को सहानुभूति का सदेश भिजवाता हूँ। सहानुभूति इसलिए कि ऐसे पुरस्कार पाने के लिए कुछ लोगों को पता नहीं कितनी उठक-बैठक करनी पड़ती है, अप्रिय नेताओं और अफसरों के यहां दरबार लगाना होता है और कई बार तो रिश्त भी देनी पड़ती है, हालांकि सभी पुरस्कृत लोग ऐसे नहीं होते। लेकिन इस बार कई ऐसे लोगों को यह सम्मान मिला है, जो न तो अपनी सिफारिश खुद कर सकते हैं और न ही किसी से करवा सकते हैं। उन्हें तो अपने काम से काम होता है। इनमें से कई लोग ऐसे होते हैं, जिन्हें न तो पढ़ना आता है और न ही लिखना। या तो उनके पास टेलिविजन सेट नहीं होता है और अगर होता भी है तो उन्हें राजनीति में कोई दिलचस्पी नहीं होती। वे खबरें तक नहीं देखते। उन्हें हमारे गण्डपति और प्रधानमंत्री तक के नाम भी पता नहीं होता। उन्हें पता ही नहीं होता कि कोई सरकारी सम्मान भी होता है या नहीं? उन्हें किसी पुरस्कार या तिरस्कार की परवाह नहीं होती। ऐसे ही लोग प्रेरणा-पुरुष होते हैं। इस बार भी ऐसे कई लोगों को पद्मश्री पुरस्कार के लिए चुने जाने पर मेरी हार्दिक बधाई और उस सरकारी पुरस्कार-समिति के लिए भी सराहना। लेकिन इस बार कई ऐसे लोगों को यह सम्मान मिला है, जो न तो अपनी सिफारिश खुद कर सकते हैं और न ही किसी से करवा सकते हैं। उन्हें तो अपने काम से काम होता है। इनमें से कई लोग ऐसे होते हैं, जिन्हें न तो पढ़ना आता है और न ही लिखना। कौन हैं, ऐसे लोग? ये हैं-हरेकाला हजब्बा, जो कि खुद अशिक्षित हैं और फुटपाथ पर बैठकर संतरे बेचते थे। उन्होंने अपने जीवन भर की कमाई लगाकर कर्णाटक के अपने गांव में पहली

पाठशाला खोल दी। दूसरे हैं, अयोध्या के मोहम्मद शरीफ, जिन्होंने 25 हजार से अधिक लावारिश लाशों का अंतिम संरक्षण किया। 1992 में रेलवे पटरी पर उनके बेटे के क्षत-विक्षत शव ने उन्हें इस पुण्य-कार्य के

आदिवासी महिला राहीबाई पोपरे भी देसी बीज खुद तैयार करती हैं, जिनकी फसल से उस इलाके के किसानों को बेहतर आमदनी हो रही है। उन्हें लोग ‘बीजमाता’ या सीड मदर कहते हैं।



लिए प्रेरित किया। तीसरे, लद्दाख के चुल्टिम चोनजोर इन्हें दमदार आदमी हैं कि करगिल क्षेत्र के एक गांव तक उन्होंने 38 किमी सड़क अकेले दम बनाकर खड़ी कर दी। चौथी, कर्णाटक की आदिवासी महिला तुलसी गौड़ा ने अकेले ही 30 हजार से ज्यादा वृक्ष रोप दिए। पांचवें, राजस्थान के हिमताराम भांमूजी भी इसी तरह के संकल्पशील पुरुष हैं। उन्होंने जोधपुर, बाड़मेर, सीकर, जैसलमेर और नागौर आदि शहरों में हजारों पौधे लगाने का सफल अभियान चलाया है। छठी, महाराष्ट्र की

यदि इन लोगों के साथ उज्जैन के अंबोदिया गांव में ‘सेवाधाम’ चला रहे सुधीर गोयल का नाम भी जुड़ जाता तो पद्म पुरस्कारों की प्रतिष्ठा में चार चांद लग जाते। इस सेवाधाम में साढ़े सात सौ अपंग, विकलांग, कोढी, अंधे, बहरे, परित्यक्ता महिलाएं, पूर्व वेश्याएं, पूर्व-भिखारी आदि निःशुल्क रहते हैं। इसे कोई सरकारी सहायता नहीं मिलती। ऐसे अनेक लोग भारत में अनाम सेवा कर रहे हैं। उन्हें खोज-खोजकर सम्मानित किया जाना चाहिए ताकि देश में निःस्वार्थ सेवा की लहर फैल सके।



# वायु प्रदूषण की गिरपत में देश

H

र वर्ष की तरह हमारे देश की राजधानी दिल्ली और से ही कुछ लोगों की लापरवाही के चलते एक बार फिर दमधोंटू जहरीली आबोहवा के चलते गैस चैंबर बन कर हमारा स्वागत कर रहा है। धरातल पर पिछले कई वर्षों से निंंतर बन रहे भयावह हालात देखकर ऐसा लगता है कि हम लोग अपने व अपनों के अनमोल जीवन को स्वस्थ व सुरक्षित रखने के प्रति कितने ज्यादा लापरवाह हैं। विचारणीय बात यह है कि आज देश में वायु प्रदूषण के चलते हर छोटे बड़े शहर की आबोहवा में गंभीर बीमारियों को जन्म देने वाले विषेणे प्रदूषक तत्वों का भंडार मंडरा रहा है, अब तो हमारे देश में भी इसकी वजह से लोग बेमौत काल का ग्रास बने लगे हैं और फिर भी हम लोग तमाशबीन बनकर सारी जिम्मेदारी सरकार व सिस्टम के भरोसे छोड़कर आराम से हाथ पर हाथ रखकर बैठे हैं, अब वह समय आ गया है जब हम लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक होकर हर तरह के प्रदूषण से निदान के लिए दूरगामी रणनीति बनाकर धरातल पर मिलजुल कर स्थाई पहल करनी होगी।

देशभर में कई राज्यों में दम घोंटू हवा से कई तरह की बीमारियां पनप रही हैं जिससे सांस लेना मुश्किल हो रहा है। दिल्ली और आसपास के इलाकों के अलावा देश के अन्य हिस्सों की वायु गुणवत्ता भी बेहद खराब हो गई है। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार दिल्ली के अलावा देश के 19 शहर गंभीर प्रदूषण की चेष्ट में हैं, जिनमें से अधिकांश उत्तर भारत के हैं। कुछ लोग अदालतों के हर फैसले में कमिया ढूँढ़ते हैं, दीवाली पर आतिशबाजी पर प्रतिबंध संबंधी अदालत के फैसले का भी धार्मिक परम्पराओं में अदालती हस्तक्षेप का मामला बताकर जमकर विरोध किया गया और काफी हद तक उसी का परिणाम रहा कि इस वर्ष

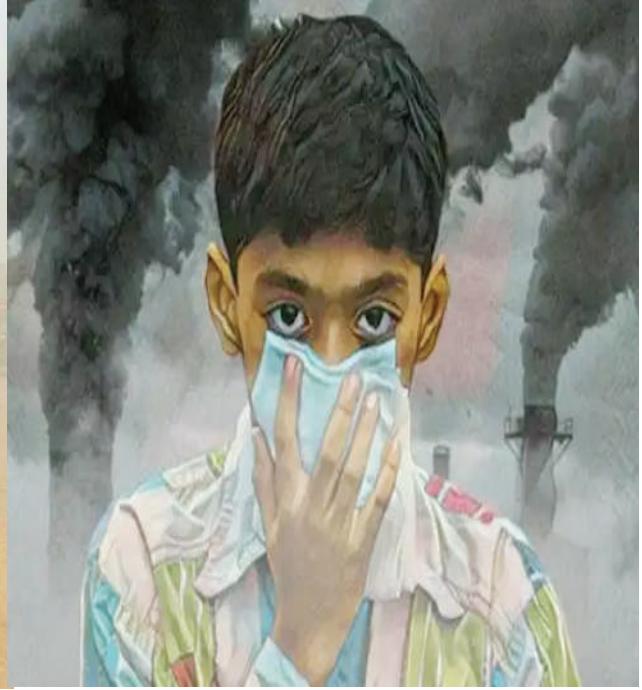
देश के लगभग तमाम हिस्सों में जबरदस्त आतिशबाजी हुई। ऐसे अदालती फैसलों का विरोध करते समय हम भूल जाते हैं कि दीवाली तो पटाखों की शुरुआत होने के सदियों पहले से ही मनाई जाती रही है। वैसे भी देखा जाए तो सरकारें

बिके। तमाम चेतावनियों और दिशा-निर्देशों के बावजूद अब दिल्ली की रात और उसके बाद प्रदूषण का स्तर इतना खतरनाक हो जाता है कि ऐसा लगने लगता है, मानो किसी संक्रामक बीमारी ने हमला बोल दिया हो। ऐसे में अगर लोगों



और देश की तमाम जिम्मेदार संस्थाएं देश को प्रदूषण के कहर से बचाने में नाकारा साबित हो रही हैं। दिल्ली में सभी तरह के पटाखों पर पूर्ण प्रतिबंध होने के बावजूद खबर पटाखे चले, कहीं कोई किसी को रोकने वाला नहीं था। इसी प्रकार हरियाणा में भी सरकार द्वारा कई जिलों में पटाखों पर प्रतिबंध लगाया गया था लेकिन पुलिस-प्रशासन की नाक तले या यूं कहें कि उहाँ के संरक्षण में पर्यावरण के लिए जानलेवा हर तरह के पटाखे खुलेआम

के स्वास्थ्य के मद्देनजर सर्वोच्च न्यायालय ऐसे कठोर फैसले लेने पर विवश होता है तो इसमें गलत क्या है। ऐसे फैसलों को धर्म और आस्था की चाशनी में घोलकर देखने की बजाय अगर अदालत के ऐसे फैसलों की सदाशयता को समझें और उहें व्यावहारिक बनाने में अपने-अपने स्तर पर प्रयास करें तो यह स्वास्थ्य के लिहाज से न केवल दूसरों के बल्कि स्वयं अपने हित में भी होगा। वायु गुणवत्ता सूचकांक गंभीर श्रेणी में चले जाने के कारण



लोगों को गले में जलन तथा आंखों में पानी आने जैसी परेशानियों से जूझना पड़ रहा है। सबसे ज्यादा परेशानी उन लोगों को है, जिनके फेफड़े कोरोना के कारण पहले ही काफी कमज़ोर हैं। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार आम धारणा है कि प्रदूषण के कारण श्वास संबंधी परेशानियां ज्यादा होती हैं लेकिन विभिन्न शोधों में स्पष्ट हो चुका है कि प्रदूषण के सूक्ष्म कण हमारे मस्तिष्क की सोचने-समझने की क्षमता को भी प्रभावित करते हैं। मानव स्वास्थ्य पर वायु प्रदूषण के दुष्प्रभावों के संबंध में यह खुलासा भी हो चुका है कि इससे पुरुषों के वीर्य में शुक्राणुओं की संख्या में 40 फीसदी तक गिरावट दर्ज की गई है, जिससे ननुसंकरता का खतरा तेजी से बढ़ रहा है। मेदांता के चेयरमैन डॉ. नरेश त्रेहन का कहना है कि जहरीली होती हवा से बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर भी गंभीर असर पड़ेगा। बड़ों की तुलना में बच्चे प्रदूषण से ज्यादा प्रभावित होते हैं। दरअसल प्रदूषण के कण जब सतह तक पहुंच जाते हैं तो सबसे ज्यादा बच्चे ही उनके समर्पण में आते हैं। ऐसे बच्चे, जो सामान्य दिनों में श्वसन संक्रमण की चपेट में आ जाते हैं, उनमें प्रदूषण के कारण संक्रमण का स्तर काफी बढ़ जाता है। प्रदूषण के कारण बच्चों में एकाग्रता की कमी, चिड़चिड़ापन इत्यादि परेशानियां भी देखने को मिलती हैं, इसके अलावा प्रदूषण बच्चों की लम्बाई कम होने का भी एक अहम कारण बन रहा है।

पहले से ही प्रदूषण की खतरनाक स्थिति के महेनजर पटाखों पर सुप्रीम कोर्ट द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों की धज्जियां उड़ाते हुए दिल्ली-एनसीआर में इस साल भी जिस प्रकार लोगों ने जमकर पटाखे चलाए, उससे वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) कई इलाकों में गंभीर स्तर से भी अधिक 480 तक पहुंच गया। पटाखों के कारण दीवाली के अगले दिन प्रदूषण का स्तर 2017 से 2020 तक जहां क्रमशः 403, 390, 368, 435 था, वहीं इस वर्ष यह सारे रिकॉर्ड तोड़ते हुए 462 के पार जा पहुंचा और प्रदूषण के भयानक स्तर के कारण उत्तर भारत के कई शहर धुंध की मोटी चादर में लिपटे रहे। यहीं नहीं, फेफड़ों को नुकसान पहुंचाने वाले जिन महीन कांपों पीएम 2.5 की सुरक्षित दर 60 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर निर्धारित है, उनकी औसत सांद्रता भी इससे करीब सात गुना यानी 430 तक पहुंच गई। दीवाली के अगले दिन पीएम 10 का स्तर भी 558 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर दर्ज

किया गया। स्थिति को विकराल बनाने में खेतों में जलती पराली भी खतरनाक भूमिका निभा रही है। हाल ही में नासा द्वारा जारी आंकड़े देखें तो हरियाणा में पराली जलने की 9-16 सितंबर तक कुल 9 और 1 अक्टूबर को 35 तथा 5 नवम्बर को 500 घटनाएं देखी गईं, वहीं पंजाब में 19-21 सितंबर के बीच 50 और 1 अक्टूबर को 255 घटनाएं देखी गईं लेकिन दीवाली के अगले दिन 5 नवम्बर को



पंजाब में पराली जलने की करीब 6000 घटनाओं ने तो पटाखों के विषैले धुएं के साथ मिलकर प्रदूषण को खतरनाक स्तर पर पहुंचा दिया।

आज बहुत सारे लोग अपनी जिम्मेदारी व नैतिक दायित्वों का सही ढंग से निवन्हन करने के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं हैं, जबकि सभी लोग यह भलीभांति जानते हैं कि स्वच्छ वायु जल व धरती जीवन के लिए बेहद जरूरी है। स्वच्छ वायु शरीर के लिए हर पल बेहद आवश्यक है, फिर भी हम पिछले वर्षों की स्थिति से कोई सबक ना सीखकर उसको अपने ही हाथों से आतिशबाजी जलाकर प्रदूषित करके खतरनाक स्तर तक जहरीली बना देते हैं। जबकि हम सभी यह अच्छी तरह से जानते हैं कि हम स्वच्छ वायु का बंदेबस्त करने में अब दिन-प्रतिदिन नाकाम होते जा रहे हैं, फिर भी हम सारी जिम्मेदारी सरकार व सिस्टम पर डालकर बेफिक्क होकर अपने घरों में बैठें हैं। अधिकांश लोग पर्यावरण संरक्षण के लिए अपने हिस्से

की जिम्मेदारी निभाने के लिए तैयार नहीं हैं, जो आज के माहौल में अपने व दूसरों के जीवन से खिलवाड़ है। जहरीले वायु प्रदूषण के गंभीर प्रकोप से आजकल दिल्ली व एनसीआर के निवासी एक बार फिर से बहुत ज्यादा परेशान हैं। लोगों के खुद के द्वारा बुलाइ गयी आफत को किसानों के द्वारा पराली जलाने का धुआं बताकर जिम्मेदारी से भागने का लगातार प्रयास जारी है, पराली

जलाने व आतिशबाजी चलाने को वायु प्रदूषण के लिए जिम्मेदार ठहरा कर सिस्टम अपने कदम की इतिश्री करने के लिए पूर्ण रूप से सजग है। वैसे अच्छी बात यह है कि अबकी बार इस क्षेत्र में ठंड का फिलहाल कोई प्रकोप नहीं है, हवा भी निरंतर चल रही है, मौसम की हालिया स्थिति देखकर लगता है कि इस क्षेत्र के निवासियों को इस बार वायु प्रदूषण से जल्द राहत मिल जायेगी। लेकिन अब विचारणीय यह है कि क्या सरकार व सिस्टम

चलाने वाले लोग बिना किसी पक्षपात व एक-दूसरे पर जिम्मेदारी डाले बिना निष्पक्ष रूप से इस हालात पर मंथन करके इस गंभीर समस्या के स्थाई समाधान के लिए जल्द से जल्द धरातल पर प्रयास करेंगे, क्योंकि अब वायु प्रदूषण के बेहद गंभीर स्तर पर पहुंचने के कारण एनसीआर के अधिकांश शहरों की हालत दिन-प्रतिदिन तेजी से खराब होती जा रही है। दिल्ली, फरीदाबाद, पलवल, गुरुग्राम, सोनीपत, गजियाबाद, नोएडा, ग्रेटर नोएडा आदि शहरों का वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) आये दिन विभिन्न कारकों से चिंताजनक स्तर पर पहुंच जाता है, जोकि मानव, जीव-जंतु व वृक्षों आदि किसी भी प्रकार के जीवन के लिए बिल्कुल भी उचित नहीं है। जब भी इस क्षेत्र में हवा चलनी बंद हो जाती है, तब प्रदूषण के कारक सभी तत्व इकट्ठा होकर वायु गुणवत्ता के एक्यूआई को गंभीर श्रेणी में पहुंचा देते हैं।

# डेंगू का

## बढ़ता कहर

डेंगू के साथ-साथ मलेरिया और चिकनगुनिया ने भी अगर सिर उठाया है, तो इसका मतलब है, मच्छरों के प्रति हम लापरवाह हुए हैं। अब समय आ गया है, जब भारत के शहरों और रिहाइशी इलाकों को मच्छर-मुक्त बनाने के तमाम उपाय किए जाएं। नए स्वच्छता अभियान को मच्छर-मुक्त शहर-गांव बनाने के लिए इस्तेमाल करना चाहिए।

को

रोना के मामले जहां कम होने लगे हैं, वहीं की बात है। राष्ट्रीय राजधानी समेत देश के अनेक राज्यों में डेंगू के मामलों ने स्वास्थ्य एजेंसियों को परेशान करना शुरू कर दिया है। एक रिपोर्ट के अनुसार, दिल्ली में इस साल डेंगू के 1,000 से ज्यादा मामले दर्ज किए गए हैं, जिसमें पिछले सप्ताह 280 से अधिक मामले दर्ज किए गए थे। दिल्ली सरकार ने अस्पतालों को निर्देश दिया है कि कोरोना के लिए आरक्षित बिस्तरों में से एक तिहाई बिस्तर डेंगू, मलेरिया और चिकनगुनिया के मरीजों के लिए आरक्षित कर दिया जाए। दिल्ली, पंजाब, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, पंजाब और बिहार में भी डेंगू से चिंता बढ़ी है। कुछ जगहों से रिकॉर्ड मामले आ रहे हैं।

यह बात सर्वज्ञात है कि डेंगू मच्छर जनित बीमारी है, जो एडीज मच्छरों के काटने के कारण होती है। डेंगू से संक्रमित ज्यादातर लोगों में हल्के या कोई लक्षण नहीं होते हैं। रोग नियन्त्रण और रोकथाम केंद्र के अनुसार, डेंगू से संक्रमित 75 प्रतिशत लोगों में कोई लक्षण नहीं दिखता है, जबकि 20 प्रतिशत में हल्के लक्षण होते हैं, और पांच प्रतिशत में गंभीर लक्षण विकसित हो सकते हैं, जो जानलेवा भी हो सकते हैं। अतः सावधानी व समय पर इलाज जरूरी है। ध्यान रखना चाहिए कि इधर एक सप्ताह में कुछ डॉक्टरों की भी डेंगू से मौत हुई है। इस वर्ष डेंगू के मामलों का बढ़ना विवश कर रहा है कि इसके कारणों पर फिर से निगाह डाली जाए। मलेरिया के मामलों में हाल के वर्षों में भारी गिरावट हुई है। साल 2000 से 2019 के बीच मलेरिया के मामलों में 71.8 फीसदी, जबकि मौतों में 73.9 फीसदी की गिरावट आई

है। शायद हमारे प्रयासों में कमी है, तभी हम ऐसी बीमारियों को भी पूरी तरह से काबू नहीं कर पा रहे हैं। पंजाब जैसे संपन्न और साफ-सुथरे समझे जाने वाले

### डेंगू का डंक!



के शहरों और रिहाइशी इलाकों को मच्छर-मुक्त बनाने के तमाम उपाय किए जाएं। नए स्वच्छता अभियान को मच्छर-मुक्त शहर-गांव बनाने के लिए इस्तेमाल करना चाहिए। शहरों को

हरा-भरा और साफ-सुथरा करने के लिए सरकारों की ओर से बहुत धन खर्च किया जा रहा है। स्मार्ट सिटी बनाने की कोशिशें चल रही हैं, लेकिन क्या हमारा कोई ऐसा शहर है, जहां कूड़े के पहाड़ न हों या जहां खुली नालियां न बहती हों? राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र को ही अगर देख लिया

### डेंगू कैसे फैलता है?

#### 5 कारण



- घर में पानी जमा होने से।
- घर में नमी होने पर मच्छर अधिक होते हैं।
- डेंगू एडीज इजिप्टी मच्छर के काटने से फैलता है।
- डेंगू का मच्छर दिन में काटता है।
- डेंगू का मच्छर स्वच्छ पानी में पैदा होता है।

राज्य में इस साल डेंगू से करीब 30 लोगों की मौत हो चुकी है। महाराष्ट्र भी विकसित है और दिल्ली भी अपेक्षाकृत विकसित है, लेकिन ऐसे राज्यों में अगर मच्छरों का आतंक कम नहीं हो रहा है, तो अपेक्षाकृत पिछड़े राज्यों की क्या स्थिति होगी, सहज अनुपान लगाया जा सकता है।

डेंगू के साथ-साथ मलेरिया और चिकनगुनिया ने भी अगर सिर उठाया है, तो इसका मतलब है, मच्छरों के प्रति हम लापरवाह हुए हैं। अब समय आ गया है, जब भारत

जाए, तो समझ में आ जाता है कि हम वास्तविक रूप से साफ-सफाई के लिए अपी आधे भी सजग नहीं हुए हैं। व्यक्तिगत स्तर पर जगहां आम लोग जागरूक हैं, वहां तो गंदगी और मच्छरों से थोड़ी मुक्ति की स्थितियां बनी हैं, लेकिन ज्यादातर जगह आम लोग सफाई को अपना नहीं, किसी और का काम समझते हैं। जब हम सफाई रखने को अपना मूलभूत काम समझने लगेंगे, तो डेंगू ही नहीं, दस से ज्यादा बीमारियों को हमेशा के लिए अलविदा कह देंगे।

# नोटबंदी

## कितना कुछ बदला?



# नोटबंदी : जब लाइन में खड़ा हुआ था देश

**आ**

ठ नवंबर का दिन यानी इसी दिन पांच साल पहले 2016 में पांच सौ और एक हजार के नोट चलन से बाहर हो गए थे। सरकार अपने इस फैसले को हमेशा सही ठहराती है वहीं विपक्ष इसको लेकर निशाना भी साधती है। पांच साल पहले का दौर याद है। जब हर कोई एटीएम की लाइन में लगा था। कइयों ने तो नोट में चिप तक डालने की बात कह कर उसका पोस्टमार्ट भी कर दिया था। 8 नवंबर 2016 दिन मंगलवार बहुत बड़ा अमंगल हुआ, नोटबंद हो गए। सात बजे न्यूज चैनल पर फ्लैश हुआ कि आठ बजे मोदी जी फ्लैश होंगे अर्थात् सबोधन होंगे। मोदी जी आए और देश के नाम संदेश देते हुए कहा कि आज रात बारह बजे से पांच सौ और हजार रुपये के नोट बंद कर दिए जाएंगे। बस फिर क्या था लोगों में अफरा-तफरी मच गई बैंकों में पैसे जमा करने कि लाइन लग गई। अमीर से अमीर और गरीब से गरीब आदमी बैंकों की लाइन में लगकर नोट बदलवाने की जुगत करता रहा। नोटबंदी के ऐलान के बाद समूची दुनिया की नजर भारत के इस फैसले को देखने लगी। आठ नवंबर का दिन यानी इसी दिन पांच साल पहले 2016 में पांच सौ और एक हजार के नोट चलन से बाहर हो गए थे। सरकार अपने इस फैसले को हमेशा सही ठहराती है वहीं विपक्ष इसको लेकर निशाना भी साधती है।

काले धन को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कार्यवाही को कोई कालेधन पर सर्जिकल स्ट्राइक तो कोई नोटों का ब्लैक आउट बताता रहा। देश को कला धन की बीमारी से निजात दिलाने के लिए डॉक्टर बने मोदी द्वारा की गयी इस छोटी सर्जरी के दौरान सबसे बड़ा बाद सिस्टम में मौजूद बेहिसाब नगदी पर रोक लगाने का किया गया था और यह पैसा सीधे बैंक में जमा कराने के निर्देश दिए गए थे। पीएम मोदी ने अपने भाषण में पॉलिसी का जिक्र

करते हुए कहा था कि करोड़ों रुपये सरकारी अधिकारियों के बिस्तरों या बैगों में भरे होने की खबरों से कौन-सा ईमानदार नागरिक दुखी नहीं होगा? जिन लोगों के पास बेहिसाब पैसा है, उन्हें मजबूरी में इसे घोषित करना



## नोटबंदी के फैसले पर सटकार फेल या पास ?

पड़ेगा, जिससे गैर-कानूनी लेन-देन से छुटकारा मिल जाएगा। उस दौरान काफी लोगों ने नोटबंदी के इस फैसले को भ्रष्टाचार पर सर्जिकल स्ट्राइक भी कहा था।

**क्या होता है डिमोनेटाइजेशन**

आठ नवंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ऐलान किया कि 500 और 1000 रुपए के नोट अब चलन में नहीं रहेंगे। काले धन के खिलाफ इसे पीएम मोदी की अब तक की सबसे बड़ी लड़ाई माना गया। पांच साल पहले पीएम मोदी ने जो ऐलान किया था उसे डिमोनेटाइजेशन या विमुद्रीकरण या मुद्रा को चलन से बाहर करना कहते हैं। ऐसा नहीं है कि सिर्फ भारत ने ही यह कदम उठाया है इससे पहले भी कुछ देश ऐसा कर चुके हैं।

**क्या होता है विमुद्रीकरण**

विमुद्रीकरण वह मौद्रिक फैसला होता है जिसके तहत मुद्रा की एक इकाई को कानून के तहत अमान्य घोषित कर दिया जाता है। यह साधारणतय उस समय होता है जब राष्ट्रीय मुद्रा में परिवर्तन किया जाता है और पुरानी मुद्रा को नई मुद्रा से बदला जाता है। इस तरह के कदम उस समय उठाए गए थे जब यूरोपियन मौद्रिक संघों वाले देशों ने यूरो को अपनी मुद्रा के तौर पर अपनाया था। उस समय पुरानी मुद्रा को हालांकि एक समय तक यूरो में बदलने की मज़बूरी दी गई थी ताकि लेन-देन में सुविधा बनी रहे।

**भारत ने क्यों अपनाया**

भारत ने ब्लैक मनी और फेक करेंसी को खत्म करने के लिए इस व्यवस्था को अपनाया। यह भी काफी रोचक है कि यह पहली बार नहीं है जब सरकार ने इस तरह का कोई कदम उठाया है। सबसे पहले वर्ष 1946 में रिंज्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने विमुद्रीकरण को अपनाया था। उस समय आरबीआई ने 1,000 और 10,000 के नोट जारी किए थे। वर्ष 1954 यानी आठ वर्ष बाद में भारत सरकार ने 1,000, 5,000 और 10,000 के नए नोट जारी किए। इसके बाद वर्ष 1978 में मोराजी देसाई की सरकार ने इन नोटों को चलन से बाहर कर दिया था।



# जनजातीय परिवारों ने देश को बचाने में निर्भाई अहम भूमिका, तेजी से हो रहा टीकाकरण: मोदी

**प्र**

धानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को भोपाल में जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम में हिस्सा लिया। इस दौरान उन्होंने कहा कि आप सभी को भगवान बिरसा मुंडा के जन्मदिन पर बहुत बहुत शुभकामनाएं। आज का दिन पूरे देश के लिए, पूरे जनजातीय समाज के लिए बहुत बड़ा दिन है। आज भारत अपना पहला जनजातीय गौरव दिवस मना रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आजदी के बाद देश में पहली बार इन बड़े पैमाने पर पूरे देश के जनजातीय समाज की कला, संस्कृति, स्वतंत्रता आंदोलन और राष्ट्रिनार्माण में उनके योगदान को गौरव के साथ याद किया जा रहा है, उनका सम्मान किया जा रहा है।

को इतनी बड़ी मदद मिली। अब जब गांवों में आपके घर के पास सस्ता राशन पहुंचेगा तो आपका समय भी बचेगा और अतिरिक्त खर्च से भी मुक्ति मिलेगी। आयुष्मान भारत योजना से पहले ही अनेक बीमारियों का मुफ्त इलाज आदिवासी समाज को मिल रहा है, देश के गरीबों को मिल रहा है। मुझे खुशी है कि मध्य प्रदेश में जनजातीय परिवारों

है। पढ़े-लिखे शहरों में रहने वालों को मेरे इन आदिवासी भाईयों से बहुत कृच्छ सीखना चाहिए।

पीएम नरेंद्र मोदी ने मंच में गम-गम और सेवा जोहर कर अपनी भाषण की शुरुआत की। प्रधानमंत्री ने कहा कि पूरे देश के लिए आज बहुत बड़ा दिन है। आज भारत अपना पहला जनजातीय दिवस मना रहा है। प्रधानमंत्री मोदी ने



में तेजी से मुफ्त टीकाकरण भी हो रहा है। दुनिया के पढ़े लिखे देशों में टीकाकरण को लेकर सवालियां निशान लगाने की खबरें आती हैं लेकिन मेरी आदिवासी भाई-बहन टीकाकरण को समझती भी हैं। स्वीकारती भी हैं और देश को बचाने में अपनी भूमिका भी निभा रही हैं। उन्होंने कहा कि 100 साल की सबसे बड़ी महामारी से सारी दुनिया लड़ रही है। सबसे बड़ी महामारी से निपटने के लिए जनजातीय समाज के सभी साथियों का टीकाकरण के लिए आगे आना सचमुच में अपने आप में गौरवपूर्ण घटना

कहा कि आजदी के अमृत महोत्सव में इस नए संकल्प के लिए मैं पूरे देश को बहुत-बहुत बधाई देता हूं। मैं आज यहां प्रदेश के जनजातीय समाज का आभार व्यक्त करता हूं। आपका यह प्यार आपकी सेवा के लिए, दिन रात एक करने के लिए उर्जा देता है।

उन्होंने कहा कि आज कार्यक्रम में आदिवासी अपने गीत और धूम के साथ अपनी भावनाएं प्रगट कर रहे हैं। मैंने प्रयास किया उन गीतों को समझने के लिए। मेरा अनुभव रहा है कि जीवन का काल खंड आदिवासियों के बीच



बिताया है पीएम मोदी ने कहा कि आपने जो कहा वो देशभर के लोगों को आपका एक-एक शब्द जीवन जीने का कारण, इरादा बखूबी प्रस्तुत करता है। जीवन एक दिन मिथ्ये में मिल जाएगा। आदिवासी शिक्षित हैं बस हम

100 साल की सबसे बड़ी महामारी से दुनिया लड़ रही है। पीएम मोदी ने कहा कि दसको पहले मैंने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत की थी। दूसरे राजनीतिक दल ने आदिवासियों को सुविधाओं से वर्चित रखा। उन्हें



शिक्षित होना बाकी है। जब अंत समय आया तब मन में पछताना व्यर्थ है। धरती खेत खालिहान किसी के नहीं है। अपने मन में गुणान करना व्यर्थ है। धन दौलत किसी काम के नहीं है। इसे यही छोड़कर जाना है।

उन्होंने शिवराज सिंह की सरकार ने कई योजनाओं का शुभारंभ कियाम 'राशन आपके ग्राम' योजना और सिक्कल सेल (हीमोगलोबिनोपैथी) मिशन का शुभारंभ किया गया। पीएम योजना के तहत मुफ्त राशन मिलने से गरीब परिवारों को मदद मिलती। आपके घर के पास सस्ता राशन पहुंचेगा। आयुष्मान भारत योजना से पहले ही अनेक बीमारियों का मुफ्त इलाज आदिवासियों को मिल रहा है। मुझे खुशी है कि आदिवासियों में तेजी से टीकाकरण हो रहा है। वो टीका के महत्व को समझते हैं।

सुविधाएं का आशासन देकर बोट मारे। गरीबों को असहाय छोड़ दिया। जब मुझे 2014 में देश का पीएम चुना गया, तब से आदिवासियों और गरीबों को सुविधाएं दी जा रही है। सभी आदिवासी क्षेत्रों में विकास हो रहा है। सभी को खाते में योजनाओं के तहत राशि मिल रही है। सभी को घर-घर नल जल योजना के तहत पानी मिल रहा है। मोदी ने महान इतिहासकार और शिवाजी के जीवनी लेखक बाबा साहेब पुरांदरे को श्रद्धांजलि अर्पित की। जिनका 100 वर्ष की आयु में कल शाम पुणे में निधन हो गया। मराठी में पुरांदरे की 'शिव-चरित्र' एक प्रतिष्ठित पुस्तक है। पहले की सरकारें 8-10 वर्षों पर एमएसपी देती थीं। हमारी सरकार 90 वर्षों पर एमएसपी दे रही है।

## रानी कमलापति रेलवे स्टेशन का लोकार्पण

राजधानी भोपाल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पुनर्विकसित रानी कमलापति रेलवे स्टेशन का लोकार्पण किया। इसके साथ साथ दो ट्रेनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उनके साथ रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव भी मौजूद थे। उन्होंने कमलापति रेलवे स्टेशन का अवलोकन किया।



उसके बाद स्टेशन का लोकार्पण किया। वहाँ मुख्यमंत्री शिवराज ने कहा कि रानी कमलापति रेलवे स्टेशन अपने तरह का अनोखा स्टेशन है। दूसरा उसका नाम भोपाल की रानी कमलापति के नाम पर रखा है। उन्होंने कहा कि पहले स्टेशन में गंदगी और बदबू होती है। अब मोदी विजन की वजह से देश बदल रहा है। और साथ ही साथ रेलवे बदल रहा है। सीएम शिवराज रेलवे स्टेशन के सौगात के लिए मोदी का धन्यवाद किया। आपको बता दें कि स्टेशन का सुधार जुलाई 2016 में शुरू किया गया था और 2017 में तीन साल की समय सीमा के साथ काम शुरू हुआ। आधुनिक स्टेशन में कई विशेषताएं हैं। जैसे आगमन और प्रस्थान के आधार पर यात्रियों का अलगाव। इससे एयरपोर्ट की झलक मिलती है खासकर वेटिंग एरिया जहां एक बार में हजारों लोग ठहर सकते हैं।

# 100 करोड़ टीकाकरण कोरोना वॉयिरस को सलाम



## टीकाकरण में भारत को बड़ी कामयाबी

**E**

के अवधि से ज्यादा भारतीयों को टीका लगाना न केवल बड़ी उपलब्धि है, बल्कि एक ऐसा पड़ाव है, जिस पर पूरी दुनिया की निगाह जाएगी। कोरोना के मामले जिस तरह से भारत में घटे हैं और जिस तरह भारत इस महत्वपूर्ण पड़ाव पर पहुंचा है, उससे दुनिया में टीकाकरण को बहुत बल मिलेगा।

देश में टीकाकरण कार्यक्रम शुरू होने के ठीक नौ महीने और पांच दिन बाद यह कामयाबी हासिल हुई है। 16 जनवरी को जब टीकाकरण की शुरुआत हुई थी, तब बहुतों को शक था कि क्या भारतीय लोग टीका के लिए इतनी बड़ी संख्या में तैयार होंगे? टीका को लेकर हिचक अभी भी जारी है, लेकिन तब भी सौ करोड़ खुराक अपने आप में एक इतिहास है। हालांकि, हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि टीकाकरण की दिशा में हमारा सफर अभी आधा भी पूरा नहीं हुआ है। अभी भी हमारी आबादी का एक बड़ा हिस्सा है, जिसने अभी टीके का कवच हासिल नहीं किया है।

18 साल से कम उम्र की आबादी का तो अभी टीकाकरण शुरू भी नहीं हुआ है। देश में 41 प्रतिशत से ज्यादा लोग इसी उम्र वर्ग के हैं। अभी 100 करोड़ टीके लगे हैं और देश में 70 करोड़ से ज्यादा लोगों को एक या दो टीके लग चुके हैं। भारत में ज्यादातर लोगों को कोविशील्ड टीका नसीब हुआ है। 88 करोड़ खुराक कोविशील्ड और 11.40 करोड़ खुराक कोवैक्सीन की लगी है। भारत में अब तक सात वैक्सीन को मंजूरी मिल चुकी है और कोविशील्ड हर लिहाज से ज्यादा सुलभ है। कोवैक्सीन को जिस तरह की लोकप्रियता या कामयाबी हासिल होनी चाहिए थी, अभी तक नहीं हो सकी है। अतः देश की इस महत्वपूर्ण कामयाबी के लिए हमें कोविशील्ड की निर्माता कंपनी का भी आभार जताना चाहिए। इस कंपनी ने रातोंरात टीका निर्माण का मजबूत

ढांचा विकसित किया और भारत सरकार से पूरा सहयोग लेकर मांग के अनुरूप आपूर्ति करने की कोशिश की। एक समय था, जब लोग टीका लेने जाते थे, लेकिन उन्हें लौटना पड़ता था, क्योंकि टीके कम मात्रा में उपलब्ध थे। अब एक नया खतरा यह है कि जब कोरोना के मामले

एक चिंता यह भी है कि जब 18 साल से कम उम्र की आबादी को टीका लगाने लगेगा, तब बाकी लोग कहीं उपेक्षित न हो जाएं। इसके अलावा टीकों का निर्यात भी शुरू होना है, अतः ध्यान रखना होगा कि अपने यहां टीकों में कमी न आए। सरकार की तारीफ करनी चाहिए



घट गए हैं, तब लोग टीका लेने से मुंह मोड़ सकते हैं। सरकार को सुनिश्चित करना चाहिए कि टीके के प्रति उदासीनता न रहे। सरकार की ओर से भी शिथिलता नहीं आनी चाहिए। प्रतिदिन कम से कम एक करोड़ लोगों को टीका लगाने से कम की गति मंजूर नहीं होनी चाहिए। यदि हम प्रतिदिन 1.20 करोड़ से अधिक लोगों का टीकाकरण करें, तभी इस साल पूरी वयस्क आबादी का टीकाकरण कर पाएंगे।

कि निर्यात रोककर पहले देश को सुरक्षित किया गया है। अगर हम निर्यात न रोकते और निजी कंपनी को कोविशील्ड का निर्यात करने देते, तो टीकाकरण का लक्ष्य हमारे लिए पूरा करना कठिन हो जाता। कुल मिलाकर, अपने देश में ये टीके न केवल सहजता से उपलब्ध हुए हैं, मुफ्त टीकों का भी विस्तार देश के कोने-कोने तक है। हमारी सफलता इसी में है कि कोरोना के खिलाफ प्रचार व सजगता भी निरंतर बनी रहे।



# उपचुनाव के नतीजों से सबक और संदेश

मोदी फैक्टर से मुश्किल है राज्यों में जीत

हि

माचल प्रदेश, हरियाणा समेत देश के कई अन्य राज्यों में उपचुनावों के परिणामों ने भाजपा की चिंता बढ़ा दी है। हालांकि, पूर्वोत्तर व मध्य प्रदेश में भाजपा संगठन की रणनीति कामयाब रही है, लेकिन हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, कर्नाटक और पश्चिम बंगाल के चुनाव परिणामों ने उसे अपनी रीतियों-नीतियों पर पुनर्विचार का मौका दिया है। हिमाचल विधानसभा चुनाव से एक साल पहले गत तीस अक्टूबर को हुए उपचुनाव ने भाजपा को झकझार कर रख दिया है। कांग्रेस ने मंडी संसदीय सीट पर कब्जा कर लिया और अर्का, फतेहपुर और जुब्ल-कोटखाई विधानसभा सीटों पर जीत हासिल की। दरअसल, हिमाचल प्रदेश के बड़े कांग्रेस नेता वीरभद्र सिंह के जुलाई में निधन के बाद राज्य में यह पहला चुनाव था। चुनाव परिणाम बताते हैं कि हिमाचल में वीरभद्र की समृद्ध विधासत कायम है। निस्संदेह सहानुभूति वोट के बूते कांग्रेस को भाजपा से मुकाबले की नयी ताकत मिली है। वीरभद्र की पत्नी प्रतिभा सिंह ने मंडी सीट पर कारगिल युद्ध नायक व भाजपा उम्मीदवार सेवानिवृत्त ब्रिगेडियर खुशाल ठाकुर को हार्दिक। यही नहीं, अर्का सीट, जहां से वीरभद्र ने 2017 में जीत हासिल की थी, वह भी कांग्रेस की झोली में चली गई। निस्संदेह, वीरभद्र के निधन के बाद नेतृत्व के शून्य को भरने के लिये संघर्ष कर रही हिमाचल कांग्रेस को इन चुनाव परिणामों से नया उत्साह मिला है। दूसरी ओर ये चुनाव परिणाम मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर के लिये नयी चुनौती पैदा करेंगे। वहीं हिमाचल से आने वाले भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के लिये भी ये परिणाम परेशान करने वाले हैं, जो राज्य से राज्यसभा सांसद हैं। ऐसे वक्त



में जयराम ठाकुर और नड्डा के लिये यह मंथन करने के जरूरत है कि सत्ता विरोधी लहर ने इन चुनाव परिणामों में कितनी भूमिका निभाई। साथ ही वर्ष 2022 के चुनावों से पहले स्थिति को अनुकूल बनाने के लिये वे क्या कर सकते हैं। मुख्यमंत्री का यह बयान कि महंगाई के कारण लोग सरकार के खिलाफ हुए, केंद्र सरकार के लिये भी विचारणीय मुद्दा है। वहीं दूसरी ओर हरियाणा में एलनाबाद विधानसभा सीट का उपचुनाव भी सत्तारूढ़ भाजपा सरकार की चिंता बढ़ाने वाला है। इस सीट पर ईडियन नेशनल लोकदल के उम्मीदवार अभय सिंह चौटाला ने जीत हासिल करके अपनी सीट बरकरार रखी। निस्संदेह, राज्य में सिमटते जनाधार के बीच यह जीत इनेलो के लिये उम्मीद की किरण बनकर उभरी है। कहा जा रहा है कि राज्य सरकार के प्रति नाराजगी और केंद्र के तीन कृषि कानूनों को लेकर लंबे समय से जारी टकराव ने चुनाव

परिणामों की दशा-दिशा को प्रभावित किया है। लोग अप्रत्याशित महंगाई को भी जनता के आक्रोश की वजह बता रहे हैं। वहीं कई राज्यों में सत्तारूढ़ दलों व गठबंधनों ने अच्छा प्रदर्शन किया है। भाजपा व उसके सहयोगियों ने असम और अन्य पूर्वोत्तर राज्यों में मजबूती से अपनी जमीन हासिल की, वहीं तृणमूल कांग्रेस ने पश्चिम बंगाल में अपने वर्चस्व को बरकरार रखा। राजस्थान में जहां कांग्रेस ने जीत हासिल की तो मध्य प्रदेश में भाजपा ने अपना दबदबा बरकरार रखा। कुल मिलाकर भाजपा के लिये परिणाम मिलेजुले रहे हैं, लेकिन अगले साल पंजाब, हिमाचल, उत्तराखण्ड तथा उत्तर प्रदेश आदि राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनावों को लेकर भाजपा को लोकसभा व विधानसभा उपचुनाव परिणामों के आलोक में आत्मसंथन कक्षे रीतियों-नीतियों का नये सिरे से निर्धारण करना होगा। हिमाचल के उपचुनावों को तो राजनीतिक पंडित अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव के संदर्भ में सेमीफाइनल मुकाबला बता रहे थे। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर ने इस करारी शिक्षस्त के लिये यदि महंगाई को जिम्मेदार ठहराया है तो इसका मतलब यह भी है कि महंगाई आम आदमी को गहरे तक प्रभावित कर रही है। पेट्रोल-डीजल ही नहीं, खाद्य, फल-सब्जी की महंगाई से लोग बुरी तरह त्रस्त हैं। जिसके बाबत केंद्रीय नेतृत्व को गंभीरता से विचार करने की जरूरत है। यह बात साफ है कि केंद्रीय नेतृत्व इन उपचुनाव परिणामों की अनदेखी नहीं कर सकता क्योंकि जनादेश में आम आदमी की अभिव्यक्ति भी नजर आती है। साथ ही सवाल यह भी कि किसान आंदोलन का चुनाव परिणामों पर किस हद तक असर पड़ा।





# यूपी में कांग्रेस का मास्टर स्ट्रोक

**3**

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की ओर से चालीस फीसदी सीटों पर महिलाओं को टिकट देने की प्रियंका गांधी की घोषणा ने न सिर्फ विधानसभा चुनावों बल्कि 2024 तक होने वाले सभी विधानसभा चुनावों और लोकसभा चुनाव के लिए भी कांग्रेस का सियासी एजेंडा तय कर दिया है। प्रियंका की इस घोषणा से तीन बारें साफ हैं। पहली ये कि जब विधानसभा चुनाव में महिला सशक्तिकरण कांग्रेस का मुख्य मुद्दा होगा तो पार्टी की ओर से मुख्यमंत्री का चेहरा भी कोई महिला ही हो सकती है, क्योंकि बसपा प्रमुख मायावती खुद को महिला मुख्यमंत्री के उम्मीदवार के रूप में पेश करेंगी और ऐसा होने पर कांग्रेस के सामने किसी महिला को आगे करने की सियासी मजबूरी होगी। क्योंकि प्रियंका गांधी से बड़ा कोई दूसरा नाम कांग्रेस में नहीं है, इसलिए इसकी संभावना भी है कि अगर यह मुद्दा महिलाओं में आकर्षण पैदा करने में कामयाब हुआ तो देर-सवेर प्रियंका गांधी को मुख्यमंत्री का चेहरा बनाने की घोषणा पार्टी कर सकती है या फिर उन्हें विधानसभा का चुनाव लड़ाकर यह संदेश दे सकती है।

प्रियंका की आज की घोषणा से दूसरा संकेत यह है कि उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में जहां भाजपा सपा और बसपा का फोकस सामाजिक समीकरण साथने पर है, वहाँ प्रियंका की अगुआई में कांग्रेस ने महिला कार्ड चलकर चुनाव का फोकस बदल दिया है और कांग्रेस का सारा जोर प्रदेश की आधी आबादी को अपने साथ जोड़कर देश के सबसे बड़े सूबे में अपनी लिए नई संभावनाएं लालाशने पर होगा। इस तरह कांग्रेस भाजपा के हिंदू धर्मवीकरण और सपा बसपा के जातीय धर्मवीकरण के कार्ड को महिला सशक्तिकरण के दांव से तोड़ेगी। तीसरी बात ये कि अगर उत्तर प्रदेश में कांग्रेस को इस मुद्दे का फायदा मिला तो न सिर्फ 2022 और 2023 में होने वाले विधानसभा चुनावों में बल्कि 2024 के लोकसभा चुनावों में भी कांग्रेस महिला सशक्तिकरण और महिला सुरक्षा के मुद्दे को प्रमुख चुनावी मुद्दा बना सकती है। मुस्किन है इसके लिए कांग्रेस



यूपीए सरकार द्वारा राज्यसभा में पारित किए गए महिला आरक्षण विधेयक को लोकसभा में लाकर पारित कराने के लिए भी दबाव बनाकर उसे मुद्दा बनाए। किसी भी चुनाव में किसी भी दल की जीत में सबसे ज्यादा योगदान महिलाओं के समर्थन का होता है। इंदिरा गांधी के जमाने में कांग्रेस को देश में महिलाओं का एकमुश्त समर्थन हासिल था, जो बाद में धीरे-धीरे घटता चला गया। 2004 में सेनिया गांधी के नेतृत्व में भी कांग्रेस को महिलाओं का

खासा समर्थन मिला था, जो 2009 तक जारी रहा। गुजरात में नरेंद्र मोदी और बिहार में नीतीश कुमार की जीत के पीछे महिलाओं का समर्थन बड़ी वजह माना गया। उड़ीसा में नवीन पटनायक, तेलंगाना में टीआरएस की जीत का भी बड़ा आधार उन्हें महिलाओं का समर्थन मिलना रहा। कभी आंध्र प्रदेश में एनटीआर और बाद में चंद्रबाबू नायडू को भी महिलाओं का भरपूर समर्थन मिला। प. बंगल में जब तक महिलाओं का समर्थन वापसीचे के साथ रहा उसकी जीत सुनिश्चित रही। लेकिन बाद में ममता बनर्जी ने महिलाओं के बीच अपनी अलग जगह बनाई और महिलाओं की ताकत की बदौलत ममता और तृणमूल इसी साल हुए विधानसभा चुनावों तक अजेय बनी हुई हैं। भारतीय राजनीति के इस यथार्थ को प्रियंका गांधी ने समझ लिया है। इसीलिए उन्होंने उत्तर प्रदेश में

लगातार महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण का सबाल उठाया और उत्ताव, हाथरस, लखीमपुर जहां भी महिला उत्पीड़न का कोई मामला सामने आया प्रियंका ने उसे हर तरह से उठाया। अब कांग्रेस की तरफ से चालीस फीसदी विधानसभा सीटों पर महिला प्रत्याशी उतारने की घोषणा से प्रियंका गांधी ने महिला सशक्तिकरण के मुद्दे को नई धारा दी है। कांग्रेस के इस दांव के दबाव में भाजपा, सपा और बसपा को भी कुछ इसी तरह के कदम उठाने होंगे।



October 27, 2021 New Delhi



# कृषि उड़ान 2.0 योजना से जुड़ेंगे 53 एयरपोर्ट : सिंधिया

पहाड़ी राज्यों और आदिवासी बहुल क्षेत्रों के किसानों के हित में केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार ने 'कृषि उड़ान 2.0 स्कीम' की शुरुआत की है। केन्द्रीय नागरिक विमानन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने इस योजना की शुरुआत की। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी की सरकार का लक्ष्य किसानों की आय को दोगुना करना है। किसान की आय दोगुना करने का यह मतलब नहीं है कि बाजार में उत्पाद की कीमतें बढ़ जायें। श्री सिंधिया ने कहा कि किसानों के उत्पाद को एक जगह से दूसरी जगह जल्द से जल्द पहुंचाने की भी व्यवस्था कर रही है, ताकि कृषि उत्पाद नष्ट न हों। सरकार ने कृषि उड़ान 2.0 की

शुरुआत की है, ताकि जल्द नष्ट होने वाले सामानों को कम समय में एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाया जा सके। इससे सामान की बर्बादी भी कम होगी और ताजा सामान बेचकर किसान ज्यादा मुनाफा भी कमा सकेगा। उन्होंने कहा कि जो सामान पहले एक दिन या दो दिन में एक राज्य से दूसरे राज्य में पहुंचता है, अब कुछ घंटों में पहुंच जायेगा। इससे उष्णभोक्ता और किसान दोनों लाभान्वित होंगे। सिविल एविएशन मिनिस्टर ने यह भी कहा कि कृषि उड़ान 2.0 योजना की शुरुआत के बाद सुदूर क्षेत्रों में सामानों को जल्द से जल्द पहुंचाने में भी मदद मिलेगी। श्री सिंधिया ने कहा है कि 53 एयरपोर्ट से किसानों के सामान की आवाजाही शुरू हो जायेगी।

## उड़ान सेवाओं में मप्र को मिलीं बड़ी सौगातें

सिविल एविएशन मिनिस्टर ज्योतिरादित्य सिंधिया ने देश में हवाई यात्रा को आम आदमी के लिए किफायती बनाने के सरकार के लक्ष्य पर जोर देते हुए रविवार को कहा कि डोमेस्टिक रूट्स पर विमानन

कहा, (डोमेस्टिक रूट्स पर) हवाई टिकटों के दाम नीचे आ रहे हैं। देश के कुछ शहरों के बीच हवाई यात्रा के टिकट तो रेलवे की एसी द्वितीय श्रेणी के टिकट से भी कम दाम पर जनता के लिए उपलब्ध हैं अपने गृह

राज्य मध्य प्रदेश में गुजरे चार महीनों के दौरान नागरिक उड़ान सेवाओं के विस्तार का ब्योरा देते हुए सिंधिया ने बताया, जुलाई में मेरे नागरिक उड़ान मंत्री बनने से पहले मध्य प्रदेश में हर हफ्ते विमानों की 554 आवाजाही होती थी जो अब 50 फीसदी बढ़कर 833 प्रति सप्ताह पर पहुंच गई है उन्होंने बताया कि उनके नागरिक उड़ान मंत्री बनने से पहले मध्य प्रदेश हवाई मार्ग के जरिये 27 शहरों से जुड़ा था और अब भारत का यह केंद्रीय सूबा दुबई समेत 49 शहरों से जुड़ गया है। सिंधिया ने बताया कि मार्च 2022 तक इंदौर के देवी अहिल्याबाई होलकर इंटरनेशनल

एयरपोर्ट पर एयरोब्रिज की तादाद तीन से बढ़ाकर पांच कर दी जाएगी। उन्होंने बताया कि इस एयरपोर्ट पर यात्रियों के सामान का नया तंत्र स्थापित किया जाएगा और और नये पार्किंग-बे के निर्माण के साथ टैक्सी पार्किंग क्षमता बढ़ाई जाएगी। सिंधिया ने सूबे के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान से एक बार फिर अनुरोध किया कि इंदौर एयरपोर्ट के विस्तार के लिए 2,000 एकड़ जमीन जल्द से जल्द आवंटित की जाए ताकि नये रन-वे के साथ नया डोमेस्टिक और इंटरनेशनल टर्मिनल बनाए जा सके। सिंधिया ने यह भी बताया कि फल, फूल और सब्जियों सरीखे जल्द खराब होने वाले माल के परिवहन के लिए इंदौर एयरपोर्ट पर घरेलू माल परिवहन परिसर जल्द से जल्द बनाया जाएगा।



सेवाओं के विस्तार से मुसाफिरों की आवाजाही बढ़ने के साथ ही फ्लाइट्स के टिकटों के दाम घट रहे हैं। सिंधिया, इंदौर से सूरत, जोधपुर और प्रयागराज के लिए इंडिगो एयरलाइंस की नई फ्लाइट्स को हरी झंडी दिखाने के कार्यक्रम को वीडियो कॉन्फ्रेंस से संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी चाहते हैं कि देश में हवाई चाल्पल पहनने वाला व्यक्ति भी हवाई सफर कर सके। इसलिए सरकार केवल बड़े शहरों में ही नहीं, बल्कि छोटे शहरों में भी हवाई अड्डे स्थापित करने की योजना पर काम कर रही है। सिंधिया ने बताया कि बिहार, झारखण्ड, असम और अन्य राज्यों के छोटे शहरों में विमानन सेवाओं के विस्तार के बाद इन क्षेत्रों के हवाई यात्रायात में दो लाख यात्री प्रति माह की वृद्धि दर्ज की गई है। सिविल एविएशन मिनिस्टर ने

# आरथा का महापर्व छठ



**दु**

निया में भारत की एक निराली पहचान है विदेशी लोग भारत को उत्सवों का देश कहते हैं, क्योंकि यहां पर सेलिब्रेशन करने के पल-पल में बहाने ढूँढ़ें जाते हैं। वैसे भी हमारा प्यारा देश भारत दुनिया के सबसे प्राचीन धर्म सनातन धर्म के विभिन्न त्योहारों का देश है, हम लोग विकट से विकट परिस्थितियों में भी पूर्ण हर्षोल्लास के साथ अपने पूजापाठ व उत्सवों का आनंद लेते हैं। पिछले पूरे हफ्ते दीपावली के पंच दिवसीय पावन पर्व को इस वर्ष कोरोना से राहत मिलने के चलते सभी देशासियों ने धूमधाम पूर्ण माहौल में हर्षोल्लास के साथ मनाया था। अब सूर्योपासना व प्रकृति पूजा के महापर्व छठ की बड़ी धूमधाम से मनाने की तैयारी हो गयी हैं, हालांकि पहले छठ पूजा बिहार, झारखण्ड, पर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल के तराई क्षेत्रों में मनायी जाती थी, लेकिन अब इसका दायरा बढ़कर पूरे देश के साथ-साथ विदेशों में भी हो गया है, आज इस त्योहार से देश-विदेश के करोड़ों लोगों की आस्थाएं जुड़ी हुई हैं। इस पर्व में स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा जाता है, इस वर्ष छठ पूजा का चार दिवसीय महापर्व कार्तिक शुक्ल चतुर्थी यानी 8 नवंबर 2021 सोमवार के दिन नहाय खाय से शुरू हो रहा है और यह कार्तिक शुक्ल सप्तमी यानी 11 नवंबर गुरुवार के दिन उत्ते सूर्य को अर्ध्य देने के बाद पूर्ण होगा।

सूर्योपासना का यह छठ पूजा का महापर्व भगवान् सूर्य, उनकी पत्नी उषा और प्रत्यूषा, प्रकृति, जल, वायु और भगवान् सूर्य की बहन छठी मैया को विशेष रूप से समर्पित है। प्राचीन धार्मिक मान्यताओं के अनुसार छठी माता को भगवान् सूर्य की बहन माना जाता है। हमारी पौराणिक मान्यताओं के अनुसार छठी मैया संतानों की रक्षा करती हैं और उनको दीर्घायु प्रदान करती हैं, इसलिए ही छठ मैया को प्रसन्न करने के लिए छठ पूजा का उपवास पूर्ण विधि-विधान, सात्विकता व स्वच्छता के साथ रखा जाता है। छठ पूजा के इस चार दिवसीय पावन उत्सव की शुरुआत कार्तिक शुक्ल पक्ष की चतुर्थी के दिन नहाय खाय से होती है, इस दिन उपवास

रखने वालें लोग केवल लौकी और चावल का आहार ग्रहण करते हैं। दूसरे दिन यानि कार्तिक शुक्ल पक्ष की पंचमी के दिन खरना होता है, इस दिन लोग उपवास रखकर शाम को गत्रे के रस की खीर का सेवन करते हैं, इसके पश्चात उपवास की बेहद कठिन परीक्षा शुरू होती है सप्तमी को उपवास खोलने तक कुछ भी खाना

इस दिन छठ पूजा घाटों पर या जहां जल में खड़े होकर पूजा करने की स्थिति हो वहां पर की जाती है, इन सभी जगहों पर भीड़भाड़ के चलते मेला लगा रहता है। चौथे दिन यानि कार्तिक शुक्ल पक्ष की सप्तमी के अंतिम दिन उपवास करने वाले लोग सूर्योदय से पहले स्नान करके अरुणोदय तक जल में खड़े होकर सूर्योपासना करते हैं



व पीना वर्जित होता है। वहीं तीसरे दिन कार्तिक शुक्ल पक्ष की षष्ठी होने के चलते छठ पूजा की विशेष विधान के साथ पूजा अर्चना की जाती है, इस दिन छठ पर्व के विशेष प्रसाद में ठेकुवा पकवान को तैयार किया जाता है और उपवास रखने वाले लोग स्नान करके जल में खड़े होकर संध्याकाल में अस्त होते भगवान् सूर्य की आराधना करके उनको अर्ध्य देते हैं, साथ में विशेष प्रकार का पकवान ठेकुवा और मौसमी फल चढ़ाते हैं,

और उत्ते हुए भगवान् सूर्य को अर्ध्य देकर उनकी पूजा-आराधना करते हैं, इसके बाद उपवास करने वाले लोग कच्चे दूध और छठी माता के प्रसाद को खाकर अपने व्रत का समाप्त करते हैं। इसके साथ ही कार्तिक शुक्ल पक्ष की सप्तमी के दिन छठ पूजा के महापर्व का पूर्ण उत्सव हर्षोल्लास के माहौल में समाप्त हो जाता है, आजकल कुछ जगह तो इस अवसर पर जमकर आतिशबाजी तक की जाने लगी है।

# हर दिन 50 हजार कोविड टीकाकरण के लक्ष्य को प्राप्त करना होगा: कलेक्टर

Golden Jubilee Celebration  
FIRST ALUMNI MEET  
Saturday, 13th November, 2021  
Welcome Guests and Participants



● (गूंज न्यूज नेटवर्क)

कोविड-19 का टीकाकरण अभियान वर्तमान समय का सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। 18 वर्ष से अधिक आयु के हर व्यक्ति को कोविड के दोनों टीके लगाया जाना जरूरी है। ग्वालियर जिले में भी टीकाकरण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है। अभियान के तहत अब हर घर दस्तक, घर-घर दस्तक की तर्ज पर कार्य प्रारंभ किया गया है। संभागीय आयुक्त श्री आशीष सक्सेना ने रविवार को जीवाजी विश्वविद्यालय के अटल बिहारी वाजपेयी सभागार में आयोजित बैठक में यह बात कही।

रविवार को कोविड टीकाकरण, डेंगू की रोकथाम और समग्र स्वच्छता अभियान के संबंध में एक वृद्ध बैठक का आयोजन किया गया। इस मौके पर कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह, नगर निगम आयुक्त श्री किशोर कान्याल, एडीएम श्री इच्छित गढ़पाले सहित सभी एसडीएम, सभी जिला अधिकारी, निगम के नोडल अधिकारी सहित स्वास्थ्य विभाग और टीकाकरण कार्य में लगे टीकाकरण दल के सदस्य उपस्थित थे।

संभाग आयुक्त श्री आशीष सक्सेना ने कहा है कि टीकाकरण के साथ-साथ डेंगू की रोकथाम और शहर को स्वच्छ और सुंदर बनाने के अभियान को भी हमें संयुक्त रूप से चलाना होगा। एसडीएम के नेतृत्व में हर अनुभाग क्षेत्र में अभियान के रूप में पूरी ताकत के साथ कार्य करने की आवश्यकता है। वार्ड स्तर पर वार्ड मॉनीटर अभियान का नेतृत्व करते हुए अपनी टीम के माध्यम से कार्य करें।

उक्त कार्य में किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं बरती जाना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि अभियान के दौरान की जा रही गतिविधियों की नियमित समीक्षा के लिये प्रतिदिन शाम 6 बजे वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से चर्चा भी की जाएगी। टीम के किसी भी सदस्य को अगर कोई दिक्कत है तो वह चर्चा करे, उसकी समस्या का निदान भी किया जायेगा।

कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ने बैठक में स्पष्ट रूप से कहा कि सभी का टीकाकरण हमारी जिम्मेदारी है। इस जिम्मेदारी से कोई भी अधिकारी-कर्मचारी मुकर नहीं सकता है। टीम का हर सदस्य अपना नैतिक दायित्व मानते हुए सौंपे गए दायित्वों का निर्वहन करे। कलेक्टर ने इस महत्वपूर्ण बैठक में अनुपस्थित रहने वाले वार्ड मॉनीटरों और ऐसे जिला अधिकारी जिन्हें तैनात किया गया है और बैठक में उपस्थित नहीं हुए हैं उनकी वेतन वृद्धि रोकने के निर्देश भी दिए। उन्होंने कहा कि हमें प्रतिदिन 50 हजार टीकाकरण के लक्ष्य को प्राप्त करना है और इस कार्य में एसडीएम नेतृत्व करते हुए कार्य करें। हर घर दस्तक, घर-घर दस्तक के माध्यम से जो लोग भी टीकाकरण से विचित हैं, उनका टीकाकरण किया जाए। नगर निगम आयुक्त श्री किशोर कान्याल ने भी बैठक में कहा कि टीकाकरण के साथ-साथ हमें शहर की स्वच्छता पर भी संयुक्त प्रयास करने की आवश्यकता है। शहर में ऐसा माहौल बनाया जाना जरूरी है जिससे शहर का हर नागरिक स्वच्छता के कार्य में भागीदार बने। उन्होंने कहा कि अब हम घर-घर से कचरा कलेक्शन के कार्य में भी घरों से गोला व सूखा कचरा पृथक-पृथक से एकत्र करें। इसके लिये नागरिकों को भी सहयोगी बनाना जरूरी है। जन जागरूकता के लिये भी निगम विशेष प्रयास कर रहा है। सामाजिक कार्यकर्ताओं, संगठनों के साथ-साथ समाज के सभी वर्गों को भी इसमें जोड़कर कार्य किया जाएगा।

## प्रचार वाहनों को दिखाई हरी झण्डी



संभाग आयुक्त श्री आशीष सक्सेना ने कहा है कि टीकाकरण के साथ-साथ डेंगू की रोकथाम और शहर को स्वच्छ और सुंदर बनाने के अभियान को भी हमें संयुक्त रूप से चलाना होगा। एसडीएम के नेतृत्व में हर अनुभाग क्षेत्र में अभियान के रूप में पूरी ताकत के साथ कार्य करने की आवश्यकता है। वार्ड स्तर पर वार्ड मॉनीटर अभियान का नेतृत्व करते हुए अपनी टीम के माध्यम से कार्य करें।

# पुलिस अधीक्षक ग्वालियर अमित सांघी की एक और नवीन पहल



## बाल दिवसः ग्वालियर पुलिस के बाल आरक्षकों का एसपी ने किया सम्मान

● (गूंज न्यूज नेटवर्क)

बाल दिवस के अवसर पर पुलिस अधीक्षक ग्वालियर अमित सांघी, भाषुसेंद्रारा एक और नवीन पहल करते हुए पुलिस विभाग से इश्यूटी के दौरान दिवंगत हुए पुलिस कर्मियों के बच्चों का सम्मान किया गया। पुलिस कन्वेल रूम ग्वालियर सभागार में आयोजित कार्यक्रम में दिवंगत पुलिस कर्मियों के अनुकंपानियुक्त प्राप्त बालआरक्षक तथा उनके परिजन उपस्थित रहे। इस अवसर पर रक्षित निरीक्षक पुलिस लाईन ग्वालियर श्री रंजीत सिंह, सूबेदार श्री राधाबलभ्र, श्री अजय राजावतभी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में रक्षित निरीक्षक ग्वालियर द्वारा उपस्थित अनुकंपानियुक्त प्राप्त



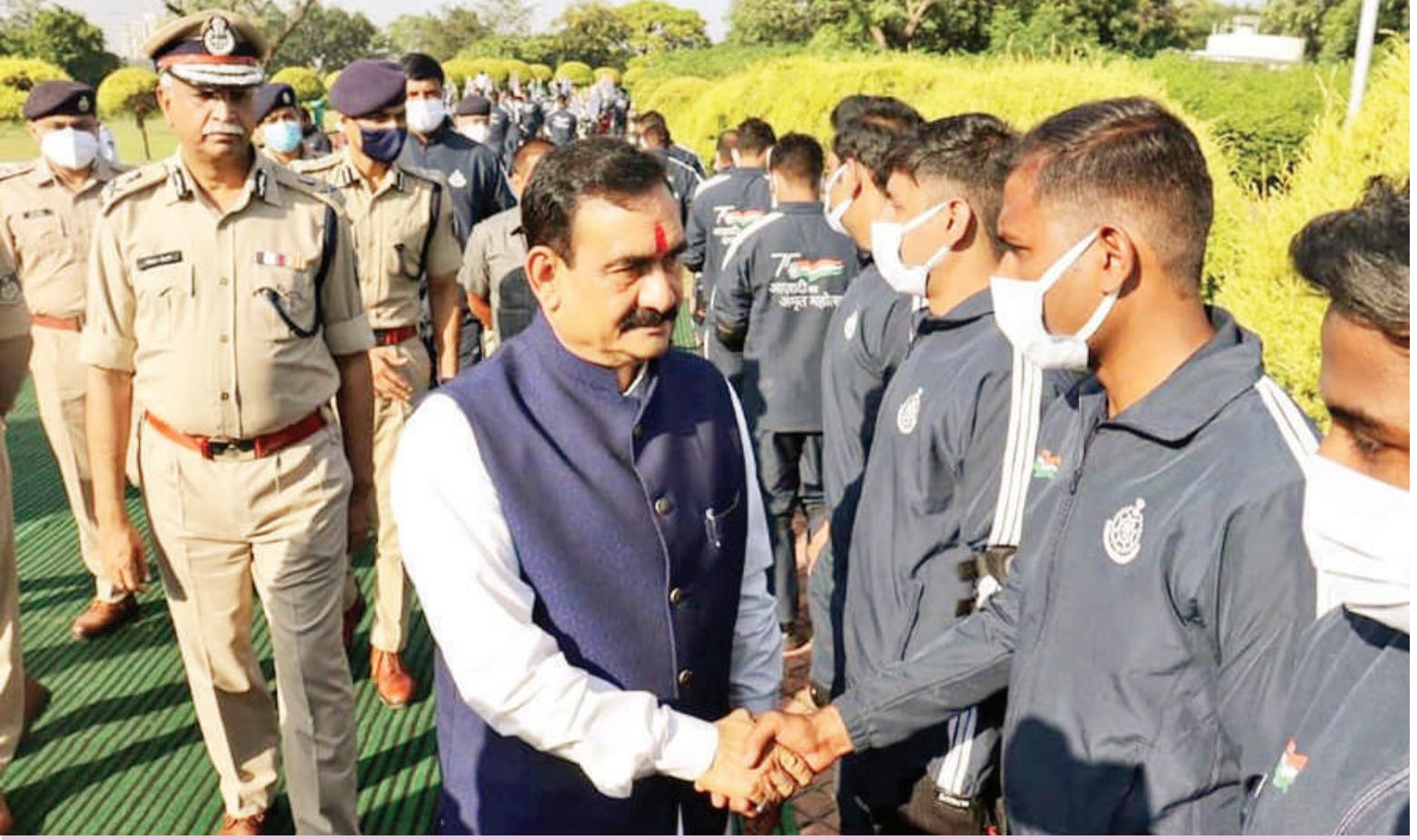
बाल आरक्षकों के संबंध में पुलिस अधीक्षक ग्वालियर को अवगत कराया गया। इसके बाद पुलिस अधीक्षक ग्वालियर द्वारा प्रत्येक बालआरक्षक तथा उनके परिजनों से पेंशनभुगतान संबंधी आवास संबंधी समस्या तथा अन्य लैंबितभुगतान के संबंध में जानकारी प्राप्त की गई तथा लैंबितपेंशनप्रकरणों एक सप्ताह में निराकरण करने के निर्देशदिये। उन्होंने उपस्थित सभी बालआरक्षकों से उनके

द्वारा की जा रही पढ़ाई से संबंध में भी खुलकर वार्तालाप की तथा किसी भी प्रकार की समस्याहोने पर अवगत करने के

जिनकात्कालनिराकरण करने के निर्देश मैंके पर ही पुलिस अधीक्षक ग्वालियर द्वारा दिये गये। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक ने कहा कि आपके पिता पुलिस विभाग में सेवामत्रत्वे हुए दिवंगत हुए हैं, उनके भी अपने बच्चे के लिये सपने रहे होंगे, इसलिए आपलोगमेहनत से अपनी पढ़ाईकरेंथा अपने पिता के सपनों को साकारकरें। किसी भी प्रकार की समस्या या परेशानी आने पर हमें बतायें। आप पुलिस परिवार के सदस्य हैं आपकी प्रत्येक परेशानी में पुलिस विभाग आपके साथ खड़ा है। कार्यक्रम के अंत में पुलिस अधीक्षक ग्वालियर द्वारा बालआरक्षकों को स्कूलबैग व ड्राइंगिकिट्टेट की गई तथा बाल दिवस

की उपस्थित सभी लोगों को शुभकामनाएं दी। आज के कार्यक्रम में बालआरक्षक तपनछारी, सागर सिंह राजपूत, उत्कृष्णय, मयंक तोमर, अभिषेकलोधी, आशुजाटव, दीपक शर्मा, कु००पलक यादव, अंकितकु०जूर, खुशी गुर्जर, राधा शर्मा एवं शैलेषउपाध्याय व उनके परिजनउपस्थित रहे। उपस्थित बालआरक्षकों के पिता पुलिस विभाग में तैनाती के दौरान दिवंगत हुए थे।

लिये कहा। कार्यक्रम में उपस्थित एक बालआरक्षक आशु द्वारा आवास संबंधी समस्या से पुलिस अधीक्षक को अवगत कराया गया, जिस पर से पुलिस अधीक्षक ग्वालियर द्वारा तत्कालआवासआवंटनहेतु प्रक्रियाप्रारम्भ करने के निर्देश रक्षित निरीक्षक को दिये। दो बालआरक्षकों द्वारा पेंशन व अन्य भुगतान न होने के संबंध में पुलिस अधीक्षक ग्वालियर को अवगत कराया गया,



## स्वर्ग से बढ़कर है हमारी मातृभूमि: गृह मंत्री डॉ. मिश्रा

● (गूजरात नेटवर्क)

आजादी के अमृत महोत्सव में गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने राष्ट्रीय एकता दिवस मोटर-साइकिल रैली को हरी-झण्डी



दिखाई। इस अवसर पर संबोधित करते हुए डॉ. मिश्रा ने कहा कि हमारी मातृभूमि का स्थान स्वर्ण से भी बढ़कर है। हम अपनी मातृभूमि को भारत-माता कहते हैं। इस प्रकार का सम्मान संसार में जन्म-भूमि के प्रति भारत में ही दिया जाना संभव है। यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। डॉ. मिश्रा और पुलिस महानिदेशक श्री विवेक जौहरी ने शौर्य स्मारक की अमर जवान ज्योति और भारत-माता की प्रतिमा पर पुष्पचक्र अर्पित कर शहीदों को श्रद्धांजलि दी। गृह मंत्री डॉ. मिश्रा ने पुलिस जवानों को संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रीय एकता के प्रणेता देश के प्रथम उप प्रधानमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल की दृढ़ इच्छा-शक्ति और संकल्प के समक्ष सभी रियासतों का भारत में विलय हो गया। डॉ. मिश्रा ने रैली में शामिल जवानों से आवाहन किया कि वे शहीदों की जन्म-



गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने गवालियर में राजमाता रव. विजयराज सिंहिया की श्रद्धांजलि सभा में दिये उद्घोषन में कहा कि अम्मा जी महाराज के व्यक्तित्व से ही मातृत्व छलकता था। अम्माजी महाराज की छत्री पर राजमाता सिंहिया की 102वीं जयंती पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ। सभा में राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री श्रीमती वंयुधरा राजे सिंहिया, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्रीमती यशोधरा राजे सिंहिया, पूर्व मंत्री श्रीमती माया सिंह, श्री जयभान सिंह पवैया, श्री बालेन्दु शुक्ल, पूर्व महापौर श्रीमती समीक्षा गुप्ता, श्री कमल माखीजानी, श्री कौशल शर्मा, संत श्री ढोलीबुआ महाराज व संत श्री सतोष गुरु सहित वरिष्ठ जन-प्रतिनिधियों और गणमान्य नागरिकों ने अम्माजी महाराज के प्रति अपने श्रद्धासुनन अर्पित किये।

स्थली को भारत-माता के जयकारों से गुंजायमान करें, जिससे कि आने वाली पीढ़ियाँ शहीदों के समक्ष गर्व से नतमस्तक हों। उहोंने कहा कि मोटर-साइकिल रैली देशभक्ति और देशप्रेम के लिये जन-जागरूकता का सशक्त माध्यम बनकर युवाओं में ऊर्जा का संचार करे। गृह मंत्री

डॉ. मिश्रा ने राष्ट्रीय एकता दिवस पर शौर्य स्मारक से पुलिस और विशेष सशस्त्र बल की सातवीं वाहनी के 33 जवानों की मोटर-साइकिल रैली को रवाना किया। रैली प्रदेश में उन समस्त स्थलों पर जाकर पुष्णांजलि अर्पित करेगी, जहाँ के बीर सपूत्रों ने देश की रक्षा में अपने प्राण न्यौछावर किये हैं।

# होनहार प्रतिभाओं की आवाज बनकर उभरेगा गुंज 90.8 एफ.एम.



• (कृति शुभ देवरक्त)

व्यक्तिगत का प्रदर्शन भूले भूले स्लशन गुंज 90.8 एफ.एम. जब्त ही अपनी बोन आने वाला है जिसकी टीटरिंग चल रही है। अब मंगोलों के बीच आवाज़ी अपना आवाज़ गुंजाना गुंज मैडिक्यु पुण की प्रेषणक्षय गुंज 90.8 एफ.एम का यह फैला प्रसाम होता कि अपनका से जुड़े मुद्दे पर तमाय सम्बोधन हो अपनजन की आवाज और उनसे जुड़े भर्तुओं को सार्वजनिक रूप से उठाना ही हमारा फैला छेप होता। हमारे पाठकों तक महो समग्री दूर्घाते और उनके लिए सर्वांग निकु भी हो सके यह फैला प्रायस हमपर होता।

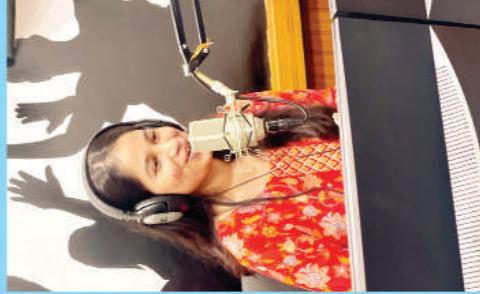
गुंज का मुख्य क्लैश्य समाज व्यक्ति को जीवनसारी, अपने बहुनों की प्रेषण करके उत्तराका भवत प्रदर्शन करता है। 90.8 एफ.एम. का प्रथम है समाज के प्रत्येक का एक एकुणा और उन्हें अपना एक विस्मा करा देता है। एक एक प्रदर्शन करता है जैसे आवाजों को जो समाज में उपस्थित नहीं अपन पा ल्हे हैं। ऐसे बहुत दुर्घात रहताकर हैं जो पूरे विश्व में है शहर का नाम रोनन कर मस्कते हैं लौकिक उत्तराका अपने सभी समकार करने की सेवा नहीं प्रियल पा रही है। गुंज के जैसे वे अपनी कला का जादू विस्तृत मस्कते हैं।

गुंज 90.8 एफ.एम के गोपनीयों में कृषि, शिक्षा, कार्यरूप, परमर्श, महिला सशक्तिकरण, चिकित्सा, मैडिकल, सड़क सुरक्षा, बच्चों के खेल, समरोंजस से भर होना गुंज का समाज की समस्याओं पर प्रकाश डाले व उक्त समाजान के मार्ग बताया। हमारे द्वारा प्रसामित किए जाने वाले कार्यक्रमों में महिला उत्थान एवं बीमों को आगे बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों पर भी फोकस होता। केन्द्र एवं एच समस्याएँ द्वारा महिलाओं के लिए चाहर्त जा रही किए जानकारी के लिए महिलाओं के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी जाती है। वार्ता में जानकारी ही जाती है।



## आपकी अपनी आवाज़

होनहार प्रतिभाओं को  
आगे बढ़ाना हमारा  
उद्देश्य: कृति सिंह



मनुदीप गुरु | नेपाल चौरू नेपाली | अप्रैल 2021

लालदीप गुरु | नेपाल चौरू नेपाली | जून 2021

# हर चुनौती का सफलतापूर्वक सामना किया परिवहन आयुक्त मुकेश जैन ने

लर्निंग लाइसेंस की प्रक्रिया को ऑनलाइन करने में बड़ा रहा है योगदान, प्रदेश के सभी जिलों में पीपीटी मोड पर ड्राइविंग ट्रेनिंग सेंटर शुरू करने की योजना पर काम शुरू

● (गूंज न्यूज नेटवर्क)

**म**

मध्य प्रदेश सीएम हेल्पलाइन द्वारा प्रतिवर्ष जारी होने वाली ग्रेडिंग में इस वर्ष भी प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले परिवहन विभाग में आईपीएस अधिकारी मुकेश जैन जी ने सभी अधिकारियों को निर्देश दिए की सीएम हेल्पलाइन पर आने वाली हर शिकायत का समाधान नागरिकों को पूरी संतुष्टि देना चाहिए। मुकेश ने अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि नागरिकों की समस्याओं को अपनी समस्या मान कर सकारात्मकता के साथ समाधान करना ही प्रमुख कर्तव्य है। सभी शिकायतों की दैनिक समीक्षा की जाती है तथा ये सुनिश्चित की जाता है कि सासाहिक बैठक में समस्याओं का संतुष्टिपूर्वक निराकरण हो सके। मुकेश जैन ने अपनी ड्यूटी में आई हर चुनौती का सफलतापूर्वक सामना किया है।

प्रति दिन 560 मीट्रिक टन ऑक्सीजन जुटाया

कोरोना काल में भी जब ऑक्सीजन की समस्या आई तब अस्पतालों तक ऑक्सीजन पहुंचाने का काम परिवहन विभाग ने मुकेश जैन जी के नेतृत्व में कुशलतापूर्वक किया। मध्य प्रदेश में प्रति दिन 560 मीट्रिक टन ऑक्सीजन जुटाया गया। परिवहन विभाग ने मानव जीवन को बचाने के लिए स्वयं का जीवन खतरे में डाल कर 24/7 ड्यूटी की। जब मुकेश जी को इस बात का श्रेय दिया गया तब उन्होंने बहुत ही सरलता से कहा, हम मुख्यमंत्री जी का संकल्प पूरा कर रहे हैं। ऑक्सीजन की कमी से किसी भी मरीज की जान नहीं जानी चाहिए। मानव जीवन को बचाने के लिए जो हमें जिम्मेदारी सौंपी गई है वो हमारी ड्यूटी का हिस्सा है, इसमें प्रशंसा की कोई बात नहीं है।

कंप्यूटरीकरण की सुविधा उपलब्ध कराई

इसके अलावा, लर्निंग लाइसेंस की प्रक्रिया को ऑनलाइन करने में मुकेश जी का बड़ा योगदान रहा है। परिवहन कार्यालयों में कंप्यूटरीकरण की सुविधा उपलब्ध कराई गई जिससे लर्निंग लाइसेंस प्राप्त करने की



प्रक्रिया संपर्कहीन हो सके। इस प्रक्रिया से 10 लाख युवा प्रतिवर्ष लाभान्वित होंगे। इस प्रक्रिया के लिए आवेदक को परिवहन कार्यालय जाने की ज़रूरत नहीं होती है, आवेदक अपने दस्तावेजों को स्कैन कर के अपलोड कर सकता है। दस्तावेजों के परीक्षण के उपरांत आवेदक ऑनलाइन टेस्ट दे कर दस्तावेज़ प्राप्त कर सकता है। इसमें समय की बचत हो रही है, और कार्यालयों में भीड़ कम हो रही है।

60,000 से ज्यादा लर्निंग लाइसेंस जारी

अभी तक 60,000 से ज्यादा लर्निंग लाइसेंस जारी किए जा चुके हैं। मुकेश जैन जी के नेतृत्व में प्रदेश में 40,000 से भी अधिक कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी) तथा एमपी ऑनलाइन के सर्विस केंद्र हैं जहाँ आवेदक ऑनलाइन आवेदन की सुविधा प्राप्त कर सकता है। मुकेश जी के प्रयास अब लर्निंग लाइसेंस

लर्निंग लाइसेंस की प्रक्रिया को ऑनलाइन करने में मुकेश जी का बड़ा योगदान रहा है। परिवहन कार्यालयों में कंप्यूटरीकरण की सुविधा उपलब्ध कराई गई मुकेश जी के नेतृत्व में व्हीकल लोकेशन ट्रैकिंग स्कीम पर भी काम किया जा रहा है जिसके अंतर्गत महिलाओं की सुरक्षा के लिए पब्लिक वाहनों में पैनिक बटन लगाया जाएगा जिसका इस्तेमाल महिलाएं खतरा महसूस होने पर कर सकती हैं। मुकेश जी के कार्य के तरीकों को देखते हुए आशा है कि उनके परिवहन आयुक्त नियुक्त होने पर प्रदेश की परिवहन व्यवस्था में और सुधार आएंगे।

बनवाने की सुविधा के बाद अब ऑनलाइन डुल्सीकेट ड्राइविंग लाइसेंस प्राप्त करने की सुविधा की दिशा में अग्रसर हैं। उन्होंने प्रदेश के सभी जिलों में पीपीटी मोड पर ड्राइविंग ट्रेनिंग सेंटर शुरू करने की योजना पर काम करना शुरू कर दिया है। इस प्रयास के माध्यम से सड़क व वाहन दर्दुघटनाओं में भी कमी आएगी।

व्हीकल लोकेशन ट्रैकिंग स्कीम

मुकेश जी के नेतृत्व में व्हीकल लोकेशन ट्रैकिंग स्कीम पर भी काम किया जा रहा है जिसके अंतर्गत महिलाओं की सुरक्षा के लिए पब्लिक वाहनों में पैनिक बटन लगाया जाएगा जिसका इस्तेमाल महिलाएं खतरा महसूस होने पर कर सकती हैं। मुकेश जी के कार्य के तरीकों को देखते हुए आशा है कि उनके परिवहन आयुक्त नियुक्त होने पर प्रदेश की परिवहन व्यवस्था में और सुधार आएंगे।

# अपने स्वास्थ्य को लेकर रहिए सावधान, तनाव से बचने की करें कौशिश

मधुमेह ग्रसित होने पर बैलेंस डाइट एवं एक साथ ज्यादा खाना खाने की बजाय 2-3 घंटे के अंतराल पर थोड़ा-थोड़ा खाना खाना चाहिए। साथ ही दिन भर की एक उचित समय सारणी बनाएं तथा उसका पालन करें। यह मधुमेह को नियंत्रित रखने के लिए एक अच्छा उपाय है।

आम लोगों में मधुमेह (डायबिटीज) बीमारी को लेकर जागरूकता पैदा करने के लिए प्रति वर्ष 14 नवंबर को विश्व मधुमेह दिवस मनाया जाता है। आईडीएफ यानी इंटरनेशनल डायबिटीज फेडरेशन हर साल वर्ल्ड डायबिटीज डे के लिए एक थीम चुनता है। इस वर्ष के लिए उनका मेन फोकस है- **डायबिटीज केराय तक पहुंच-**यदि अभी नहीं, तो कब?

देखा जाए तो गाँव से शहर की तरफ भागने के इस दौर में हम शहरी सुख-सुविधाओं और उन्नत तकनीकी का लाभ तो उठा पा रहे हैं, लेकिन शहरी भाग दौड़ के जीवन में विकसित हो रही अव्यवस्थित जीवनशैली और तनाव की वजह से मधुमेह बीमारी के शिकाय हो जाते हैं। यही वजह है कि गाँवों की तुलना में शहरी आबादी में डायबिटीज के रोगी ज्यादा मिलते हैं।

इसलिए इस बीमारी को रोकने के लिए न केवल जनजागरूकता बल्कि लाइफस्टाइल में बदलाव भी बेहद जरूरी है। सच कहा जाए तो मधुमेह बीमारी में जागरूकता एवं बचाव की सबसे अहम भूमिका है, क्योंकि मधुमेह का नियंत्रण तो किया जा सकता है, पर इसे जड़ से खत्म नहीं किया जा सकता।

ऐसे में डायबिटीज को यदि नियंत्रित ना किया जाये, तो इसका असर किडनी (गुर्दा), आँख, हृदय तथा ब्लड प्रेशर आदि पर पड़ता है। दरअसल, डायबिटीज की बीमारी में शरीर में ब्लड शुगर की मात्रा बढ़ जाती है। ऐसा तब होता है, जब शरीर में हामोन इन्सुलिन की कमी हो जाती है या इन्सुलिन का शरीर की क्रियाओं के साथ संतुलन बिगड़ जाता है।

चिकित्सा विशेषज्ञ बताते हैं कि हमलोग सामान्यतः मधुमेह रोग से बचने के लिए चीनी खाना कम कर देते हैं, किंतु यह सही नहीं है। चीनी से ज्यादा हमें कैलोरी का ध्यान रखना चाहिए। जैसे कि पराठे में चीनी नहीं होती, लेकिन उसमें कैलोरी की मात्रा बहुत ज्यादा होती है। ऐसे में वह पराठा यदि किसी को डायबिटीज होने का खतरा बना हुआ है तो उसके लिए धातक सिद्ध हो सकता है।

मधुमेह ग्रसित होने पर बैलेंस डाइट एवं एक साथ ज्यादा खाना खाने की बजाय 2-3 घंटे के अंतराल पर थोड़ा-थोड़ा खाना खाना चाहिए। साथ ही दिन भर की एक उचित समय सारणी बनाएं तथा उसका पालन करें। यह मधुमेह

को नियंत्रित रखने के लिए एक अच्छा उपाय है।

लोगों को उचित समय अंतराल में ब्लड शुगर की जांच करानी चाहिए एवं साल में एक बार 3 महीने की मधुमेह रोग की जानकारी देने वाले टेस्ट एचबीएसी को भी कराते रहना चाहिए। क्योंकि डायबिटीज शुरू होने के कई लक्षण आम्ब में दिखने लगते हैं जिन्हें हमें इनोर नहीं करना चाहिए। इन लक्षणों को व्यक्ति आसानी से शुरूआत में ही

तेज व्यास लगाना- डायबिटीज के शुरूआती लक्षण व्यास बार बार लगाना से भी पाया गया है। बार बार फोड़े-फुंसी होना या फिर शरीर पर चोट लगने कटने इत्यादि पर घाव का देर तक बना रहना डायबिटीज के लक्षण हैं।

शरीर में झुनझुनहाट-व्यक्ति को शरीर के अंगों हाथों, कन्धे, जोड़ों, गर्दन में झुनझुनहाट महसूस होनी शुरू हो जाती है। इस तरह के शरीरिक लक्षण डायबिटीज के संकेत हैं। ऐसे

में तुरन्त चिकित्सक से सलाह लें।

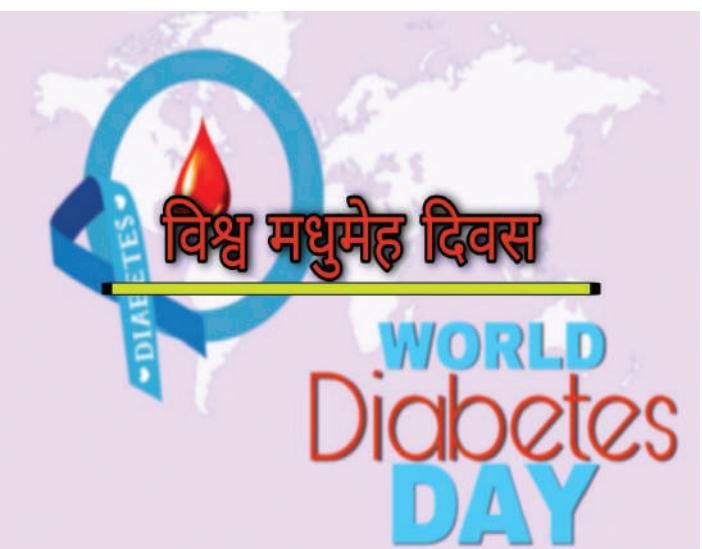
आंखें कमजोर होना- आंखों का कमजोर होना, सामने धुंधलापन होना, दूर की नजर साफ नजर नहीं आना, अचानक आंखों में अन्धेरा छाना, इस तरह की समस्याएं डायबिटीज के संकेत माने जाते हैं।

चोट घाव ठीक न होना- डायबिटीज के शुरूआती लक्षण में व्यक्ति के शरीर में लगे चोट, ठोकर घाव, चटने पर शीश ठीक नहीं होते। व्यक्ति चोट घाव से लम्बे समय तक ग्रस्त रहता है।

पता लगा सकता है और डायबिटीज होने से बच सकता है। यदि व्यक्ति में लगभग 6-7 लक्षण मौजूद हैं तो शुगर पहचानने में दर्दी न करें। तुरन्त डॉक्टर की सलाह लें और शुगर होने से छुटकारा पायें और स्वस्थ जीवन यापन करें। किसी भी तरह का तनाव- तनाव को डायबिटीज का एक प्रमुख कारण बताया और कहा कि पारिवारिक या कार्य से जुड़ा हुआ या अन्य किसी भी प्रकार का तनाव डायबिटीज करने के लिए एक प्रमुख कारण हो सकता है। ऐसे कम करने का प्रयास करें एवं पर्याप्त 6-7 घंटे की नींद लें। मौर्निंग वॉक एवं योग को दिनचर्या में शामिल करें।

अचानक वजन घटना- डायबिटीज के महत्वपूर्ण लक्षणों में व्यक्ति का वजन अचानक घटने लगता है या फिर वजन तेजी से बढ़ने लगता है। बार बार पेशाब आना- डायबिटीज होने का मुख्य लक्षण है।

तेज भूख लगाना- व्यक्ति को तेज भूख लगना, खाना खाने के तुरन्त बाद फिर तेज खाने की इच्छा आदि भूख से सम्बन्धित समस्याएं डायबिटीज के शुरूआती लक्षण हैं।



पता लगा सकता है और डायबिटीज होने से बच सकता है।

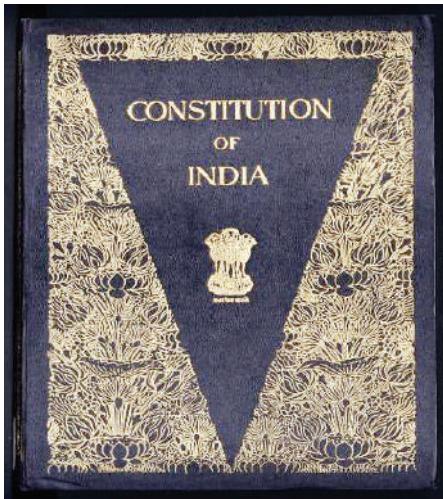
यदि व्यक्ति के लगभग 6-7 लक्षण मौजूद हैं तो शुगर पहचानने में दर्दी न करें। तुरन्त डॉक्टर की सलाह लें और शुगर होने से छुटकारा पायें और स्वस्थ जीवन यापन करें। किसी भी तरह का तनाव- तनाव को डायबिटीज का एक प्रमुख कारण बताया और कहा कि पारिवारिक या कार्य से जुड़ा हुआ या अन्य किसी भी प्रकार का तनाव डायबिटीज करने के लिए एक प्रमुख कारण हो सकता है। ऐसे कम करने का प्रयास करें एवं पर्याप्त 6-7 घंटे की नींद लें। मौर्निंग वॉक एवं योग को दिनचर्या में शामिल करें।

अचानक वजन घटना- डायबिटीज के महत्वपूर्ण लक्षणों में व्यक्ति का वजन अचानक घटने लगता है या फिर वजन तेजी से बढ़ने लगता है। बार बार पेशाब आना- डायबिटीज होने का मुख्य लक्षण है।

# दुनिया का सबसे लंबा और विस्तृत संविधान है भारतीय संविधान

# संविधान

26 नवंबर, 1949 और 26 जनवरी, 1950. भारत के संविधान के इतिहास की ये दो अहम तारीखें हैं। 26 नवंबर, 1949 को हमारा संविधान अंगीकार किया गया तो 26 जनवरी, 1950 को इसे लागू किया गया। संविधान को जिस तारीख को अंगीकार किया गया यानी 26 नवंबर, उस दिन को संविधान दिवस के तौर पर मनाया जाता है और 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस। 1946 में ब्रिटिश शासन ने भारत को आजादी देने के लिए गंभीरता से सोचना शुरू कर दिया। इसकी शुरुआत हुई भारत में ब्रिटिश शासन द्वारा एक कैबिनेट मिशन भेजे जाने से। कैबिनेट मिशन को ब्रिटिश सरकार और भारत के विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधियों से मिलना था। मिलकर उनको भारतीय संविधान के ढांचे का मसौदा तैयार करने के मकसद से संविधान सभा के गठन की संभावना पर चर्चा करना था।



एक लोकतांत्रिक देश में सर्वप्रथम संविधान होना ज़रूरी है। संविधान में लिखे नियम व कानून सभी देशवासियों के लिए एक समान होते हैं। जब भारत आजाद हुआ उस समय हमारा अपना कोई कानून नहीं था। डॉ. भीमराव अंबेडकर को 29 अगस्त, 1947 को संविधान मसौदा समिति के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया था। भारत देश में अलग - अलग धर्म, जाति और वर्ग के लोग रहते हैं उनके बीच अंतर को मिटाना सबसे ज्यादा ज़रूरी था। इसलिए संविधान लिखने हुए अंबेडकर जी ने देश की एकता को बनाए रखने के लिए धार्मिक और जाति समानता पर जोर दिया था। भारत का संविधान 26 नवम्बर 1949 को पारित किया था। इसे 26 जनवरी 1950 से लागू किया गया था। भारतीय संविधान को तैयार करने के लिए एक संविधान सभा का निर्माण किया गया था। भरत का संविधान 2 साल, 11 महीने, 18 दिन में, कुल



114 दिन सभा की बैठकों द्वारा तैयार हुआ था। इसकी बैठकों में शामिल होने के लिए जनता और प्रेस को पूरी स्वतंत्रता थी। संविधान का मसौदा लिखने वाली समिति ने इसे हिंदी, अंग्रेजी में हाथ से लिखकर कैलिग्राफ किया था। भारत का संविधान विश्व के किसी भी गणतांत्रिक देश का सबसे लंबा लिखित संविधान है, इसको विभिन्न देशों से लिया गया है -

## संविधान सभा का गठन

साल 1946 में कैबिनेट मिशन प्लान के तहत संविधान सभा का गठन किया गया। डॉ. राजेंद्र प्रसाद को इसका स्थायी अध्यक्ष और डॉ. बी. आर. आंबेडकर को प्रारूप समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। ड्राफ्ट रिपोर्ट तैयार करने के लिए 13 समितियों का गठन किया गया। शुरू में संविधान सभा में कुल 389 सदस्य थे। प्रोविंसेज के 292 प्रतिनिधि, राज्यों के 93 प्रतिनिधि, चीफ कमिशनर प्रोविंसेज के 3, बलूचिस्तान के 1 प्रतिनिधि शामिल थे। बाद में मुस्लिम लीग ने खुद को इससे

# एक नजर

# संविधान



अलग कर लिया जिसके बाद संविधान सभा के सदस्यों की संख्या 299 रह गई।

## पहला द्राप्त और उस पर चर्चा

जनवरी 1948 में भारत के संविधान का पहला प्रारूप चर्चा के लिए प्रस्तुत किया गया। 4 नवंबर, 1948 को चर्चा शुरू हुई और 32 दिनों तक चली। इस अधिकार के दौरान 7,635 संशोधन प्रस्तावित किए गए जिनमें से 2,473 पर विस्तार से चर्चा हुईं। 2 साल, 11 महीने और 18 दिनों तक संविधान सभा की बैठक हुई जिस दौरान संविधान को अंतिम रूप दिया गया गया।

## संविधान पर हस्ताक्षर और अंगीकार किया गया

24 जनवरी, 1950 को संविधान सभा के 284 सदस्यों ने भारत के संविधान पर हस्ताक्षर किया। हस्ताक्षर करने वालों में 15 महिला सदस्य भी शामिल थे। 26 नवंबर, 1949 को इस संविधान को अंगीकार किया गया और 26 जनवरी, 1950 को लागू किया गया।

## प्रेम बिहारी नारायण

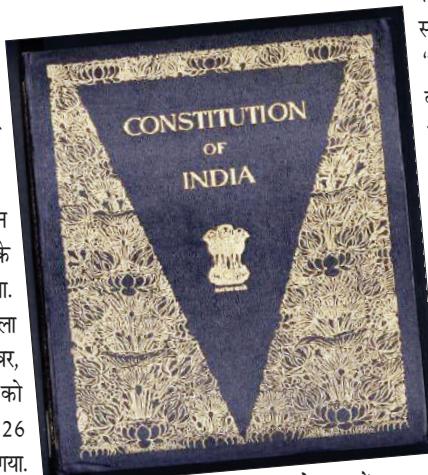
### रायजादा

संविधान की मूल प्रति को हिंदी और इंग्लिश में प्रेम बिहारी नारायण रायजादा ने लिखा था। रायजादा के परिवार का पेशा कैलिग्राफी था। उन्होंने संविधान के हर पेज को खूबसूरत लिखावट और इंटर्लिंक में लिखा है। उन्होंने नंबर 303 के 254 पेज हॉल्डर निब का संविधान लिखने के लिए इस्तेमाल किया। संविधान लिखने में उनको छह महीने लगे। भारत सरकार द्वारा कॉन्स्ट्रक्यूशन हाउस में उनको एक कमरा आवंटित किया गया था। जब उनसे मेहनताना पूछा गया था तो उन्होंने कुछ भी लेने से इंकार कर दिया था। उन्होंने सिर्फ एक शर्त रखी कि संविधान के हर पृष्ठ पर वह अपना नाम लिखेंगे और अंतिम पेज पर अपने नाम के साथ अपने दादा

का भी नाम लिखेंगे।

## चित्रकारी

संविधान के हर पेज चित्रों से सजाने काम का काम आचार्य नंदलाल बोस को सौंपा गया था। नंदलाल बोस की पंडित जवाहर लाल नेहरू से शांति निकेतन में मुलाकात हुई थी, जहां पंडित नेहरू ने उनके सामने यह प्रस्ताव रखा था। उनके मार्गदर्शन में उनके शिष्यों ने संविधान को डिजाइन देने का काम किया। बड़ी-बड़ी तस्वीरों को नंदलाल बोस ने खुद से पेंट किया। संविधान के सबसे अहम पेज 'प्रस्तावना' को अपनी कला से सजाने का काम व्यौहार राममनोहर सिन्हा ने किया। वह नंदलाल बोस के एक शिष्य थे। संविधान की मूल प्रति भारतीय संसद की लाइब्रेरी में हीलियम से भरे केस में रखी गई है।



शेड्यूल हैं। मूल संविधान में 395 आर्टिकल्स और 9 शेड्यूल थे। भारतीय संविधान की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि इसको नैयार करते समय सांस्कृतिक, धार्मिक और भौगोलिक विविधता का ध्यान रखा गया।

## उधार का थैला

भारत के संविधान को उधार का थैला भी कहा जाता है। इसमें कई अहम चीजों को अन्य संविधानों से लिया गया है। आजादी, समानता और बंधुत्व के सिद्धांतों को फांस के संविधान से लिया गया है। 5 वर्षीय योजना का आइडिया यूएसएसआर से लिया गया था। सामाजिक-आर्थिक अधिकार का सिद्धांत आयरलैंड से लिया गया। सबसे अहम, जिस कानून पर सुप्रीम कोर्ट काम करता है, वह जापान से लिया गया। ऐसी कई और चीजें हैं जो अन्य देशों के संविधान से ली गई हैं।

भारत की संसदीय शासन प्रणाली ब्रिटेन से प्रेरित है। साथ ही संविधान में एकल नागरिकता, कानून निर्माण प्रक्रिया, विधि का शासन, मन्त्रिमंडल प्रणाली, न्यायालय के विशेषाधिकार, संसदीय विशेषाधिकार और द्वि-सदनवाद को ब्रिटिश संविधान से लिया गया है।

भारत के संविधान में आपातकाल के समय के अधिकारों के संबंध में प्रावधान यूरोपीय देश जर्मनी के संविधान से लिए गए हैं।

भारतीय संविधान में संविधान संशोधन की प्रक्रिया संबंधी प्रावधान, राज्यसभा में सदस्यों का निर्वाचन प्रणाली आदि दक्षिण अफ्रीका के संविधान से लिए गए हैं।

भारतीय संविधान में राज्य के नीति निर्देशक तत्व, राष्ट्रपति के निर्वाचक-मंडल की व्यवस्था, राष्ट्रपति द्वारा राज्य सभा में 12 सदस्यों का मनोनयन (साहित्य, कला, विज्ञान तथा सामाजिक सेवा आदि के क्षेत्र से सम्मानित व्यक्ति) जैसे प्रावधान आयरलैंड के संविधान से लिए गए हैं।

भारतीय संविधान की प्रस्तावना की भाषा, समर्वती सूची का प्रावधान, केंद्र एवं राज्य के बीच संबंध तथा शक्तियों का विभाजन, व्यापार-वाणिज्य और संसद के दोनों सदनों की संयुक्त बैठक आदि व्यवस्थाओं को ऑस्ट्रेलिया के संविधान से लेकर भारतीय संविधान में जोड़ा गया है।

भारतीय संविधान में संघीय शासन व्यवस्था के प्रावधान, केंद्र के अधीन अतिविशिष्ट शक्तियां, केंद्र द्वारा राज्य के राज्यपाल की नियुक्ति और राष्ट्रपति का उच्चतम न्यायालय से परामर्श प्राप्त करने की व्यवस्था, यूनियन ऑफ स्टेट्स शब्द की अवधारणा आदि कनाडा के संविधान से लिए गए हैं।

भारतीय संविधान में मौलिक कर्तव्यों के प्रावधान, मूल कर्तव्यों और प्रस्तावना में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय का आदर्श तत्कालीन सोवियत संघ यानी रूस के संविधान से लिए गए हैं।

भारतीय संविधान में विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया को जापान से लिया गया है।

भारतीय संविधान में गणतंत्रात्मक और प्रस्तावना में स्वतंत्रता, समता, बंधुता के आदर्श का सिद्धांत फांस से लिया गया है।

# शिक्षा और साक्षरता

● (गूँज न्यूज नेटवर्क)

**शिक्षा** और साक्षरता को समानार्थी शब्द समझा जाता है पर दोनों में बहुत गहरा अंतर होता है। अक्षर पढ़ कर और लिख कर हर व्यक्ति साक्षर तो बन सकता है लेकिन शिक्षित नहीं बन सकता है। शिक्षित होने के लिए आपको साक्षर होने की ज़रूरत नहीं है। शिक्षा केवल किताबों तक सीमित नहीं है। शिक्षा आपके विचार, व्यक्ताव और शिश्चाचार में दिखती है। आपने ये बहुत लोगों को कहते हुए सुना होगा और शायद कहा भी होगा कि वो व्यक्ति पढ़ा - लिखा गंवार है। ऐसा तभी कहा जाता है जब कोई व्यक्ति ने बहुत अच्छी पढ़ाई की हो लेकिन उसके विचार और व्यक्ताव एक अशिक्षित व्यक्ति के जैसे हों। इसका मतलब वो व्यक्ति साक्षर तो हो चुका है पर शिक्षित नहीं हुआ है। साक्षरता आपको शिक्षित होने में मदद करती है। यदि आप साक्षर नहीं हैं तो आपके लिए बहुत सामान्य चीज़ें काफ़ी कठिन हो जाएंगी क्योंकि आपको पढ़ा नहीं आएगा, लिखना नहीं आएगा, और गणना करनी नहीं आएगी।

शिक्षा सर्वप्रथम आपके घर से शुरू होती है। आपको जिस तरीके से बात करना सिखाया जाता है या आप घर में सभी को जिस तरीके से बात करते देखते हैं वैसे ही सीखते हैं, किस प्रकार के कपड़े कहां पहने जाएं, खाने - पीने का क्या सलीका होता है आदि बातें शिक्षा होती हैं जो आपको बचपन से सिखाई जाती हैं। आपको ये तो याद ही होगा जब घर में कोई मेहमान आते थे तब बचपन में मां उनसे नमस्कर करने को कहती थी, उनको सबसे पहले पानी दिया जाता है फिर खाना खिलाया जाता है, आदर - सत्कार किया जाता है, ये सब शिक्षा ही है। अगर कोई खाना अच्छा बनाता है तो वो खाना बनाने की विधियों में

शिक्षित है। अतः शिक्षा और साक्षरता अपने आप में दो स्वतंत्र शब्द हैं।

ऐसा नहीं है की अगर आप सूट - बूट में होगे तभी शिक्षित दिखेंगे। स्वामी विवेकानंद, नेताजी सुभाषचंद्र बोस जैसे महापुरुष साधारण वेश - भूषा में रहते थे, जो उनको

की ओर एक इंसान है और उससे भी भूल हो सकती है, उसने जान - बूझ कर नहीं किया है तो आप उसको माफ कर सकते हैं। आपकी प्रतिक्रिया आपके विचारों की उच्चता और आप एक मनुष्य के तौर पर कितने विकसित हुए हैं ये दर्शाती हैं। शिक्षा का पहला काम यही



असाधारण बनाता था वो उनका ज्ञान और विचार थे। इतना मान और सम्मान होने के बावजूद वो लोग बहुत विनम्र थे, ये ही उनके विचारों की उच्चता को दिखाता था। आजकल कुछ ऐसे लोग भी हैं जो बहुत बड़ी संस्थाओं से पढ़ते हैं और अपने आप को सबसे बेहतर समझते हैं, इस घंटं में वो किसी का सम्मान नहीं करते। आप चाहे जितने पढ़ - लिख जाएं लेकिन आप घर में बढ़ो का सम्मान, अतिथि का सम्मान और छोटों से अच्छा व्यक्ताव नहीं कर रहे हैं तो आप शिक्षित नहीं हैं, सिर्फ साक्षर हैं। शिक्षा समाज में रहना का सलीका सिखाती है, अच्छी भाषा बोलना सिखाती है, विचारों को उच्चता देती है, व्यवहार कुशल बनाती है, ज्ञान देती है और वो ज्ञान दूसरों की सहायता करने और विनम्र रहने की सीख देता है। ज्ञानी व्यक्ति हमेशा विनम्र होता है, उसकी विनम्रता सभी के साथ एक समान होती है वो रंग, रूप, शिक्षा या पैसा देख कर भेदभाव नहीं करता है और जिस मनुष्य को सिर्फ ज्ञान का भ्रम है वो खुद को बेहतर दिखाने और दूसरों को नीचा दिखाने में लगा रहता है। उदाहरण के तौर पर आप किसी मंहगे रेस्टोरेंट में जाएं और गलती से वेटर आपके कपड़ों पर थोड़ा - सा खाना फैला दे। निश्चीत ही गुस्सा तो आएगा लेकिन उस गुस्से को कैसे संभालना है। क्या आप उसके ऊपर चिल्हा देंगे, हाथ उठा देंगे या आप ये समझेंगे

होता है को वो आपको एक बेहतर मनुष्य बनाए।

शिक्षा सिर्फ आपके बात करने के तरीके को नहीं बद्दिल्क आप क्या बात कर रहे हैं इसको भी प्रभावित करती हैं। सबसे पहले तो आपको जिस विषय की जानकारी नहीं है उसके बारे में बोलने की बजाए आपको सुनना चाहिए। विषय के बारे में सही साधनों से जानकारी प्राप्त करने के बाद ही आपको बोलना चाहिए। जिस विषय के बारे में आपने जानकारी प्राप्त करली है आप उस विषय में शिक्षित हो गए हैं। साक्षर व्यक्ति सर्फ खुद का अच्छा कर पाता है और शिक्षित व्यक्ति पूरे समाज का कल्याण करता है। जैसे महात्मा गांधी जी बहुत शिक्षीत थे, उन्होंने अपनी शिक्षा और सिद्धांतों से देश की आज़ादी में एक अहम भूमिका निभाई। कई महात्मा, पण्डित और कवियों ने बहुत महान ग्रंथ पढ़े होते हैं, वेदों और पुराणों का ज्ञान होता है, सुंदर रचनाएं की होती हैं, पर वो ज्ञान सिर्फ दूसरों को देते हैं या उस ज्ञान का बखान करते हैं, लेकिन स्वयं के जीवन में वो ज्ञान नहीं उतारते हैं। जो ज्ञान आपको है उस ज्ञान के अनुसार काम करना ज़रूरी है। यही फर्क होता है साक्षर और शिक्षित होने में। आप जिन किताबों को पढ़ रहे हैं, उस ज्ञान को अपनी डिग्री तक न सीमित रखते हुए अपने जीवन में भी उतारेंगे तभी आप शिक्षित हो सकते हैं।





## पुरुष भी भेदभाव, शोषण और असमानता का होते हैं शिकार

**ह**

मारा देश पुरुष प्रधान है और हमारे देश की तरह विश्व में कई देश ऐसे हैं जो पुरुष प्रधान हैं। लेकिन इसका मतलब ये नहीं है की पुरुषों को समाज में कोई समस्या नहीं होती है। पुरुष भी भेदभाव, शोषण और असमानता का शिकार होते हैं। पुरुषों के प्रति समाज

वो किसी प्रकार का दिन नहीं मनाती। इसके बाद 19 नवंबर 1999 में त्रिनिदाद और टोबैगो के लोगों द्वारा पहली बार अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस मनाया गया। डॉ.

का उद्देश्य पुरुषों का मानसिक स्वास्थ्य, पुरुषत्व के सकारात्मक गुणों की सराहना, समाज में मौजूद पुरुष रोल मॉडल्स को मुख्यधारा में लाना, लैंगिक समानता

### पुरुषों के इन मुद्दों पर नज़र डालना ज़रूरी है



को जागरूक करने के लिए अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस हर साल 19 नवम्बर को मनाया जाता है, और इसका सिलसिला शुरू हुआ 1999 से। 1923 में कुछ पुरुषों ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की तर्ज पर 23 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस मनाए जाने की मांग की थी। इसके बाद 1968 में अमेरिकन जर्नलिस्ट जॉन पी. हैरिस ने एक आर्टिकल लिखते हुए कहा था कि सोवियत सिस्टम में संतुलन की कमी है। ये प्रणाली महिलाओं के लिए अंतरराष्ट्रीय दिवस मनाती है लेकिन पुरुषों के लिए

दुनिया में सबसे ज्यादा आत्महत्या की दर पुरुषों में है।

उम्र के हर दौर में लड़कों और पुरुषों के सामने शिक्षा

जीरोम तिलकसिंह ने पुरुषों के योगदानों को मुख्यधारा में लाने के लिए काफी प्रयास किये। तभी से 19 नवंबर को पूरे विश्व में उनके पिता के जन्मदिन पर अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस मनाया जाता है। भारत में पहली बार पुरुष दिवस 2007 में मनाया गया था। पुरुष दिवस मनाने

को लेकर समरयाएं खड़ी होती हैं।

पुरुष स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दे और छोटी लाइफ एक्सप्रेक्टेंसी रेट, वर्कप्लेस पर मृत्यु के शिकार सबसे ज्यादा पुरुष होते हैं।

पुरुषों में हिंसा के मामले भी सामने आते हैं। वे भी रेप, यौन शोषण और घरेलू हिंसा के शिकार होते हैं। अभिभावक के तौर पर पुरुषों के सामने महिलाओं के समान चुनौतियां आती हैं। सिंगल पैरेंट के तौर पर या बच्चे की मां से अच्छे संबंध न होने पर पिता के अधिकार को शोषण भी होता है।

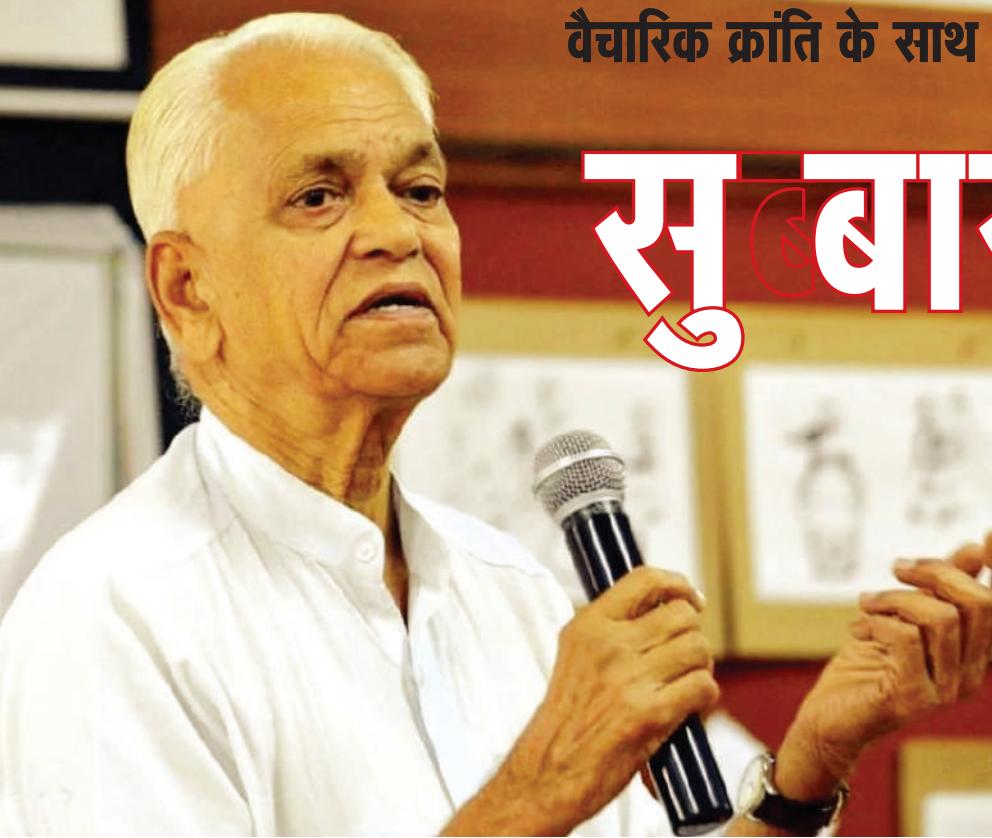
घरेलू हिंसा के शिकार, किसी अन्य तरह की हिंसा के शिकार या शोषण के शिकार पुरुषों के अधिकारों के बारे में बात करना ज़रूरी है।

मीडिया में पुरुषों के नकारात्मक छवि पेश करने के मुद्दे को उठाया भी ज़रूरी है।

आदि हैं। अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस के छह स्तंभों में से एक है लैंगिक संबंधों में सुधार और न केवल पुरुषों के लिए बल्कि महिलाओं के लिए भी लैंगिक समानता को बढ़ावा देना। इस साल पुरुष दिवस की थीम है - महिलाओं और पुरुषों के बीच बेहतर सम्बंध।

वैचारिक क्रांति के साथ समाज-क्रांति के पुरोधा थे

# सुब्बारावजी



## ● (गूँज न्यूज नेटवर्क)

सुब्बारावजी, अनेकों के भाईजी अब हमारे बीच में नहीं है, 93 साल की उम्र में दिल का दौरा पड़ा और दिल ने सांस लेना छोड़ दिया, वे हमें जीवन के अन्तिम पलों तक कर्म करते हुए, गाते-बजाते हुए अलबिदा कह गये। वे आजादी के सिपाही तो थे ही, लेकिन आजादी के बाद असली आजादी का अर्थ समझाने वाले महानायक एवं महात्मा गांधी के सच्चे प्रतिनिधि थे। उन्होंने गांधी के रहते तो गांधी का साथ दिया ही, लेकिन उनके जाने के बाद गांधी के अधूरे कार्यों को पूरा करने का बीड़ा उठाया। वे पुरुषार्थ की जलती मशाल थे। उनके व्यक्तित्व को एक शब्द में बन्द करना चाहे तो वह है- पौरुष।

सुब्बारावजी वैचारिक क्रांति के साथ समाज-क्रांति के पुरोधा थे। उनके क्रांतिकारी जीवन की शुरुआज मात्र 13 साल की उम्र में शुरू हो गयी थी, जब 1942 में गांधीजी ने अंग्रेजी हुक्मत को 'भारत छोड़ो' का आदेश दिया था। कर्नाटक के बंगलुरु के एक स्कूल में पढ़ रहे 13 साल के सुब्बाराव को और कुछ नहीं सूझा, तो उन्होंने अपने स्कूल व नगर की दीवारों पर बड़े-बड़े शब्दों में लिखना शुरू कर दिया- 'किट इडिया- भारत छोड़ो।' नारा एक ही था, तो सजा भी एक ही थी- जेल। 13 साल के सुब्बाराव जेल भेजे गए। बाद में सरकार ने उम्र देखकर उहें रिहा कर दिया, पर हालात देखकर सुब्बाराव ने इस काम से रिहाई नहीं ली। आजादी के संघर्ष में सक्रिय सहभागिता निभाई।



डॉ सुब्बाराव 92 साल के थे। उनका जन्म कर्नाटक के बंगलुरु में 7 फरवरी 1929 को हुआ था। लेकिन मध्य प्रदेश को उन्होंने अपनी कर्मभूमि बनाया। ऐसे दौर में जब चंबल में बागियों, डैकैतों का आतंक था, भाईजी ने उनके समर्पण के लिए अद्भुत कार्य किया। बागियों के लिए बदनाम चंबल घाटी में उहीं के प्रयास से शांति आयी। उन्होंने यहां के कुख्यात डैकैत मलखान सिंह, माधौ सिंह, मोहर सिंह जैसे साढ़े 662 डैकैतों को आत्म समर्पण करवा कर समाज की मुख्यधारा से जोड़ा। जौरा में उन्होंने पहला गांधी आश्रम स्थापित किया और यही डैकैतों का समर्पण भी करवाया।

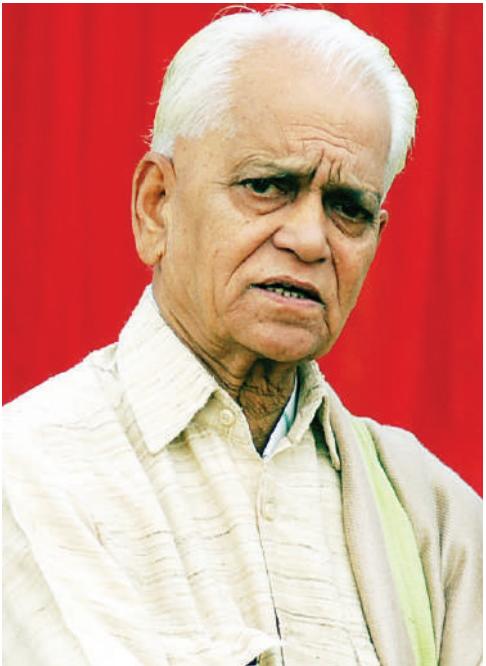
मध्य प्रदेश के चंबल के इलाकों में सुब्बाराव ने जो काम किया, वह असंभव सरीका था। सरकार करोड़ों रुपये खर्च करके और भारी पुलिस-बल लगाने के बाद भी कुछ खास हासिल नहीं कर पायी थी। फिर कहीं से कोई लहर उठी और डाकुओं की एक टोली ने संत विनोबा भावे के सम्मुख अपनी बंदूकें रखकर कहा- हम अपने किए का प्रायश्चित्त करते हैं और नागरिक जीवन में लौटना चाहते हैं! यह डाकुओं का ऐसा समर्पण था, जिसने देश-दुनिया के समाजशास्त्रियों को कुछ नया देखने-समझने पर मजबूर कर दिया। बागी-समर्पण के इस अद्भुत काम में सुब्बाराव की अहम भूमिका रही। यह अहिंसा का एक विलक्षण प्रयोग था।

सुब्बाराव ने बहुत कुछ किया, लेकिन अपना पहनावा कभी नहीं बदला, हाफ पैंट और शर्ट पहने हंसमुख सुब्बाराव बहुत सर्दी में भले ही पूरी बांह की शर्ट में मिलते थे। अपने अटल विश्वास, अदम्य साहस, निर्भीकता, लेकिन अपने व्यवहार में विनीत व सरल सुब्बाराव इस देश की अमूल्य धरोहर थे, आत्मा थे। महात्मा गांधी के विचारों को आत्मसात करके जीने और उससे समाज को सतत समृद्ध-सम्पन्न करते रहने वाली पीढ़ी के वे एक अप्रतिम व्यक्ति-जुड़ारू व्यक्तित्व थे।

सुब्बारावजी का निधन एक युग की समाप्ति है। वे गांधीवादी सिद्धांतों पर जीने वाले व्यक्तियों की श्रृंखला के प्रतीक पुरुष थे। उनका जीवन सार्वजनिक जीवन में शुद्धता की, मूल्यों की, गैरराजनीति की, आदर्श के सामने राजसत्ता को छोटा गिनने की या सिद्धांतों पर अडिग

रहकर न जुकने, न समझौता करने के आदर्श मूल्यों की प्रेरणा था। हो सकता है ऐसे कई व्यक्ति अभी भी विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं। पर वे रोशनी में नहीं आ पाते। ऐसे व्यक्ति जब भी रोशनी में आते हैं तो जगजाहिर हैं-शोर उठता है। सुब्बारावजी ने आठ दशक तक सक्रिय सार्वजनिक गांधीवादी जीवन जिया, उनका जीवन मूल्यों एवं सिद्धान्तों की प्रेरक दास्तान है। वे सदा दूसरों से भिन्न रहे। घाल-मेल से दूर। भ्रष्ट सार्वजनिक जीवन में बेदाग। विचारों में निड। टूटे मूल्यों में अड़िग। धेरे तोड़कर निकलती भीड़ में मर्यादित। रचनात्मक कार्यकर्ता बनाने का कठिन सपना गांधीजी का था, लेकिन सुब्बाराव ने रचनात्मक मानस के युवाओं को जोड़ने का अनूठा काम किया। उनके पास युवकों के साथ काम करने का गजब हूनर था। वे सच्चे सर्वोदयी कार्यकर्ता बन हजारों-लाखों युवकों तक पहुंचे और उनकी भाषा, उनकी संस्कृति, उनकी बोलचाल में उनसे संवाद स्थापित किया।

सुब्बारावजी की सोच प्रारंभ से ही अनूठी, लोक से हटकर एवं मौलिक रही। 1969 में गांधी शताब्दी वर्ष को मनाने



की भी सुब्बाराव की कल्पना अनूठी थी। वे सरकार के सहयोग से दो रेलगाड़ियां- गांधी-दर्शन ट्रेनों को लेकर समूचे देश में धूमें और गांधी दर्शन को जन-जन का दर्शन बनाने का उपक्रम किया, पूरे साल ये ट्रेनें छोटे-छोटे स्टेशनों पर पहुंचती-रुकती रहीं और स्कूल कॉलेज के विद्यार्थी, आम लोग इनसे गांधी दर्शन एवं जीवन को देखते-समझते रहे। यह एक महा-अभियान ही था, जिसमें युवाओं से सीधे व जीवंत संपर्क हुआ। अणुव्रत में काम करते हुए मुझे भी गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिली में उनके सान्निध्य एवं सम्पर्क करने का अवसर मिलता रहा।

सुब्बारावजी के महान् एवं ऊर्जस्वल व्यक्तित्व को समाज-सुधारक के सीमित दायरे में बांधना उनके व्यक्तित्व को सीमित करने का प्रयत्न होगा। उन्हें नये समाज का निर्माता कहा जा सकता है। उनके जैसे व्यक्ति विरल एवं अद्वितीय होते हैं। उनका गहन चिन्तन समाज के आधार पर नहीं, बरन् उनके चिन्तन में समाज अपने को खोजता है। उन्होंने साहित्य के माध्यम से स्वस्थ एवं गांधीवादी मूल्यों को स्थापित कर समाज को सजीव एवं शक्तिसम्पन्न बनाने का काम किया। समाज-निर्माण की कितनी नयी-नयी कल्पनायें उनके मस्तिष्क में तरंगित होती रही हैं, उसी की निष्पत्ति थी चंबल के डाकुओं का

समर्पण। चंबल के ही क्षेत्र जौगा में सुब्बाराव का अपना आश्रम था, जो दस्यु समर्पण का एक केंद्र था।

पन्द्रह से अधिक भाषाओं के जानकार सुब्बारावजी बहुआयामी व्यक्तित्व और विविधता में एकता के हिमायती रहे। वे महात्मा गांधी सेवा आश्रम में अपने कार्यों व गतिविधियों के माध्यम से समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान के लिए समर्पित रहे। खादी ग्रामोद्योग, वर्चित समुदाय के बच्चों विशेषकर बलिकाओं की

शिक्षा, शोषित व वर्चित समुदाय के बीच जनजागृति व प्राकृतिक संसाधनों पर वर्चितों के अधिकार, कृषि आधारित अर्थव्यवस्था का पुनर्निर्माण, युवाओं के विकास में सहभागिता के लिए नेतृत्व विकास, महिला सशक्तिकरण, गरीबों की ताकत से गरीबों-मुख्यी नियमों के निर्माण की पहल आदि के माध्यम से समाज में शांति स्थापना करने के लिए वे संकलिप्त रहे। उनके जीवन के अनेक आयाम रहे, उनके हर आयाम से आती ताजी

हवा के झोंकों से समाज दिशा एवं दृष्टि पाता रहा है। भारत की माटी को प्रणाल्य बनाने एवं कालखण्ड को अमरता प्रदान करने में भाईजी की अहं भूमिका रही। सुब्बारावजी ऐसे कर्मठ कर्मयोद्धा थे कि अंत समय तक भी काम ही करते रहे। उनके लिए आजादी का मतलब समयानुरूप बदलता रहा। कभी अंगेजों की गुलामी से मुक्ति का संघर्ष, तो कभी अंग्रेजीयत की मानसिक गुलामी से आजादी की कवायद। पूज्य विनोबा भावे और जयप्रकाश नारायण ने विचारों की जंग छेड़ी तो सुब्बारावजी उनके साथ में भी मजबूती से डटे रहे। वे आजाद भारत में कभी गरीबों के साथ खड़े होते तो कभी किसानों के साथ। लेकिन उनका विश्वास गांधीवाद में दृढ़ रहा, देश के विकास एवं राष्ट्रीयता की मजबूती के लिये वे प्रयत्नशील रहे। आजादी के बाद के समय में गांधीवादी व्यक्तियों का अकाल रहा या राजनीति की धरती का बांझपन? पर वास्तविकता है-लोग घुमावदार रास्ते से लोगों के जीवन में आते हैं वरना आसान रास्ता है- दिल तक पहुंचने का। हाँ, पर उस रास्ते पर नंगे पांव चलना पड़ता है। सुब्बाराव नंगे चले, बहुत चले, अनथक चलते रहे। आजाद भारत के 'महान् सपूत्रों' की सूची में कुछ नाम हैं जो अंगुलियों पर गिने जा सकते हैं। सुब्बारावजी का नाम प्रथम पंक्ति में होगा।

## 70 के दशक में कराया था

### 672 डैकेतों का महासमर्पण

चंबल धाटी डाकुओं भय से थर्रती थी। तंत्र के अन्याय से बगावत कर चंबल के भरकों की शरण में पल रहे दर्जनों गिरोह के हजारों डैकेतों के डर से आमजन तो क्या, पुलिस भी वहाँ जाने में थर्रा जाती थी। महात्मा गांधी के आळान पर भारत छोड़े आळोलन में कूद पड़े डॉ.एसएन सुब्बाराव ने आजादी के बाद यहाँ आश्रम स्थापित कर डेरा डाला था। वह डाकुओं के बीच गए, उन्हें समझाया, परिजन को साथ लेकर डैकेतों से मिले, उन्हें डाकू जीवन त्याग नया जीवन अपनाने को प्रेरित किया। तत्कालीन मुख्यमंत्री प्रकाश चन्द्र सेठी से मिले, और डैकेतों के महासमर्पण की भूमिका और शर्तें बताईं। डैकेतों के परिजन की पुलिस में नौकरी लगवाई, साथ ही खेती के लिए ज़मीन के पट्टे दिलवाए। सरकार ने शर्तें मान ली तो 1972 में जौरा के पगारा गांव के मैदान में 70 डाकुओं के एक साथ आत्मसमर्पण कराया। इसके बाद 1974 में कुल 672 डैकेतों में एक साथ महासमर्पण किया। डैकेतों ने आचार्य विनोबा भावे, स्वतंत्रता सेनानी और सर्वोदयी नेता जयप्रकाश नारायण व मध्यप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री प्रकाश चन्द्र सेठी के समक्ष हथियार समर्पित किए। सबसे पहले मोहर सिंह और माधो सिंह ने आत्मसमर्पण किया। इसके बाद 1972 में आरंभ समर्पण किया। सरगना और उनके गिरोहों ने समर्पण किया। समर्पण के लिए जैपी को लाने खुद डाकू सरगना माधो सिंह टेकेदार का वेष रख कर जैपी से मिलने पहुंच गए थे।

### राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय सम्मान

पद्मश्री पुरस्कार, राष्ट्रीय युवा परियोजना का राष्ट्रीय युवा पुरस्कार, काशी विद्या पीठ द्वारा डी लिट की मानद उपाधि, भारतीय एकता पुरस्कार, शातिदूत अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार, विश्व मानवधिकार प्रोत्साहन पुरस्कार-2002, राजीव गांधी राष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार-2003, राष्ट्रीय संप्रदाय सद्भावना पुरस्कार-2003, जयनालाल बजाज पुरस्कार-2006, महात्मा गांधी पुरस्कार-2008, अणुव्रत अहिंसा पुरस्कार-2010, भारतीय साथी संगठन दिल्ली द्वारा लाइफ टाइम अवीवमेट अवार्ड-2014, कर्नाटक सरकार द्वारा महात्मा गांधी प्रेरणा सेवा पुरस्कार-2014, राष्ट्रीय सद्भावना एकता पुरस्कार-2014 नागपुर।

# महिलाओं को समान शिक्षा के क्षेत्र में सावित्रीबाई फुले का अहम योगदान

दे

श की पहली महिला शिक्षक, समाज सेविका, मराठी की पहली कवियत्री और वर्चितों की आवाज बुलंद करने वाली क्रांतिज्ञोति सावित्रीबाई का जन्म 3 जनवरी, 1831 को महाराष्ट्र के पुणे-सतारा मार्ग पर स्थित नैगांव में एक दलित कृषक परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम खण्डेजी नेवसे और माता का नाम लक्ष्मीबाई था। 1840 में मात्र 9 साल की उम्र में सावित्रीबाई का विवाह 13 साल के ज्योतिराव फुले के साथ हुआ। विवाह के बाद अपने नसीब में संतान का सुख नहीं होते देख उन्होंने आत्महत्या करने जाती हुई एक विधवा ब्राह्मण महिला काशीबाई की अपने घर में डिलीवरी करवा उसके बच्चे को दत्तक पुत्र के रूप में गोद ले लिया और उसका नाम यशवंत राव रख दिया। बाद में उन्होंने यशवंत राव को पाल-पोसकर व पढ़ा-लिखाकर डॉक्टर बनाया।

सावित्रीबाई फुले और उनके पति ज्योतिराव फुले ने वर्ष 1848 में मात्र 9 विद्यार्थियों को लेकर एक स्कूल की शुरूआत की थी। ज्योतिराव ने अपनी पत्नी को घर पर ही पढ़ाया और एक शिक्षिका के तौर पर शिक्षित किया। बाद में उनके मित्र सखाराम यशवंत परांजपे और केशव शिवाराम भावतकर ने उनकी शिक्षा की जिम्मेदारी संभाली। उन्होंने महिला शिक्षा और दलित उत्थान को लेकर अपने पति ज्योतिराव के साथ मिलकर हुआधूत, बाल विवाह, सती प्रथा को रोकने व विधवा पुनर्विवाह को प्रारंभ करने की दिशा में कई उल्लेखनीय कार्य किये। उन्होंने शुद्ध, अति शुद्ध एवं स्त्री शिक्षा का आरंभ करके नये युग की नींव रखने के साथ घर की देहरी लांघकर बच्चों को पढ़ाने जाकर महिलाओं के लिए सार्वजनिक जीवन का उदय किया। ज्योतिराव फुले ने 28 जनवरी, 1853 को गर्भवती बलात्कार पीड़ितों के लिए बाल हत्या प्रतिबंधक गृह और 24 सितंबर, 1873 को सत्यशोधक समाज की स्थापना की। इस सत्यशोधक समाज की सावित्रीबाई फुले एक अत्यंत समर्पित कार्यकर्ता थीं। वह संस्था कम से कम खर्च पर देहेज मुक्त व बिना पर्डित-पुजारियों के विवाहों का आयोजन करती थी। इस तरह का पहला विवाह सावित्रीबाई की मित्र बाजूबाई की पुरी राधा और सीताराम के बीच 25 दिसंबर, 1873 को संपन्न हुआ। इस ऐतिहासिक क्षण पर शादी का समस्त खर्च स्वयं सावित्रीबाई फुले ने उठाया। 4 फरवरी, 1879 को उन्होंने अपने दत्तक पुत्र का

विवाह भी इसी पद्धति से किया, जो आधुनिक भारत का पहला अंतर्राजातीय विवाह था। दरअसल, इस प्रकार के विवाह की पद्धति पंजीकृत विवाहों से मिलती जुलती होती थी। जो आज भी कई भागों में पाई जाती है। इस विवाह का पूरे देश के पुजारियों ने विवाह किया और

पुत्र यशवंत को अवकाश लेकर आने को कहा और उन्होंने उसकी मदद से एक अस्पताल खुलवाया। इस नाजुक घड़ी में सावित्रीबाई स्वयं बीमारों के पास जाती और उन्हें इलाज के लिए अपने साथ अस्पताल लेकर आती। यह जानते हुए भी यह एक संक्रामक बीमारी है, पिर भी उन्होंने बीमारों की देखभाल करने में कोई कमी नहीं रखी। एक दिन जैसे ही उन्हें पता चला कि मुंडवा गांव में म्हारो की बस्ती में पांडुरंग बाबाजी गायकवाड का पुत्र प्लेग से पीड़ित हुआ है तो वह बहां गई और बीमार बच्चे को पीठ पर लादकर अस्पताल लेकर आयी। इस प्रक्रिया में यह महामारी उनको भी लग गई और 10 मार्च, 1897 को रात को 9 बजे उनकी सांसें थम गईं। निश्चित ही सावित्रीबाई फुले का योगदान 1857 की क्रांति की अमर नायिका ज्ञांसी की रानी लक्ष्मीबाई से कम नहीं आंका जा सकता, जिन्होंने अपनी पीठ पर बच्चे को लादकर उसे अस्पताल पहुंचाया। उनका पूरा जीवन गरीब, वर्चित, दलित तबके व महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष करने में बीता।



कोर्ट गए। जिससे फुले दंपति को कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। लेकिन, वे इससे विचलित नहीं हुए। इसके अलावा सावित्रीबाई फुले जब पढ़ाने के लिए अपने घर से निकलती थी, तब लोग उन पर कीचड़, कूड़ा और गोबर तक फेंकते थे। इसलिए वह एक साढ़ी अपने थैले में लेकर चलती थी और स्कूल पहुंचकर गंदी हुई साढ़ी को बदल लेती थी। महात्मा ज्योतिराव फुले की मृत्यु 28 नवंबर, 1890 को हुई, तब सावित्रीबाई ने उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने का संकल्प लिया। लेकिन, 1897 में प्लेग की भयंकर महामारी फैल गई। पुणे के कई लोग रोज इस बीमारी से मरने लगे। तब सावित्रीबाई ने अपने

समाज में नई जागृति लाने के लिए कवियत्री के रूप में सावित्रीबाई फुले ने 2 काव्य पुस्तकों काव्य फुले, बावनकशी सुबोधरताकार भी लिखीं। उनके योगदान को लेकर 1852 में तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने उन्हें सम्मानित भी किया। साथ ही केंद्र और महाराष्ट्र सरकार ने सावित्रीबाई फुले की स्मृति में कई पुरस्कारों की स्थापना की और उनके समाज में एक डाक टिकट भी जारी किया। उनकी एक मराठी कविता की हिंदी में अनुवादित पंक्तियाँ हैं- ज्ञान के बिना सब खो जाता है, ज्ञान के बिना हम जानवर बन जाते हैं इसलिए, खाली ना बैठो, जाओ, जाकर शिक्षा लो।

# आधुनिक भारत के वास्तुकार थे जवाहर लाल नेहरू

**ज**

वाहर लाल नेहरू आजादी की लड़ाई के दौरान बड़े नेता के रूप में उभरे। उन्हें आधुनिक भारत का वास्तुकार कहा जाता है। उनका जन्म इलाहाबाद में 14 नवम्बर 1889 को हुआ था। पंडित नेहरू के पिता मोतीलाल नेहरू एक बैरिस्टर थे और माता लाहौर की स्वरूपरानी थुस्सू थीं। चाचा नेहरू के नाम से मशहूर पंडित जवाहर लाल नेहरू न केवल भारत के पहले प्रधानमंत्री थे बल्कि उन्होंने देश के विकास

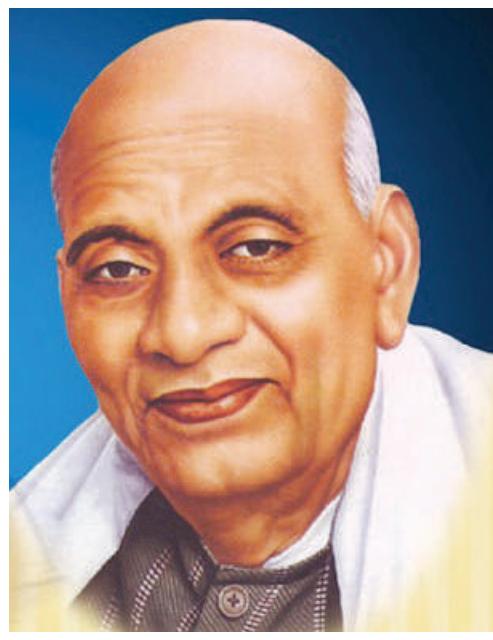
की नींव रखी। आज 14 नवम्बर को उस महान शशिष्ठसत का जन्मदिन है तो आइए हम आपको उस युगपुरुष के बारे में कुछ खास बातें बताते हैं। जानें जवाहर के बारे में जवाहर लाल नेहरू आजादी की लड़ाई के दौरान बड़े नेता के रूप में उभरे। उन्हें आधुनिक भारत का वास्तुकार कहा जाता है। उनका जन्म इलाहाबाद में 14 नवम्बर 1889 को हुआ था। पंडित नेहरू के पिता मोतीलाल नेहरू एक बैरिस्टर थे और माता लाहौर की स्वरूपरानी थुस्सू थीं। जवाहर लाल नेहरू अपने भाई-बहनों में सबसे बड़े थे उनसे छोटी उनकी दो बहनें थीं। उनमें से एक बड़ी बहन विजया लक्ष्मी थीं जो संयुक्त राष्ट्र महासभा की पहली महिला अध्यक्ष बनीं। दूसरी बहन कृष्णी हठीसिंग थीं जो प्रतिष्ठित लेखिका थीं। उन्होंने कई प्रसिद्ध रचनाएं की हैं। जवाहरलाल नेहरू बचपन से ही बहुत प्रतिभाशाली थे। उन्होंने दुनिया भर के अच्छे स्कूल-कॉलेज से अपनी पढ़ाई पूरी की। उसके बाद कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से वकालत किया। 1912 में वह देश वापस लौट आए और 1916 में कमल नेहरू से उनकी शादी हो गयी। उसके बाद वह आजादी की लड़ाई में शामिल हो गए। 1919 में गांधी जी के संपर्क में आए और उनके साथ स्वतंत्रता संग्राम में सम्मिलित हो गए। नेहरू गांधी के शास्त्रपूर्ण आंदोलन में विशेष रूप से शामिल होते थे। उन्होंने असहयोग आंदोलन में भी हिस्सा लिया और जेल भी गए। साथ ही वह 1924 में इलाहाबाद नगर निगम के अध्यक्ष भी चुने गए लेकिन बाद में उन्होंने इस्तीफा दे दिया। आजादी की लड़ाई में उल्लेखनीय योगदान के लिए आज भी नेहरू जी को याद किया जाता है। सन 1926 से 1928 तक जवाहर लाल नेहरू अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के महासचिव रहे। सन 1929 में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन लाहौर में आयोजित किया गया जिसमें जवाहरलाल नेहरू को कांग्रेस पार्टी का अध्यक्ष चुना गया। इसी समय पूर्ण स्वराज की मांग भी की गयी। 26 जनवरी 1930 को जवाहरलाल नेहरू ने लाहौर में स्वतंत्र भारत का झंडा फहराया। बाद में उन्होंने भारत छोड़े आंदोलन में भी विशेष रूप से योगदान दिया और जेल भी गए। पंडित जवाहर लाल नेहरू भारत के पहले प्रधानमंत्री बने। लेकिन जब वह प्रधानमंत्री बने तो देश में परिस्थितियां बहुत विकट थीं। हाल में देश का बंटवारा हुआ था और हिन्दू-मुस्लिम एकता को बनाए रखना बहुत बड़ी चुनौती थी। लेकिन नेहरू ने उस चुनौती को बखूबी स्वीकार किया तथा देश में एकता स्थापित कर धर्मनिरेपक्षता की रक्षा की। साथ ही उन्होंने अपने प्रधानमंत्री बनने के दौरान पंचवर्षीय योजनाएं जिससे भारत का विकास हुआ। 1964 में उनका निधन हो गया।



# दृढ़ इच्छा शक्ति तथा कुशल नेतृत्व के परिचायक थे सरदार पटेल

**ज**

सरदार वल्लभ भाई पटेल ही वह महान व्यक्तित्व हैं जिन्होंने देश के छोटे-छोटे रजवाड़ों और राजधानों को भारत में सम्मिलित किया। विशाल भारत की कल्पना बिना वल्लभ भाई पटेल के शायद पूरी नहीं हो पाती। उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति, नेतृत्व कौशल के परिणामस्वरूप ही 500 देशी रियासतों का भारतीय संघ में विलय हो सका। सरदार वल्लभ भाई पटेल को नवीन भारत का निर्माता तथा राष्ट्रीय एकता का शिल्पी माना जाता है।



उनके द्वारा किए गए साहसिक कार्यों के कारण ही उन्हें लौह पुरुष और सरदार जैसे विशेषणों से विभूषित किया गया है। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को क्रियात्मक तथा वैचारिक रूप में नई दिशा देने में उनका विशेष योगदान रहा है। वल्लभ भाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर, 1875 को गुजरात के नाडियाड में उनके ननिहाल में हुआ था। वह खेड़ा जिले के कारमसद में रहने वाले झावेर भाई पटेल

की चौथी संतान थे। उनकी माता का नाम लाडबा पटेल था। बचपन से ही वह बहुत मेधावी थे। उन्होंने वकालत की पढ़ाई पूरी की और जिला अधिवक्ता की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। जिससे उन्हें वकालत करने की अनुमति मिली। 1917 में मोहनदास करमचन्द गांधी के संपर्क में आने के बाद उन्होंने ब्रिटिश राज की नीतियों के विरोध में अहिंसक और नागरिक अवज्ञा आंदोलन के जरिए खेड़ा, बरसाड और बारदेली के किसानों को एकत्रित किया। अपने इस काम की वजह से देखते ही देखते वह गुजरात के प्रभावशाली नेताओं की श्रेणी में शामिल हो गए। गुजरात के बारदेली तालुका के लोगों ने उन्हें 'सरदार' नाम दिया और इस तरह वह सरदार वल्लभ भाई पटेल कहलाने लगे। सरदार पटेल का निधन 15 दिसंबर, 1950 को मुंबई में हुआ था। सरदार पटेल बचपन से अन्याय नहीं सहन कर पाते थे। नाडियाड में उनके स्कूल में अध्यापक पुस्तकों का व्यापार करते थे तथा छात्रों को बाहर से पुस्तक खरीदने से रोकते थे। सरदार पटेल ने इसका विरोध किया तथा साथी छात्रों को आंदोलन के प्रेरित किया। इस तरह छात्रों के विरोध के कारण अध्यापकों को अपना व्यापार बंद करना पड़ा। सरदार पटेल ने आजादी के ठीक पहले पौ.वी. मेनन के साथ मिलकर कई देशी रियासतों को भारत में मिलाने के लिये कार्य अरम्भ कर दिया था। उनके अथक प्रयासों के फलस्वरूप तीन राज्यों को छोड़ सभी भारत संघ में सम्मिलित हो गए। 15 अगस्त 1947 तक हैदराबाद, कश्मीर और जूनागढ़ को छोड़कर शेष भारतीय रियासतें 'भारत संघ' में सम्मिलित हो चुकी थीं। ऐसे में जब जूनागढ़ के नवाब के विश्वदृ विद्रोह हुआ तो वह भागकर पाकिस्तान चला गया और जूनागढ़ भी भारत में मिल गया। जब हैदराबाद के निजाम ने भारत में विलय का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया तो सरदार पटेल ने वहां सेना भेजकर निजाम का आत्मसमर्पण करा लिया। देश के पहले गृहमंत्री के रूप में उनका भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान है। गृहमंत्री के रूप में उनकी पहली प्राथमिकता देसी रियासतों को भारत में मिलाना था। इस काम के लिए उन्होंने बिना खून बहाए कर दिया इसलिए भी उन्हें 'लौह पुरुष' कहा जाता है।

# आखिर कैसे बॉलीवुड के बादशाह बने शाहरुख

**आ**

खिर शाहरुख खान बॉलीवुड के बादशाह कैसे बने? क्यों उनके समाने कोई टिक नहीं पाया?

किन कारणों से आज भी किंग खान का दबदबा भारतीय सिनेमा में बरकरार है? आज इस आर्टिकल में हम शाहरुख खान की 10 क्रालिटी के बारे में बताएंगे जिस कारण उन्हें बॉलीवुड का बादशाह कहा जाता है। बॉलीवुड का बादशाह कहो या किंग खान... ये नाम लेते ही हमारी आंखों के समाने केवल और केवल शाहरुख खान की ही तस्वीर दिखायी पड़ती है। भारत का बच्चा-बच्चा शाहरुख खान को पहचानता है। 26 साल पहले फिल्म दीवाना से बॉलीवुड में एंट्री करने वाली शाहरुख ने 3 दर्शकों से बॉलीवुड पर राज किया। उनकी कई फिल्मों की कतार है जो आने वाले सालों में रिलीज होने के लिए तैयार हैं। आखिर शाहरुख खान बॉलीवुड के बादशाह कैसे बने? क्यों उनके समाने कोई टिक नहीं पाया? किन कारणों से आज भी किंग खान का दबदबा भारतीय सिनेमा में बरकरार है? आज इस आर्टिकल में हम शाहरुख खान की 10 क्रालिटी के बारे में बताएंगे जिस कारण उन्हें बॉलीवुड का बादशाह कहा जाता है।

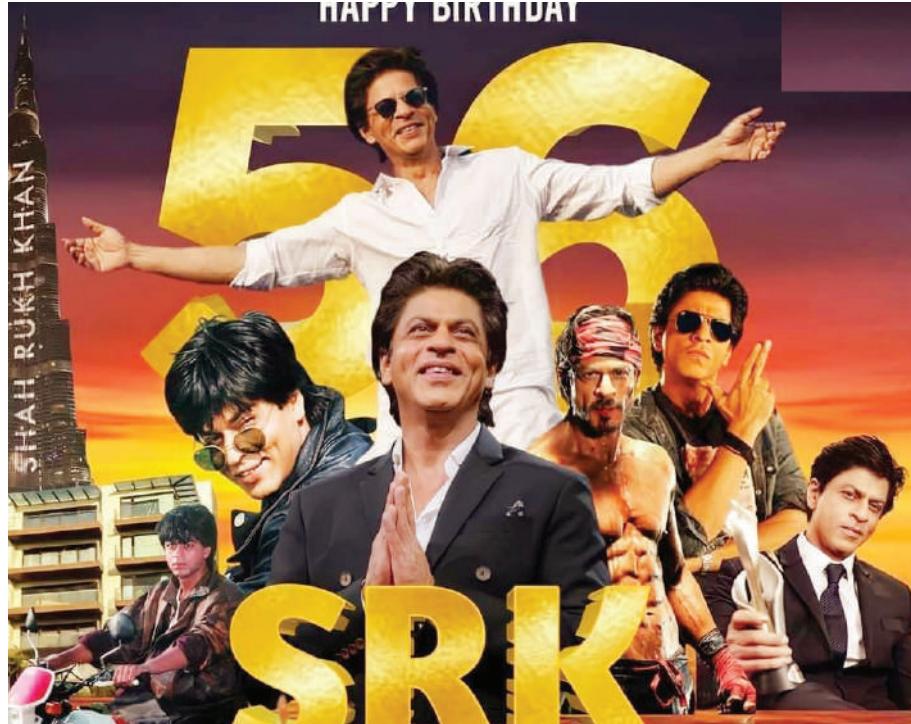
शाहरुख खान एक फिल्म एक्टर होने के साथ साथ फिल्म निर्माता और टेलीविजन व्यक्तित्व भी है। उन्हें सिनेमा का दृ वर्ग जानता है। एसआरके अब तक बॉलीवुड की 102 फिल्मों में काम कर चुके हैं और कई फिल्म रिलीज के लिए कतार है। इसके अलावा बॉलीवुड के कई निर्देशक हैं जो शाहरुख खान की लेकर फिल्म बनाने की योजना बना रहे हैं। सलमान और अमिर भले ही पर्दे पर राज करते हों लेकिन शाहरुख हमारे दिलों पर राज करते हैं। अमिर खान (दंगल, सीक्रेट सुपरस्टार, पीके, धूम 3) और सलमान खान हैं (बजरंगी भाईजान, सुल्तान, टाइगर जिंदा है) जैसी कई फिल्में देकर बॉलीवुड पर कब्जा किया लेकिन एसआरके की केवल एक फिल्म है (चेन्नई एक्सप्रेस) इन सब पर हावी हो गयी। एक फिल्म के बल पर उन्होंने कई रिकॉर्ड को तोड़ दिया। शाहरुख हमेशा हमारे दिलों के राजा करते हुएं क्योंकि उन्होंने दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे, बाजीगर, डर, परदेस, दिल तो पाणल है, कुछ कुछ होता है जैसी सदाबहार फिल्में बॉलीवुड को दी ही है और ये फिल्में शाहरुख की अदाकारी के दम पर ही सफल हो सकी।

शाहरुख खान हमें हमेशा कुछ नया और रोमांचक देने के लिए तपर रहते हैं। हमने पर्दे पर एक्टर को हमेशा कुछ न कुछ नया ट्राई करते हुए देखा है फिर चाहें फिल्म फैन हो, जिसमें उन्होंने डबल रोल किया था या फिर फिल्म जीरो में निभाया गया बोने का किरदार। शाहरुख ने इन किरदारों को पर्दे पर निभाने के लिए कड़ी मेहनत की।

शाहरुख के बल भारतीय लोगों के दिलों पर राज नहीं करते बल्कि विश्वभर में लोग उनसे प्यार करते हैं। दुबई में उनके जन्मदिन पर दीवाली की तरह सेलेब्रेशन किया जाता है। बुर्ज खलिफा पर उनकी तस्वीर लगायी जाती है। दर्शकों के आकर और आय के संर्दह में उन्हें दुनिया के सबसे सफल फिल्मी सितारों में से एक के रूप में वर्णित किया गया है।

खान ने 1980 के दशक के अंत में कई टेलीविजन श्रृंखलाओं में अभिनय के साथ अपने करियर की शुरुआत की। उन्होंने 1992 में दीवाना से बॉलीवुड में डेब्यू किया था। अपने करियर की शुरुआत में, खान को बाजीगर (1993), डर (1993), और अंजाम (1994) फिल्मों में खलनायक की भूमिका निभाने के लिए पहचाना गया।

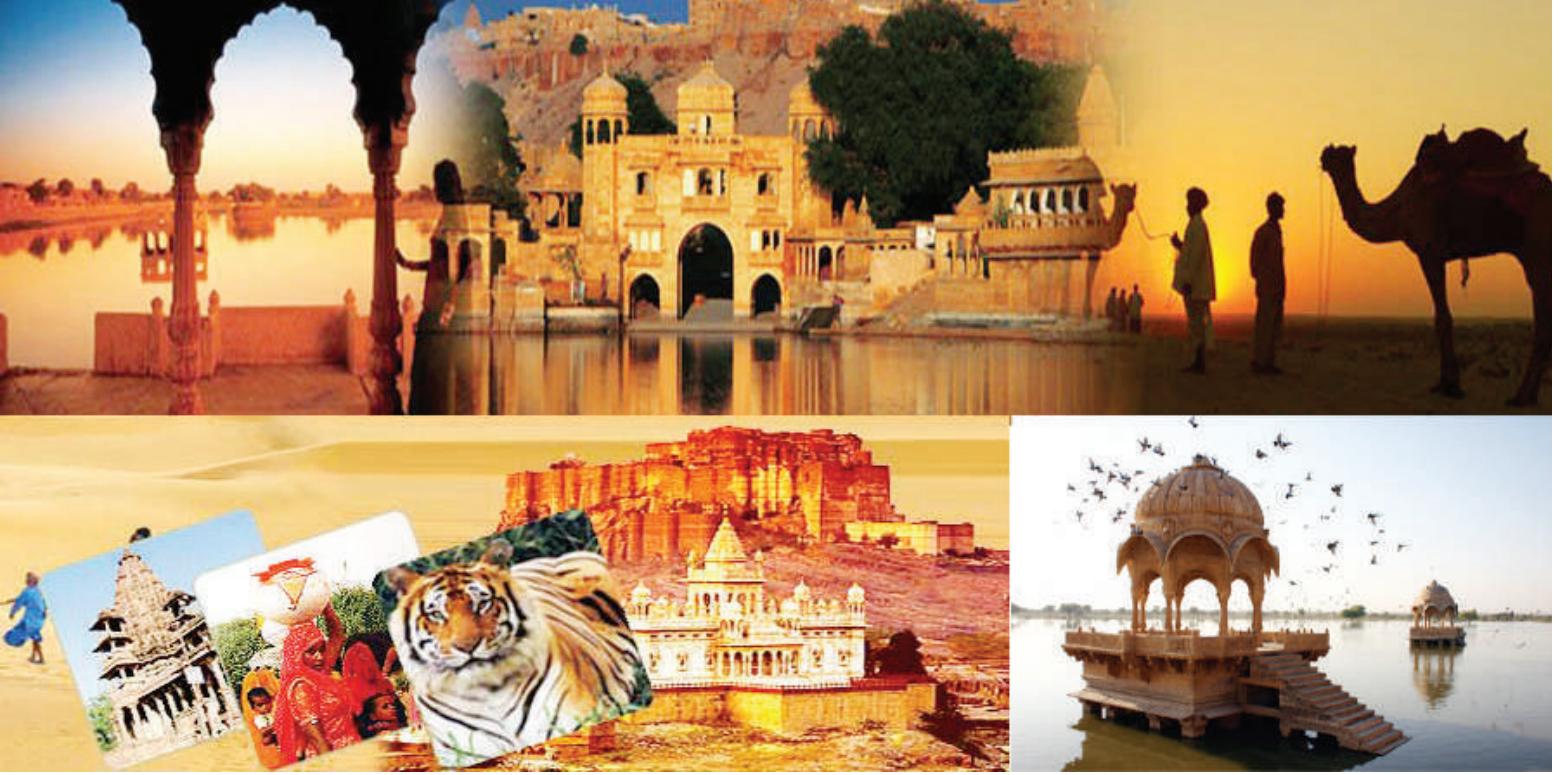
प्रीमियर लीग टीम ट्रिनिबागो नाइट राइडर्स के सह-मालिक हैं। वह लगातार टेलीविजन प्रस्तोता और स्टेज शो कलाकार हैं। उनके कई समर्थन और उद्यमिता उपक्रमों के कारण मीडिया अक्सर उन्हें ब्रांड एसआरके के रूप में लेबल करता है। जब भी कभी समाज से जुड़े कार्यों की बात होती है तो शाहरुख खान बढ़-चढ़कर भागीदार बनने हैं और



दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे (1995), दिल तो पाणल है (1997), कुछ कुछ होता है (1998), मोहब्बतें (2000) और कभी खुशी कभी गम सहित रोमांटिक फिल्मों की एक श्रृंखला में अभिनय करने के बाद वह प्रमुखता से उभरे (2001)। खान ने देवदास (2002) में एक शराबी के चित्रण के लिए आलोचनात्मक प्रशंसा अर्जित की, स्वदेश में एक नासा वैज्ञानिक (2004), चक दे में एक हाँकी कोच! इंडिया (2007) और मार्ड नेम इज खान (2010) में एसरार इस्ट्रिओम वाला एक आदमी। उनकी सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्मों में कॉमेडी चेन्नई एक्सप्रेस (2013), हैप्पी न्यू इंडर (2014), दिलवाले (2015), और क्राइम फिल्म रुह्स (2017) शामिल हैं। उनकी कई फिल्में भारतीय राष्ट्रीय पहचान और प्रवासी समुदायों, या लिंग, नस्लीय, सामाजिक और धार्मिक मतभेदों और शिकायतों के साथ संबंधों को प्रदर्शित करती हैं। शाहरुख खान एक शानदार एक्टर और इंसान होने के साथ-साथ ब्रिलियंट बिजनेस मैन भी है। खान मोशेन पिंकर प्रोडक्शन कंपनी रेड चिलीज एंटरटेनमेंट और उसकी सहायक कंपनियों के सह-अध्यक्ष हैं और इंडियन प्रीमियर लीग क्रिकेट टीम कोलकाता नाइट राइडर्स और कैरेबियन

अपना सामाजिक कर्तव्य भी निभाते हैं। कोरोना काम में उन्होंने भारत सरकार और राज्य सरकार की मदद की। खान के परोपकारी प्रयासों ने स्वास्थ्य देखभाल और आपदा राहत सेवाएं भी शामिल हैं। बच्चों की शिक्षा के समर्थन के लिए 2011 में यूनेस्को के पिरामिड कॉन मार्नी पुरस्कार और 2018 में विश्व अर्थिक मंच के क्रिस्टल अवार्ड से भारत में महिलाओं और बच्चों के अधिकारों के लिए उनके नेतृत्व के लिए सम्मानित किया गया था।

शाहरुख खान बॉलीवुड के बादशाह इस लिए भी माने जाते हैं क्योंकि उन्होंने 14 फिल्मफेयर पुरस्कार, भारत सरकार द्वारा पद्म श्री और फांस सरकार ने उन्हें ऑर्डर डेस आर्ट्स एट डेस लेट्रेस और लीजन ऑफ ऑनर से सम्मानित किया है। एशिया और दुनिया भर में भारतीय डायरेस्पोरा में खान का एक महत्वपूर्ण अनुयायी है। शाहरुख खान नियमित रूप से भारतीय संस्कृति के सबसे प्रभावशाली लोगों की सूची में शामिल होते हैं, और 2008 में, न्यूज़ीलैंड ने उन्हें दुनिया के अपने पचास सबसे शक्तिशाली लोगों में से एक का नाम दिया।



## थार मरुस्थल के बीच बसा राजस्थान का जैसलमेर

**था**

र मरुस्थल के बीच बसा राजस्थान का जैसलमेर शहर अपनी पीले पथर की इमारतों और रेत के धोरों पर ऊँटों की कतारों के लिए विश्व विख्यात है। 'गोल्डन सिटी' के नाम से लोकप्रिय जैसलमेर राजस्थान की सीमा के निकट है और यह शहर एक तरह से भारत के सीमा प्रहरी के रूप में कार्य करता है। जैसलमेर का सबसे प्रमुख आकर्षण है जैसलमेर का किला, जिसे सोनार किला (द गोल्डन फोर्ट) के नाम से भी जाना जाता है। जैसलमेर की किला, संस्कृति, किले, हवेलियाँ और सोने जैसी मटी और यहाँ की रेत के कण-कण में सैंकड़ों वर्षों के इतिहास की गाथाएं पर्यटकों को यहां बार-बार खींच लाती हैं।

राजस्थान पर्यटन विकास निगम जैसलमेर शहर से लगभग 40 किलोमीटर दूर स्थित मनोरम बालू के टीलों का भ्रमण करने के लिए परिवहन की शानदार व्यवस्था करता है। इन मनोरम टीलों की यात्रा किए बिना जैसलमेर की यात्रा अधूरी ही मानी जाएगी। तेज हवाओं के कारण यहां बड़े-बड़े रेत के ढालू बने हुए हैं जो मृगमारीचिका की भाँति दिखाई देते हैं। ये टीले बहुत खतरनाक हो सकते हैं क्योंकि हवाओं के साथ ये रेत के टीले अपना स्थान बदलते रहते हैं और यह भी प्रकृति का एक अनुत्त चमकार-सा दिखाई देता है। इन रेतीले टीलों पर सूर्य निकलने और सूर्यास्त होने का दृश्य आपकी स्मृति पटल पर हमेशा के लिए अंकित हो जाएगा।

पूर्णतः शांत वातावरण में रेत के छोटे-छोटे पहाड़ों के पीछे से आग के लाल-लाल चक्र का दूश्य कभी भी नहीं भूला जा सकता है। सूर्यास्त के बाद एक रहस्यपूर्ण खामोशी-सी छा जाती है। शाम को ये टीले सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन के लिए एक शानदार पृष्ठभूमि का काम देते हैं। एक अस्थायी मंच पर लोक नर्तक कार्यक्रम करते हैं और कुछ ही मिनटों में सुंदर स्वरों और संगीत का जादू सबको वशीभूत कर लेता है। अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकारों को यहां प्रदर्शन के लिए चुना जाता है। रेगिस्तान की आत्मा खुले

दिल से अतिथियों का स्वागत करती है। व्यावसायिक लंगाओं, मंगनियारों के मोहक लोक संगीत और घेर, धप, छाड़ी, मोरिया, घूमड़ और त्रेहटालू जैसे आकर्षक नृत्य लोगों

पूनम स्टेडियम में बड़े पैमाने पर कुछेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन करता है। यहां का वातावरण बहुत ही आकर्षक लगता है और कार्यक्रम देखने के लिए अपार



को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। जब कालेबेलिया नर्तकों के नृत्य की घोषणा होती है तो चारों ओर तालियों की गड़गड़ाहट सुनाई देने लगती है। फुर्तीली युवा लड़कियों द्वारा किया जाने वाला यह नृत्य बिजली की तरह असर करता है और सबको मंत्रमुग्ध कर देता है। कालेबेलिया नृतकों ने जहां कहीं भी नृत्य प्रदर्शन किया है सबने इसकी खूब सराहना की है। मिस्त्र के बेले नृतकों की भाँति ये संपर्ण दिल मोह लेते हैं। इनकी गति, लय और कला कौशल उत्कृष्ट और मोहक होते हैं।

राजस्थान पर्यटन विकास निगम किले के ठीक नीचे स्थानीय

जनसमूह उमड़ पड़ता है। विविध रंगों से सजे ऊँटों की परेड देखने लायक होती है। सबसे ज्यादा मजा राजस्थानी पण्डियों को देखकर आता है जो चमकदार पीले, संतरी, गुलाबी और लाल रंगों की होती हैं और बड़े शानदार ढंग से सिर पर बांधी जाती हैं। काफी तेज नृत्य करने के बावजूद ये नीचे नहीं गिरती हैं। सफेद जैकेट और लंबे घाघरे पहने घेर नृतकों का नृत्य बहुत अच्छा होता है। ऊँटों की दौड़, ऊँटों की कलाबाजियां, ऊँट सवारी प्रतियोगिता, रस्साकशी, पाड़ी बांधने की प्रतियोगिता और सबसे शानदार मूँछ रखने का पुरस्कार ऐसे खेल-तमाशे हैं जो सबको अच्छे लगते हैं।

# ऑर्गेनिक फल और सब्जियां उआकर कमा सकते हैं लाखों

**आ** ज के समय में एग्रीटेक स्टार्टअप बहुत तेजी से विकसित हो रहा है। एक्रापोनिक्स दो शब्दों से मिलकर बना है। पहला एक्राकल्चर जिसमें मछली पालन होता है और दूसरा हाइड्रोपोनिक जिसमें पानी पर खेती होती है। एक्रापोनिक्स में एक ही पारिस्थितिकी तंत्र में मछलियाँ और पौधे एक साथ उगाए जा सकते हैं। इसमें परंपरागत खेती की तुलना में लगभग 90 प्रतिशत तक पानी की बचत होती है। एक्रापोनिक्स में एक फिश टैंक में मछलियाँ पालन किया जाता है और दूसरी तरफ पानी पर हाइड्रोपोनिक खेती का सिस्टम बनाया जाता है। फिश टैंक में मछलियाँ फीड खाने के बाद करीब 70 फीसदी तक मल निकालती हैं जिसमें अमोनिया होता है। इसके बाद फिश टैंक से अमोनिया वाले पानी को हाइड्रोपोनिक खेती के लिए इस्तेमाल किया जाता है। जब ये पानी पौधों की जड़ों तक पहुंचता है तो वहाँ मौजूद बैक्टीरिया इसे नाइट्रोजन में तोड़ देते हैं। यह पौधों के विकास के लिए बहुत ही अहम होता है। इसके बाद पानी को फिर से प्यूरिफाई किया जाता है और दोबारा मछलियों के टैंक में डाला जाता है। इस तरह एक ही पानी बार-बार इस्तेमाल होता रहता है और पानी की बचत होती है। एक्रापोनिक फार्मिंग सेटअप तैयार करने में कितनी लागत आएगी यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप बड़ा सेटअप तैयार करना चाहते हैं या छोटा।



उदाहण के लिए अगर आप एक एकड़ जमीन पर एक्रापोनिक फार्मिंग करते हैं तो आपका करीब 3 करोड़ रुपए तक का खर्चा आ सकता है। इसके साथ ही अगर आप मुनाफा चाहते हैं तो आपको अच्छी क्रालिटी वाली चीज़ें इस्तेमाल करनी होंगी। एक्रापोनिक खेती से हुई

लिए सामान्य की तुलना में दो से तीन गुना कीमत कमा सकते हैं। हालाँकि, आपको पैदावार से पहले ही उसे बेचने की तैयारी कर लेनी होगी वरना आपको भारी नुकसान हो सकता है। इसके लिए आप बड़े-बड़े रिटेल स्टोर, रेस्टोरेंट और फाइव स्टार होटलों से कॉन्ट्रैक्ट कर सकते हैं।

## फैशन में तलाशें करियर की अपार संभावनाएं

**आ** ज के समय में फैशन डिजाइनिंग एक क्रिएटिव और सबसे ज्यादा लोकप्रिय करियर में से एक है। यह करियर विशेष रूप से उन लोगों के लिए है जो फैशन ट्रेंड्स, स्केच डिजाइनों और कुछ ना कुछ नया और क्रिएटिव काम करना पसंद करते हैं। फैशन डिजाइनर का कोर्स एक क्रिएटिव कोर्स होता है। हर कोर्स ही तरह इस कोर्स में भी डिप्लोमा और डिग्री मिलती है। फैशन डिजाइनर के कोर्स में डिप्लोमा और डिग्री दोनों ही की जाती है।

### योग्यता

फैशन डिजाइनिंग कोर्स में एडमिशन लेने के लिए 12वीं में 50त अंक होने चाहिए।

कई कॉलेज फैशन डिजाइनिंग कोर्स में दाखिले के लिए एंट्रेंस टेस्ट आयोजित करते हैं। इस टेस्ट के अंक से आपको सेलेक्ट किया जाएगा। फैशन डिजाइन बनने के लिए आप बी.डिजाइन, बीए (ऑर्नर्स) फैशन डिजाइन, फैशन डिजाइन में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा, फैशन एंड लाइफ स्टाइल बिजनेस मैनेजमेंट में बीए (ऑर्नर्स), फैशन एंड टेक्स्टाइल डिजाइन,



मास्टर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन इन फैशन टेक्नोलॉजी, मास्टर इन फैशन टेक्नोलॉजी, डिप्लोमा इन फैशन टेक्नोलॉजी जैसे कोर्सेज कर सकते हैं।

जरुरी स्किल्स एक फैशन डिजाइनर बनने के लिए आपको कपड़ों के रंगों और आकर का मैल करवाने

की अच्छी समझ होनी चाहिए। आपको पैटर्न-कटिंग और सिलाई जैसे कामों की जानकारी होनी चाहिए। आपको नए फैशन ट्रेंड्स की जानकारी होनी चाहिए। आपको सिलाई-कटाई और ज्वेलरी डिजाइनिंग का भी ज्ञान होना चाहिए।

# वेडिंग सीजन में इस तरह कैरी करें टाई-डाई ट्रेंड

**दा**

ई-टाई प्रिंट इन दिनों काफी ट्रेंड में है। आमतौर पर, इस ट्रेंड को अब तक केवल वेस्टर्न विश्व के रूप में ही कैरी किया जाता रहा है। बालीवुड बालाएं भी इसे टी-शर्ट से लेकर पैंट्स और स्वेटर्स आदि में कैरी करती आ रही हैं। हालांकि, यह जरूरी नहीं है कि हर बार टाई-डाई प्रिंट को केजुअल्स और वेस्टर्न विश्व में ही पहना जाए। यह फैशन एथनिक विश्व में भी इतना ही स्मार्ट लगता है। इतना ही



नहीं, अगर आप चाहें तो टाई-डाई प्रिंट को एथनिक विश्व में स्टाइल करके वेडिंग फंक्शन में पहन सकती हैं। तो चलिए आज आपको वेडिंग फंक्शन में टाई-डाई प्रिंट को पहनने के कुछ अमेजिंग आइडियाज आपके साथ शेयर कर रहे हैं-

## पहनें लहंगा

वेडिंग सीजन में हर उम्र की महिला लहंगा पहनना काफी पसंद करती है। ऐसे में अगर आप चाहें तो टाई-डाई लहंगा पहनकर सबको हैरान कर सकती हैं। इसमें आप लहंगे और चुनरी में टाई-डाई लहंगे को चुनें, जबकि

ब्लाउज को आप हैवी सीक्रेंस वर्क या फिर एंब्रायडिंग और मिरर वर्क में सलेक्ट कर सकती हैं। इस तरह हैवी ब्लाउज आपके पूरे लुक को वेडिंग रेडी बनाएगा। इस लुक में आप मेकअप को थोड़ा सटल ही रखें।

## साड़ी में लगेंगी स्टनिंग

लहंग के अलावा साड़ी भी वेडिंग सीजन में काफी अच्छी लगती है। ऐसे में आप टाई डाई साड़ी के ऑप्शन पर विचार करें। आप टाई डाई साड़ी में व्हाइट एंड ब्लैक कलर या फिर कॉम्प्लीमेंटरी कलर्स को सलेक्ट करें। आप साड़ी में स्लिट लुक भी स्टाइल कर सकती हैं। यह

आपके लुक को और भी ज्यादा स्टनिंग बनाएगा। टाई-डाई साड़ी में सीक्रेंस लुक बेहद अच्छा लगता है। वहीं, इसके साथ स्टेटमेंट इयररिंग्स आपके लुक को कॉम्प्लीमेंट करेंगे।

## पहनें वनपीस आउटफिट

अगर आप वेडिंग फंक्शन या फिर सगाई सेरेमनी में टाई-डाई आउटफिट पहनना चाहती हैं तो ऐसे में वनपीस पहनना एक अच्छा आइडिया हो सकता है। आप टाई-डाई गाउन के साथ मिनिमल एक्सेसरीज और लाइट मेकअप के जरिए अपने लुक को खास बना सकती हैं। जब आप वन पीस पहन रही हैं तो कोशिश करें कि आप खुद को ओवर एक्सेसराइज ना करें।

## टाई डाई दुपट्टा

टाई डाई को अगर आप पहली बार पहन रही हैं और उसे बतौर आउटफिट कैरी करने में कंफर्टेबल महसूस नहीं करती हैं तो सबसे अच्छा तरीका है कि आप टाई डाई दुपट्टा पहनें। आप लहंगे से लेकर शरारा सूट के साथ टाई डाई दुपट्टा पहनकर अपने लुक को खास बना सकती हैं। आप इसे वन शोल्डर या फिर फैंट पलू की तरह कैरी करें, ताकि आपके दुपट्टे की खूबसूरती निखरकर सामने आए।

# झुर्रियों वाली स्किन को रेटिनॉल की मदद से एक बार फिर से बनाएं जवां-जवां

**ज**

ब उम्र बढ़ती है तो उसका असर स्किन पर साफतौर पर नजर आता है। उम्र बढ़ने के बाद स्किन का कसाव कम होने लगता है, जिसके कारण स्किन पर फाइन लाइन्स व रिंकल्स आदि नजर आने लगते हैं। हालांकि, महिलाएं जल्द ही इस वजह से परेशान हो जाती हैं और वह तरह-तरह के प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल करना शुरू कर देती हैं, ताकि उनकी स्किन लंबे समय तक यंग बनी रहे। अगर आपकी उम्र बढ़ने लगी है तो यकीनन आपको भी यही चिंता होती होगी। लेकिन अब आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है। अगर आप अपनी स्किन को यंगर बनाना चाहती हैं तो ऐसे में आप रेटिनॉल युक्त क्रीम को अपने स्किन केयर रूटीन में शामिल कर सकती हैं। तो चलिए आज हम आपको बता रहे हैं कि रेटिनॉल क्या है और आप इसे किस तरह इस्तेमाल कर सकती हैं-

## जानिए क्या है रेटिनॉल

रेटिनॉल विटामिन ए का ही एक प्रकार है, जो कई तरह के फूड आइटम्स जैसे शकरकंद और गाजर में पाया जाता है। आजकल ऐसी कई क्रीम्स हैं, जिनमें रेटिनॉल का इस्तेमाल किया जाता है। यह ना केवल



फाइन लाइन्स और रिंकल्स की अपीयरेंस को कम करता है, बल्कि मुँहासों व अन्य कई स्किन प्रॉब्लम्स को भी दूर करता है। साथ ही साथ इसे इस्तेमाल करने से आपकी स्किन नेचुरली ग्लोइंग बनाती है। अगर आप इसे नियमित रूप से इस्तेमाल करती हैं तो इससे कोलेजन उत्पादन बेहतर होता है, जिससे स्किन पर सकारात्मक असर देखने को मिलता है।

ऐसे करें इसे इस्तेमाल-यूं तो रेटिनॉल का इस्तेमाल किसी भी समय किया जा सकता है, लेकिन इसे रात के समय सोने से पहले अप्लाई करना अधिक बेहतर माना जाता है। दरअसल, रेटिनॉल युक्त क्रीम स्किन

पर अप्लाई करके धूप में बाहर निकलने से आपको स्किन में सेंसेटिविटी हो सकती हैं।

इसे अप्लाई करने से पहले फेस को वॉश करें और करीबन 10-15 मिनट के बाद रेटिनॉल क्रीम को अप्लाई करें। अगर आपको स्किन में रुखापन हो तो आप रेटिनॉल युक्त क्रीम लगाने के करीबन 10-15 मिनट बाद आप मॉइश्चराइजर अप्लाई करें।

इन बातों का रखें ध्यान - अगर आप पहली बार रेटिनॉल का इस्तेमाल कर रही हैं तो कोशिश करें कि आप इसे खुद से ना लगाएं। हमेसा पहले डर्माटालॉजिस्ट से एक बार कंसल्ट करें। वहीं, अगर आपकी स्किन सेंसेटिव है, तो ऐसे में आप बेहद कम मात्रा में लगाएं। इसके अलावा, इससे पैच टेस्ट करें, ताकि आपको यह पता चले कि रेटिनॉल युक्त क्रीम आपकी स्किन पर एप्लाई करती है। जब भी आप इसे स्किन पर अप्लाई करें तो कोशिश करें कि आप इसे रात में ही लगाएं। दिन के समय इसे लगाकर बाहर निकलने से आपको सेंसेटिविटी की समस्या हो सकती है।

# दाँत दर्द से हैं परेशान तो आजमाएँ ये घरेलू उपाय

**दांत**

त का दर्द किसी को भी परेशान कर सकता है। कई बार ठीक तरह से टूथब्रश ना करने से, दाँतों में कैविटी, कैल्शियम की कमी, बैकटीरियल इफेक्शन या फिर दाँतों की जड़ों के कमज़ोर होने से दाँतों में दर्द होता है। कई बार दाँत का दर्द इतना ज्यादा परेशान कर देता है कि कुछ खाने-पीने में भी परेशानी होती है। बहुत से लोग दांत के दर्द से राहत पाने के लिए दवाओं का सेवन करते हैं। लेकिन आप कुछ घरेलू उपायों से भी इस समस्या से छुटकारा पा सकते हैं। आज के इस लेख में हम आपको दांत के दर्द से छुटकारा पाने के घरेलू उपाय बताने जा रहे हैं -

अगर आपके दांत और मसूड़ों में दर्द हो रहा है तो नमक का पानी आपके लिए फायदेमंद साबित होगा। दांत के दर्द से छुटकारा पाने के लिए दिन में तीन से चार बार गुनाहने नमक के पानी से कुल्ला करें। इससे सभी बैकटीरिया खत्म होंगे और आपको दर्द से राहत मिलेगी।

लौंग भी दांत दर्द से निजात पाने का एक कारार उपाय है। लौंग में एंटी-इंफ्लेमेटरी, एंटीबैकटीरियल, एंटीऑक्सिडेंट और एनेस्थेटिक गुण होते हैं जो दाँतों के दर्द को कम करने और संक्रमण से निपटने में मदद करते हैं। आप लौंग को दाँतों के बीच ढबाकर रखें या फिर लौंग के पाउडर या तेल का इस्तेमाल भी कर सकते हैं।

जिन लोगों को अक्सर दांत में दर्द की समस्या होती है, उन्हें

अत्यधिक गर्म और ठंडे खाद्य पदार्थों को खाने से बचें। इस तरह के आहार आपकी परेशानी को बढ़ा सकते हैं। अगर आपको दाँतों में तेज दर्द का अहसास हो रहा है तो आप



काली मिर्च पाउडर की मदद ले सकते हैं। इसके लिए आप एक चुटकी काली मिर्च लेकर उसमें थोड़ा सा नमक मिलाएं। अब इसमें थोड़ा सा पानी मिलाकर पेस्ट बनाएं और इसे प्रभावित हिस्से पर लगाएं। ऐसा करने से आपका दर्द कम हो जाएगा। दाँतों के लिए याज काफी अच्छी मानी जाती है। यह आपको दांत दर्द से भी आराम दिलाता है।

इसके लिए आप याज को छीलकर काट लें। अब इसे दांत में रखकर हल्का-हल्का चबाएं। अगर दर्द बहुत अधिक है और आप इसे चबा नहीं सकते तो इसका रस निकालकर

भी दाँतों पर लगा सकते हैं। बर्फ का इस्तेमाल भी दांत के दर्द से आराम पाने का एक आसान उपाय है। इसके लिए बर्फ का टुकड़ा लेकर दांत दर्द वाले हिस्से पर रखें। इससे आपको दांत के दर्द से जल्द आराम मिलेगा। दांत का दर्द दूर करने के लिए सरसों के तेल का इस्तेमाल करना अच्छा माना गया है। इसके लिए आप सरसों का तेल लेकर उसमें एक चुटकी नमक डालें। अब इसकी मदद से दाँतों व मसूड़ों की हल्के हाथों से मालिश करें। ऐसा करने से आपको दांत के दर्द से जल्द राहत मिलेगी। नीम दाँतों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। नीम में एंटी बैकटीरियल गुण होते हैं जो मुँह के बैकटीरिया को खत्म करके दाँत के दर्द से निजात दिलाते हैं। अगर आपको भी दाँतों में दर्द हो रहा है तो आप नीम की पत्तियां चबाएं या फिर नीम के तेल को दर्द वाले स्थान पर लगाएं।

## कान का दर्द मिनटों में हो जाएगा छूटन्तर, बस आजमाएं यह आसान उपाय

**कान**

न में दर्द बहुत तकलीफदेह होता है। कान में दर्द कई कारणों से हो सकता है। किसी इफेक्शन, बदलते मौसम या कान में मैल जमने की वजह से कान में दर्द हो सकता है। कभी-कभी कान में पानी चले जाने के कारण भी कान में दर्द होने लगता है। कान में दर्द होने पर अक्सर लोग दवाइयों और इयर ड्रॉप्स का इस्तेमाल करते हैं। हालांकि, कान दर्द से छुटकारा पाने के लिए आप घरेलू नुस्खों का इस्तेमाल भी कर सकते हैं। लेकिन इन घरेलू नुस्खों का इस्तेमाल तभी करें अगर आपके कान दर्द का स्तर सामान्य है। अगर आपके कान में बहुत ज्यादा दर्द है तो डॉक्टर की सलाह अवश्य लें। आज हम आपको कान दर्द से निजात पाने के कुछ घरेलू नुस्खे बताने जा रहे हैं-

टी ट्री ऑर्थल

यदि संक्रमण या किसी अन्य कारण से कान में दर्द है तो आप टी ट्री ऑर्थल का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके लिए चार से पांच बूंद तिल के तेल में दो से चार बूंद टी ट्री ऑर्थल की मिलाकर गर्म कर लें। जब तेल ठंडा हो जाए तो दो-तीन बूंद कान में डालें।

ऑर्थल ऑर्थल

यदि किसी वजह से कान में दर्द हो रहा है तो आप ऑर्थल

का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके लिए ओर्थल ऑर्थल को हल्का गर्म कर लें। जब तेल ठंडा हो जाए तो इसकी दो से तीन बूंदें कान में डालें।



### अदरक

कान के दर्द से छुटकारा पाने के लिए आप अदरक का इस्तेमाल भी कर सकते हैं। अदरक में एंटी-इंफ्लामेटरी गुण पाए जाते हैं जो कान के दर्द को कम करने में मदद करते हैं। इसके लिए सरसों के तेल में थोड़ा सा अदरक कहूँकस करके डालें और गर्म कर लें। इसके बाद तेल को छान लें। जब तेल थोड़ा ठंडा हो जाए तो इसकी दो से तीन बूंदें कान में डालें।

### कान की सिंकार्ड

कान के दर्द से छुटकारा पाने के लिए आप कान की सिंकार्ड भी कर सकते हैं। इसके लिए आइस पैक या हॉट पैड से कान की सिंकार्ड करें। अगर हीट पैड ना हो तो एक तैलिए को गर्म पानी में डालकर निचोड़ लें। अभी से अपने कान के आसपास की सिंकार्ड करें।

### सरसों का तेल

कान दर्द की समस्या में सरसों का तेल बहुत फायदेमंद माना जाता है। अगर आप भी कान के दर्द से परेशान हैं तो सरसों के तेल का यह नुस्खा जरूर ट्राई करें। इसके लिए सरसों के तेल को हल्का गर्म कर लें और एक दो बूंद कान में डालकर लेट जाएं। ऐसा करने से आपको कान के दर्द से जल्द आराम मिलेगा।

### याज

कई बार संक्रमण के कारण भी कान में दर्द हो सकता है। यदि कान में अधिक दर्द हो रहा है तो आप याज का इस्तेमाल भी कर सकते हैं। इसके लिए याज का रस निकालकर एक या दो बूंद कान में डाल लें।

# चेहरे पर जमा चर्बी कुछ ही दिनों में हो जाएगी छूमंतर

**क** हते हैं कि चेहरा हमारी हम किसी से मिलते हैं तो सबसे पहले उसका चेहरा ही देखते हैं। यही वजह है कि लोग अपने चेहरे की ज्यादा देखभाल करते हैं। लेकिन कई बार चेहरे पर जमा फैट हमारे चेहरे की सुदरता को खराब कर देता है। खासतौर पर मोटे गाल, डबल चिन और आई बैग्स चेहरे की खूबसूरती को कम कर देते हैं। वैसे तो शरीर के किसी एक हिस्से से चर्बी घटाना कठिन होता है, खासतौर पर चेहरे पर जमा चर्बी। लेकिन आप अपनी लाइफ स्टाइल में कुछ बदलाव करके चेहरे पर जमा जिद्दी फैट को कम कर सकते हैं। आज के इस लेख में हम आपको फैशियल फैट दूर करने की कुछ आसान टिप्पणी देने जा रहे हैं—फैशियल एक्सरसाइज करें।

## खूब पानी पिएँ

पानी पीना हमारे शरीर के लिए कितना फायदेमंद है यह तो आप जानते ही होंगे। पानी पीने से शरीर में जमा हानिकारक पदार्थ और अतिरिक्त वसा बाहर निकलते



हैं। अगर आप चेहरे पर जमा चर्बी घटाना चाहते हैं तो खूब पानी पिएँ। इससे आपको मेटाबॉलिज्म ब्रूस्ट होगा और फैट कम करने में मदद मिलेगी।

## नमक का सेवन करें

अगर आप फैशियल फैट को घटाना चाहते हैं तो नमक का सेवन करें। दरअसल नमक में मौजूद सोडियम के कारण शरीर में पानी ठहरने लगता है जिसे वॉटर रिटेनेशन कहते हैं। इसके कारण शरीर को डिटॉक्स करने में परेशानी होती है और हमारे शरीर में फैट जमा होने लगता है। इसके साथ ही हो सके तो सूप और

सलाद में ऊपर से कच्चा नमक डालकर ना खाएं। फैशियल करवाएं

वैसे तो महिलाएं चेहरे की खूबसूरती बढ़ाने के लिए फैशियल करवाती हैं। लेकिन इससे चेहरे पर जमा चर्बी को दूर करने में भी मदद मिलती है। दरअसल फैशियल के दौरान मसाज से चेहरे में खून का संचार बढ़ता है और फैट पर जमा फैट बन जाता है।

## रिफाइंड कार्बस का कम सेवन करें

अगर आप शरीर में जमा चर्बी को घटाना चाहती हैं तो रिफाइंड कार्बस का सेवन कम करें। रिफाइंड कार्बस जैसे ब्रेड, कुकीज, पास्ता, पेस्ट्री और मिठाइयां खाने से शरीर और चेहरे पर फैट जमने लगता है।

## भरपूर नींद लें

फैशियल फैट को कम करने के लिए बहुत जरूरी है कि आप भरपूर नींद लें। नींद पूरी ना होने के कारण शरीर में स्ट्रेस लेवल बढ़ता है जिससे हमारा ब्लड सर्क्युलेशन प्रभावित होता है। नींद पूरी न होने के कारण शरीर में फैट जमा होने लगता है। इसलिए रात में कम से कम 6 से 8 घंटे की नींद लें।

# शीट मास्क को इस्तेमाल करने का सही तरीका

**ज** बी भी स्किन को पैम्पर करने की बात होती है तो अक्सर महिलाएं केवल सीटीएम रूटीन पर ही भरोसा करती हैं। इन्हीं नहीं, स्किन को अतिरिक्त पोषण देने के लिए फैस मास्क की मदद भी लेती हैं। हालांकि, इन दिनों शीट मास्क स्किन के यरूटीन का एक अहम हिस्सा बनते जा रहे हैं। आम महिलाओं से लेकर कई सेलेब्स भी अपनी स्किन का ख्याल रखने के लिए शीट मास्क पर भरोसा कर रहे हैं। शीट मास्क आपकी स्किन की कई प्रॉब्लम्स को बेहद आसानी से दूर करते हैं। यह आपकी स्किन को ग्लोइंग बनाने से लेकर उसे हाइड्रेट करने में मदद करते हैं। इन्हीं नहीं, मार्केट में कई अलग-अलग तरह के शीट मास्क मिलते हैं, जिन्हें आप अपने स्किन कंसर्न के अनुसार चुन सकते हैं। चूंकि यह इस्तेमाल करने में आसान है, इसलिए हर किसी की पहली पसंद बनते जा रहे हैं। हालांकि, शीट मास्क से मैक्सिमम बेनिफिट प्रॉप करने के लिए जरूरी है कि आप इसे सही तरह से यूज करें। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको शीट मास्क को इस्तेमाल करते समय ध्यान रखी जाने वाली कुछ जरूरी बातों के बारे में बता रहे हैं, जिससे आपको यकीनन बेहद लाभ होगा-



पहले करें स्किन की क्लीनिंग

कुछ महिलाएं शीट मास्क पैकेट को खोलकर सीधे ही अपनी स्किन पर अप्लाई कर लेती हैं। जबकि आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। गंदी स्किन पर शीट मास्क लगाने से आपको कोई लाभ नहीं होने वाला है। इसलिए सबसे पहले फैस वॉश की मदद से अपनी स्किन को क्लीन करें। अगर संभव हो तो शीट मास्क को अप्लाई करने से पहले आप स्किन को हल्का सा

स्क्रब भी कर लें, क्योंकि इससे मास्क का सीरम व अन्य बेनिफिट्स आपको अधिक मात्रा में मिलते हैं।

## लगाएं सही तरह से

फैस को एक्सफोलिएट व क्लीन करने के बाद बारी आती है शीट मास्क लगाने की। इसे सही तरह से लगाना बेहद जरूरी है। इसके लिए आप शीट मास्क को अपने फैस पर लगाएं और फिर हाथों से हल्के से दबाएं ताकि यह आपकी स्किन को अच्छी तरह टच करे। करीबन 15-20 मिनट बाद तक इसे ऐसे ही छोड़ दें और फिर शीट मास्क हटाकर बचे हुए सीरम से फैस की मसाज करें। कुछ महिलाएं केवल चेहरे पर ही शीट मास्क लगाती हैं, जबकि आपको इसे गर्दन पर भी अवश्य लगाना चाहिए।

# शादी करने वाली हैं कंगना?

**बॉ**

लीवुड एक्ट्रेस कंगना रनौत अपने बेबाक बयानों के लिए हमेशा सुखियों में बनी रहती हैं। बेबाकी से बयान देने के अलावा कंगना रनौत सिनेमा की दुनिया की शानदार और बेहद टैलेंटेड एक्ट्रेस में से भी एक है। कंगना को हाल ही में पद्मश्री अवार्ड से भी नवाजा गया है। सामाजिक मुद्दों पर सोशल मीडिया पर अपनी राय देने वाली कंगना रनौत ने इस बार अपनी निजी जिंदगी को लेकर कुछ खुलासे किए हैं। इन खुलासों के कारण सोशल मीडिया पर कंगना को लेकर एक बार फिर चर्चा हो रही है। दरअसल कंगना रनौत ने खुलासा किया है कि वह प्यार में हैं और अनें वाले पांच सालों में वह अपने आपको एक मां और पत्नी के रूप में देखती हैं। कंगना ने टाइम्स नाउ को दिए एक इंटरव्यू में कहा, - मैं निश्चित रूप से शादी करना चाहती हूं और बच्चे पैदा करना चाहती हूं। मैं खुद को पांच साल से एक मां के रूप में और एक पत्नी के रूप में देखती हूं, और निश्चित रूप से एक ऐसे व्यक्ति के रूप में भी, जो नए भारत के दृष्टिकोण में सक्रिय रूप से भाग ले

रहा है। कंगना रनौत से जब समिति के दौरान एंकर ने सवाल किया कि वह अपने आपको आने वाले पांच सालों में कहा देखती हैं। जिस पर कंगना रनौत ने जवाब दिया कि वह अपने मां और पत्नी के रूप में देखती है। उन्होंने कहा कि मैं भी शादी करना चाहती हूं और हर इंसान की तरह अपना घर बसाकर बच्चे भी करना चाहती हूं। इसके अलावा मैं अपने आपको बदलते भारत के नये स्वरूप में भाग लेता देखती हूं। कंगना रनौत के इस खुलासे के बाद एंकर ने कंगना से पूछा कि वह आखिर किससे शादी कर रही हैं। उन्होंने इस सवाल पर मुस्कुराते हुए कहा कि जल्द ही आपको पता सच जाएगा कि वह इंसान कौन है जिससे वह प्यार करती है और शादी करेंगी। उन्होंने समिट के दौरान नाम नहीं बताया कि वह किसकी पती बनना चाहती हैं। काम के मोर्चे पर, वह अगली बार थाकड़ में दिखाई देंगी, जिसमें अर्जुन रामपाल और दिव्या दत्ता भी मुख्य भूमिकाओं में होंगे। इसके अलावा, वह तेजस का भी हिस्सा हैं, जहां वह वायु सेना के पायलट की भूमिका निभाती नजर आएंगी।

## तो लौटा दूँगी पद्मश्री

कंगना रनौत और विवाद का रिश्ता बहुत गहरा है। ऐसा लगता है दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। कंगना ने हाल ही में आजादी पर एक विवादित बयान देकर सबको चौका दिया था। उनके बयान के बाद पॉलिटिकल पार्टीज के साथ-साथ सोशल मीडिया पर कई लोग भी उनके पीछे पड़ गए हैं। उन्होंने इंस्टाग्राम पर स्टोरी लगा अपने बयान पर सफाई दी है। कंगना रनौत ने टाइम नाउ नवभारत को दिए इंटरव्यू में कहा था कि हमें भीख में आजादी मिली है। जिसके बाद से काफी विवाद हुआ है। उनके बयान पर हर तरफ आलोचना हो रही है। के जगह तो उन पर एफआईआर भी कर दिया गया है। कई पॉलिटिकल पार्टीज का कहना है कि उनपर देशद्रोह का मुकदमा चलाया जाए। लगातार हो रहे विवाद के बीच कंगना ने लंबी इंस्टाग्राम स्टोरी लगा कर अपने बयान को सही बताया है। उन्होंने लिखा है कि वह अपना पद्मश्री सम्मान वापस कर देंगी अगर कोई उन्हें ये बताएगा कि 1947 में क्या हुआ था। उन्होंने एक कटिंग की फोटो लगा कर लिखा है कि सब कुछ बहुत स्पष्ट रूप से मेंशन है उसी इंटरव्यू में 1857 में पहली लड़ाई हुई थी स्वतंत्रता के लिए कई लोगों ने बलिदान दिया था जैसे सुभाष चंद्र बोस, रानी लक्ष्मी बाई और वीर सावरकर जी। 1857 मुझे पता है कौन सी लड़ाई 1947 में लड़ी गई थी, मैं इससे अवेयर नहीं हूं। कंगना ने आगे लिखा है कि मैंने रानी लक्ष्मीबाई पर बनी फिल्म में काम किया है। 1857 की क्रांति पर काफी रिसर्च किया है। राष्ट्रवाद के साथ दक्षिणपंथ का भी उभार हुआ लेकिन अचानक से ये गायब कैसे हो गया? और गांधी ने भगत सिंह को क्यों मरने दिया। आखिर क्यों नेता बोस की हत्या हुई और उन्हें गांधी जी सपोर्ट क्यों नहीं मिला। क्यों बंटवारे की रेखा अंग्रेज द्वारा खींची गई आजादी की खुशियां मनाने के बजाय भारतीय एक दूसरे को मार रहे थे। मुझे इन सभी सवालों के जवाब चाहिए जिसके लिए मुझे मदद की जरूरत है।





# चिकित्सा के क्षेत्र में युवाओं के रोल मॉडल डॉ. जे.एस. सिकरवार

● (गूंज न्यूज नेटवर्क)

**क** हते हैं हर सक्सेस के पीछे संघर्ष की एक लंबी कहानी होती है। कठिनतम परीक्षाओं पे काबिज होती है, तो पूरे समाज के लिए एक आदर्श बन जाते हैं। कामयाबी उन्हीं के कदम चूपती है जो कर्मठ और परिश्रमी होते हैं, ऐसे ही परिश्रमी और जुझारू कृषक परिवार में जन्में विराट व्यक्तित्व के धनी जे.एच के पूर्व अधीक्षक और जानेमाने रेडियोलाजिस्ट डॉ. जे.एस. सिकरवार जिन्होंने अपनी जिंदगी में कई उतार-चढ़ाव देखे और कड़ी मेहनत व सच्ची लगन के साथ उन्होंने सफलता हासिल कर कामयाबी के शिखर को छुआ है।

साधारण परिवार से होने के बावजूद असाधारण सफलता हासिल कर डॉ. सिकरवार एक ऐसी शिक्षित है, जिनकी मेहनत पथर की लकीर बन कर उभरी। रेडियोलॉजी डे के अवसर पर डॉ. जे.एच. सिकरवार के जीवन से जुड़े कुछ पहलूओं पर नज़र डालते हैं।

श्री सिकरवार एक किसान परिवार से हैं मुरैना के छोटे से गांव तिलवाली के रहने वाले हैं। उनके पिता जी का नाम श्री उमेद सिंह सिकरवार एवं माता जी का नाम श्रीमती भगवती सिंह हैं। उनके पिता जी सेना में थे। उनकी पत्नी श्रीमती संथा सिकरवार एक ग्रहणी होने के साथ समाजसेवा के क्षेत्र में प्रत्यनशील होकर



कार्य कर रही हैं। डॉ. सिकरवार को एक पुत्र एवं एक पुत्री हैं। उनके पुत्र कौसुभ सिंह ने एम.बी.ए. की डिग्री हासिल की है। जबकि उनकी पुत्री कृति सिंह गूंज मीडिया ग्रुप की डायरेक्टर हैं।

बात अगर उनके प्रारंभ जीवन की करें तो उन्होंने रुड़की उत्तराखण्ड में स्कूल एवं होस्पिटल में प्रवेश लिया जो स्कूल 1965 केन्द्रीय विद्यालय में परिवर्तित हो गया। 1973 में सीबीएसई बोर्ड से हायर सेकेण्डरी परीक्षा उत्तीर्ण कर 1974 शासकीय विज्ञान महाविद्यालय से बी.एस.सी.पार्ट 1 उत्तीर्ण कर प्रथम प्रयास में पीएमटी से चिकित्सा महाविद्यालय ग्वालियर में प्रवेश 1974 में प्रवेश लिया। श्री सिकरवार ने 1982 चिकित्साधिकारी के पद पर मध्य प्रदेश स्वास्थ्य सेवाओं में कार्य संभाला।



श्री सिकवार ने सन् 2000 में सहप्रध्यापक एवं 2015 में प्राध्यापक पदोन्नत हुए। इसी समय मध्यप्रदेश सरकार ने जयराग्य चिकित्सालय का संयुक्त संचालक एवं अधीक्षक के पद पर पदस्थ रहे। करीब चार वर्ष ( अधीक्षकों के सबसे लंबे कार्यकालों में से एक ) कार्य किया उनके कार्यकाल को आज भी लोग याद करते हैं। श्री सिकवार को लोकप्रिय एवं सफल अधीक्षकों में जाना जाता है। डॉ. जे. एस. सिकवार ने कोरोना काल में पूरी मेहनत से हर परिस्थिति का सामना किया और पूरे समर्पण के साथ मरीजों की सेवा भाव में लगे रहे। गूंज पत्रिका अपनी कलम के माध्य से उन्हें सलाम करती है। आज की युवा पीढ़ि जो चिकित्सा के क्षेत्र में अगे बढ़ना चाहते हैं वह डॉ. सिकवार को अपना रोल मॉडल मानते हैं और समय-समय पर उनसे टिप्प लेते रहते हैं। और डॉ. सिकवार भी चिकित्सा के क्षेत्र में नई पीढ़ि को मार्गदर्शन करते हैं कि किसी तरह से चिकित्सा के क्षेत्र में युवा आगे बढ़े और समर्पण भाव से मरीजों की सेवा कर सकें। ऐसी मेहनती और परिश्रमी व्यक्तित्व के धनी डॉ. जे. एस. सिकवार को गूंज पत्रिका अपनी कलम के माध्यम से सलाम करती है और गूंज ऑफ द मंथ शीर्षक में उनके जीवन के बारे में अपने पाठकों अवगत करा रही है। तो जानते हैं उनके जीवन से जुड़े कुछ पहलुओं एक नजर।

## आप अपने बारे में बताये?

मैं जिला मुरैना के छोटे से गांव तिलवाली से 1964 में 8 साल की उम्र में पढ़ने की उम्र में निकला, बस या रेल के लिये कमसे कम 10 मील अपने सामान के साथ चलना पड़ता था यह कमोबेश 1980-90 तक रही। पिताजी सेना में थे अतः सेना के बच्चों हेतु रुड़की उत्तराखण्ड में स्कूल एवं होस्टल में प्रवेश लिया



जो स्कूल 1965 केन्द्रीय विद्यालय में परिवर्तित हो गया। 1973 में सीबीएसई बोर्ड से हायर सेकेण्ड्री परीक्षा उत्तीर्ण कर 1974 शासकीय विज्ञान महाविद्यालय से बी. एस. सी. पार्ट 1 उत्तीर्ण कर प्रथम प्रयास में पीएमटी से चिकित्सा महाविद्यालय ग्वालियर में प्रवेश 1974 में प्रवेश लिया। ग्रामीण परिवेश होने से पिताजी की आज्ञानुसार मेरी 20 वर्ष की एवं धर्मपती की 15 वर्ष की आयु में बालविवाह

हो गया जिससे निश्चित ही एमबीबीएसअध्ययन प्रभावित हुआ। हाथरे बेटे का जन्म एमबीबीएस उत्तीर्ण करने के पूर्व ही हो गया था। 1982 चिकित्साधिकारी के पद पर मध्य प्रदेश स्वास्थ्य सेवाओं में कार्य संभाला। ग्रामीण एवं आदिवासी क्षेत्र में 6 वर्ष कार्य किया, आदिवासी क्षेत्र करहल जिला झोपुर के 3 वर्ष की अवधि को पूरी शासकीय सेवाकाल में सर्वोत्तम मानता हूं। कुल मिलाकर गृहस्थ जीवन सर्वोत्तम एवं परम सुखी रहा।

रेडियोलॉजिस्ट के तौर पर अपनी जॉर्नी के बारे में कुछ शब्द कहें?

रेडियोलॉजिस्ट संयोगवश नियति विधान से बना 1988 में चिकित्साधिकारियों स्थातकोत्तर को योग्यतानुसार विषय चुनने का अवसर दिया जाता है। रेडियोलोजी विषय मैंने चाहा ही नहीं था पर मुझे अलॉट हो गया। उसी समय धर्मयुग पत्रिका में डॉ स्वर्गीय पुरुष राष्ट्रपति श्री राधाकृष्णन जी का लेख पढ़ा कि मैं दार्शनिक कैसे बना - वह लिखते हैं कि इण्टर मीडिएट के पश्चात मैं बड़े पसोपेश में था क्या विषय चुने, घर पर एक अधिति आये जिन्होंने रास्ते के दौरान दर्शनशास्त्र की किताब खरीदी थी वह किताब पढ़कर मैंने बी. ए. के विषयों में पहला विषय दर्शनशास्त्र चुना, आज दुनियां के चुनिंदा दर्शनशास्त्रियों में मेरी गिनती होती है परन्तु यदि वह अधिति घर न आये होते तो, अतः नियति अपने विधाननुसार नियति तय करती है- इसको मानते हुए मैंने विषय बदलने का विचार त्याग दिया चाहता तो वांछित विषय मिल सकता था 1990 में एम. डी. करने के बाद मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग द्वारा 1991 में चयन उपरांत प्रथमश्रेणी राजपत्रित अधिकारी चिकित्सा



महाविद्यालय ग्वालियर में 1993 सहायक प्राध्यापक के रूप रेडिओलॉजीसिस विभाग पदस्थ हुआ। सन 2000 में सहाय्यापक एवं 2015 में प्राध्यापक पदोन्तत हुआ इसी समय मध्यप्रदेश सरकार ने जयारोग्य चिकित्सालय का संयुक्त संचालक एवं अधीक्षक के पद पर पदस्थ किया करीब चार वर्ष (अधीक्षकों के

एक्स-रे अल्ट्रासाउंड की स्थापना की थी सेवानिवृत्ति के पश्चात वही मेरा रेडियोलॉजिस्ट के रूप में कार्यक्षेत्र है परख ग्वालियर एवं सीमावर्ती जिलों में एक्स-रे एवं अल्ट्रासाउंड निदान हेतु जाना पहचाना नाम है रेडियोलॉजिस्ट के रूप में मेरी यात्रा जारी है।

length अनुसार कार्य करती हैं सूक्ष्म तरंगों आर्मस्ट्रॉन्ग यूनिट में सामान्य डिजिटल X-Ray जिसमें पुरानी डार्करूम की लंबी त्रामसाथ प्रक्रिया के स्थान पर तकाल केमरे से शरीर के किसी भी हिस्से के X ray प्राप्त किये जा सकते हैं क्ष किरणों के उपयोग से CT मशीने जिससे कुछ ही क्षणों में पूरे शरीर का चित्रण (whole body CT scan) किया जा सकता है।

X- Ray- CT scan में शरीर के सभी अंगों की कई प्रकार की जांचे की जा सकती हैं इसी प्रकार ध्वनि तरंगों का उपयोग से ultrasound द्वारा गर्भाधान से लेकर गर्भस्थ शिशु की एवं मानव शरीर के करीब करीब प्रत्येक अंग का आवश्यकतानुसार चित्रण किया जा सकता है MRI में भी अलग electromagnetic तरंगों का उपयोग कर शरीर के सभी हिस्सों का स्पष्ट चित्रण किया जा सकता है भविष्य में इस तकनीक से कोशिकाओं के स्तर का चित्रण संभव हो सकेगा जो अभी सूक्ष्मदर्शी यंत्रों से संभव है इसी प्रकार PET scan में अन्य तकनीकों द्वारा कैंसर के फैलाव को शरीर में प्रकट होने से काफी पूर्व देखा जा सकता है Interventional radiology द्वारा बड़े बड़े अप्रैशनों के स्थान पर कई सरल तकनीकों द्वारा उपचार संभव है जिसमें निरन्तर नई विधियां उपचार में प्रयोग की जा रही हैं। रेडियोलॉजी समग्र रूप से आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की रीढ़ कहा जाए तो अतिशयक्ति न होगी।

### 5. भावी रेडियोलॉजिस्ट्स को आप क्या टिप्प देना चाहेंगे

#### 3. रेडियोलॉजी से जुड़ी एक myth है की?

Diagnosis के दौरान निकलने वाली किरणें हानिकारक होती हैं इसपर आपका क्या कहना है? एक्स-रे से निकल ने वाली किरणें सामान्य निदान में उपयोग होने वाले एक्स-रेया अन्य प्रक्रियाओं में काफी सुरक्षित सीमा में प्रयोग की जाती है। आधुनिक मशीनों एवं सुरक्षा मानकों के मद्देनजर यह एक भ्राति ही है, अब तो गर्भवती माताओं के एक्स-रे भी निश्चित अवधि में किये जा सकते हैं।

#### 4. रेडियोलॉजी का भारत में पर्यूचर क्या है?

रेडियोलॉजी का भविष्य -8 नवंबर 1895 sir Wilhelm Conrad Rontgen के द्वारा अपनी पत्नी के हाथ के पंजे से खिंची गए प्रथम एक्स-रे से प्रारंभ हुई यात्रा एक वट वृक्ष का रूप ले चुकी है क्ष किरण जो कि प्रकाश (electro magnetic waves) की अलग-अलग wave

भावी रेडियोलॉजिस्ट्स को यही शीख है अपनी विद्या में कुशलतम व नेक इंसान बनिए यश व धन आपके पीछे पीछे आएगा। कैंसर की अनुवाआशिक डिकोडिंग भी संभव है जो रोगी के उपचार योजना में उपयोगी होता। भविष्य में भारत में एवं विश्व में रेडियोलॉजी उपयोगिता दिनोदिन बढ़ती ही जाएगी।

# टेनिस को ही बनाया ज़िंदगी: दक्ष प्रसाद



● (गूंज न्यूज नेटवर्क)

**हो** नहार टेनिस प्लेयर ग्वालियर के दक्ष प्रसाद ने दिल्ली में संपन्न हुई नेशनल टेनिस चैम्पियनशिप में अंडर 16 बालक वर्ग का खिताब जीत शहर का नाम देश भर में रोशन कर दिया है। ये प्रतियोगिता भारत में खेली जाने वाली सभी प्रतियोगिताओं में सबसे बड़ी है इसलिए सभी खिलाड़ियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण भी है। पहले ये प्रतियोगिता श्री राम ओपन फिर डी एस सी एल ओपन नाम से जानी जाती थी, विगत कुछ वर्षों से इसका आयोजन फेनेस्टा नेशनल चैम्पियनशिप नाम से किया जा रहा है। हमारे साथ स्टूडियो में दक्ष प्रसाद मौजूद हैं जो अपनी सफलता का अनुभव हमसे साझा करेंगे।

1. दक्ष, आप अपने बारे में बताइए।

मेरा नाम दक्ष प्रसाद है। मैं ग्वालियर में पैदा हुआ था और मैं ने खेलना भी यहीं शुरू किया। मेरे कोच विकास पांडे



आज देश-दुनिया में ग्वालियर का नाम ऐशन कर रहे हैं युवा खिलाड़ी एक ऐसे ही युवा खिलाड़ी दक्ष प्रसाद जिन्होंने दिल्ली में संपन्न हुई नेशनल टेनिस चैम्पियनशिप में अंडर 16 बालक वर्ग का खिताब जीत कर ग्वालियर शहर का नाम देश-दुनिया में ने ऐशन किया। आज गूंज पत्रिका अपनी कलम के माध्यम से ग्वालियर के होनहार प्रतिभाशाली खिलाड़ी दक्ष को अपनी कलम के माध्यम से सलाम कर रहे हैं जिन्होंने इतनी छोटी सी उम्र में ग्वालियर का नाम देश दुनिया में ऐशन किया है। आज वह किसी परिचय की जोहताज नहीं हैं उन्होंने अपने हुनर के दम पर यह मुकाम हासिल किया है और साबित कर दिया है कि आज युवा खिलाड़ी किसी से कम नहीं हैं। इस बार हम अपने पाठकों को गूंज स्टार के रूप में रूबरू करा रहे हैं।

सर ने मुझे खेलना सिखाया। मेरी बचपन से ही रुचि टेनिस में रही है। जिस समय मैं टेनिस खेलता हूं वो मेरे दिन का सबसे अच्छा समय होता है।

2. नेशनल जीतने के बाद आपको कैसा अनुभव हो रहा था, और अब आपका लक्ष्य क्या है?

मुझे बहुत अच्छा लग रहा था। मुझे अपने आप पर बहुत गर्व महसूस हो रहा था। मुझे लगा की मैं ने अपने जीवन में एक बड़ा माइल स्टोन स्थापित किया है क्योंकि कापड़ी कम ही लोग जीत पाते हैं। मुझे इस बात की भी बहुत खुशी है की मैं ने अपने माता और कोच सर को भी गारंवित किया। मेरा प्रयास यही है की मैं अपनी सफलता को बनाए रखूं। अब मेरा फोकस इंटरनेशनल टेनिस फेडरेशन पर है जिसे मैं अपने देश को पूरे विश्व में गौरांवित कर पाऊंगा।



### 3. उसके लिए आप क्या तैयारी कर रहे हैं?

मैं बहुत मेहनत कर रहा हूं। रोज़ प्रैक्टिस भी करता हूं। मैं अपने स्ट्रोक्स पर काम कर रहा हूं। क्योंकि टेनिस में सबसे ज्यादा जरूरी होता है की आपके स्ट्रोक्स कितने पावरफुल और सही तरीके से किए गए हैं। अगर एक बार स्ट्रोक्स



पर कमांड पाली तो बाकी का गेम आसान हो जाता है। ऐसा बोला जा सकता है की टेनिस खेलने के लिए सबसे पहले स्ट्रोक्स पर काम करना चाहिए।

### 4. आपको टेनिस खेलने की प्रेरणा कब मिली?

मैं 5 साल की उम्र से टेनिस खेल रहा हूं। जब मैं गेम का सिलेक्शन कर रहा था तब रास्ते में ग्वालियर चंबल टेनिस एसोसिएशन पड़ता था, मैंने वहां जाना शुरू कर दिया में जाना शुरू कर दिया था जब मैं गेम का सिलेक्शन कर रहा था, और तबसे ही टेनिस खेलने का जुनून संवार हो चुका था।

### 5. अपनी जीत का श्रेय आप किसको देना चाहेंगे?

मेरे जो भी करीबी लोग हैं। मेरे माता पिता, मेरे कोच विकास पांडे जी और दोस्तों को मेरी जीत का श्रेय जाता है। इन लोगों ने हमेशा मेरा मनोबल बढ़ाया है। मेरे माता पिता ने मेरा खेल के प्रति प्यार समझा और कोच सर ने मुझे मेरे लक्ष्य को पूरा करने के लिए लागातार मेहनत करने की प्रेरणा दी।

### 6. इंडियन टेनिस के प्यूचर के बारे में आपका क्या सोचना है ?

खिलाड़ी बहुत मेहनत कर रहे हैं। उनको अच्छा गाइडेंस भी मिल रहा है। सरकार द्वारा भी अच्छी सुविधाएं मिल रही हैं। इंडियन टेनिस का प्यूचर बहुत अच्छा है। अगर खेलों पर और ज्यादा ध्यान दिया जाए तो खिलाड़ी पूरे विश्व में भारत को खेलों के क्षेत्र में अच्छा मुकाम दिला सकते हैं।

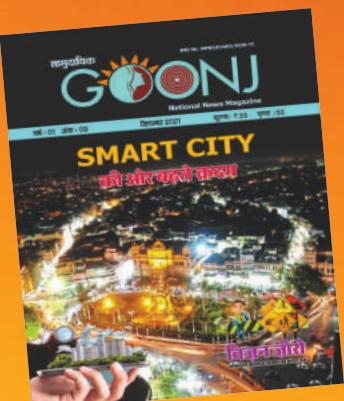
### 7. क्या टेनिस प्लेयर्स को अच्छी फैसिलिटीज मिलती हैं?

हां। खिलाड़ियों को हर तरह की फैसिलिटी दी जाती है। उनको किसी प्रकार की कमी का अभाव नहीं होता है। सरकार अपने द्वारा जिताना कर सकती है उनमा अच्छा कर रही है। मुझे भी कभी किसी तरह का अभाव महसूस नहीं हुआ।

### 8. आपके कोच विकास पांडेय जी की आपके जीवन में क्या भूमिका रही है ?

बचपन से ही उन्होंने मुझे खेलना सिखाया। मुझे टेनिस में रुचि थी और मुझे इस क्षेत्र में बढ़ने की प्रेरणा उन्होंने दी। सबसे मुश्किल होता है बैसिक सीखना और उन्होंने मेरी कमांड उस पर ही बनवाई की किस तरह स्ट्रोक्स मारने होते हैं। खिलाड़ी को अगर अच्छा कोच मिल जाए तो उसके लिए चीज़ें कर पाना आसान हो जाता है क्योंकि उसको मार्गदर्शन मिलता है पर मार्ग पर चलना खुद ही होता है। कोच सर ने हमेशा मेरा मनोबल बढ़ाया है और खेलने के लिए उत्साहित किया है। उन्होंने मेरे जीवन को एक नई दिशा दी। मेरी सफलता में उनका बहुत बड़ा हाथ है।





गूँज मीडिया ग्रुप के पाठकों को दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं



**GOONJ**  
National News Magazine

**सदस्यता फॉर्म**



देश के सभी प्रदेशों एवं मध्य प्रदेश के सभी जिलों में प्रसारित ग्वालियर चम्बल अंचल की लोकप्रिय पत्रिका गूँज की वार्षिक सदस्यता ग्रहण करें

**(मात्र 1500 रुपए में वार्षिक सदस्य बनें)**  
**गूँज पत्रिका पढ़ें पूरे एक साल**

पत्रिका में अपने संस्थान/संस्था/फर्म/बर्थ-डे/मैरिज एनीवर्सरी/पुण्यतिथि, अथवा कोई भी विज्ञापन पत्रिका में प्रकाशित करवाएं (साइज एक चौथाई) एक बार बिल्कुल फ्री में गूँज नेशनल न्यूज मैगजीन की सदस्यता प्राप्त करने का इच्छुक हूँ कृपया मुझे पत्रिका की सदस्यता प्रदान करें।

नाम..... जन्म तिथि..... व्यवसाय.....

राज्य..... शहर..... संपर्क/पता.....

**हस्ताक्षर**

website : [www.goonjgwl.com](http://www.goonjgwl.com), Email : goonjgwl@gmail.com

**Address : E-69, Harishankarpuram, Gwalior (M.P.) Cont-7880075908 7880040908**

# दीपों के झिलमिलाते पर्व दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं



## विजन जीरो योजना

परिवहन विभाग ने सड़क दुर्घटनाएँ रोकने और दुर्घटना में घायल लोगों की जान बचाने के लिए सुरक्षित प्रणाली पर आधारित विजन जीरो मध्यप्रदेश योजना तैयार की है। विजन जीरो मध्यप्रदेश योजना पाँच स्तम्भों पर आधारित है। इसमें सुरक्षित गति, सुरक्षित रोड़, सुरक्षित वाहन, सुरक्षित चालक व्यवहार और दुर्घटना उपरांत सहायता शामिल है। परिवहन, पुलिस, राष्ट्रीय सड़क विकास प्राधिकरण, लोक निर्माण विभाग, शिक्षण संस्थाओं, चिकित्सक व स्वयंसेवी संस्थाओं सहित सम्पूर्ण सामाज की भागीदारी से विजन जीरो मध्यप्रदेश को अमलीजामा पहनाया जाएगा। सभी लोग अपनी जवाबदेही निभाकर सड़क दुर्घटनाएँ रोकने में मददगार बनें। हम सबका नैतिक दायित्व है यदि दुर्घटना हो जाती है तो मानवता के नाते घायल को जल्द से जल्द अस्पताल पहुँचाएँ जिससे उसकी जान बचाई जा सके।



**मुकेश जैन  
आयुक्त परिवहन**

**अपील**  
सड़क सुरक्षा के नियमों  
का पालन करें,  
कोरोना गाइड लाइन  
का पालन करें,  
मारक अवश्य लगाएं।



**अरविंद कुमार सक्सेना  
डिप्टी ट्रांसपोर्ट कमिश्नर परिवहन**



EDUCATION AND TRAINING  
ARE CRUCIAL IN INSTILLING  
APPROPRIATE BEHAVIORS AND  
ATTITUDES IN ROAD USERS



CRACKING DOWN ON TRAFFIC OFFENCES  
WILL MAKE A DIFFERENCE



GUIDE FOR  
ROAD SAFETY OPPORTUNITIES  
AND CHALLENGES:  
LOW-AND MIDDLE-INCOME  
**COUNTRY PROFILES**





# PARAKH

X-RAY, ULTRASOUND & COLOUR DOPPLER CENTRE

## Dr. R.P. Gupta

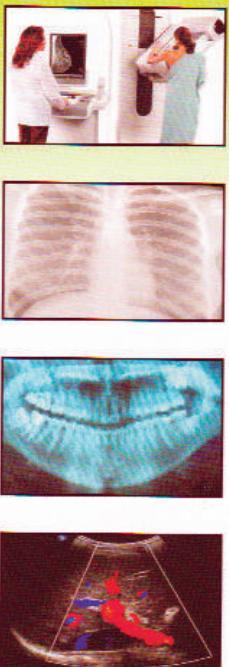
M.D. (Radiology)  
Sonologist,  
Radiologist & C.T.  
Scan Specialist

## Dr. J.S. Sikarwar

Hony. Consultant  
M.D. (Radiology)  
Professor, G.R. Medical  
College, Gwalior



### PARAKH X-RAY & ULTRASOUND



#### Facilities Available

- Digital X-Ray
- Ultrasonography
- High Resolution Sonography
- Colour Doppler
- USG - 3D / 4D
- Anomaly Scan / Target Scan
- O.P.G.
- ECHO Cardiography
- Mammography



परख

एक्स-रे, अल्ट्रासाउण्ड एवं क्लर डॉप्पलर सेन्टर



"We Care"

पुराना बस स्टेण्ड, कम्पू लश्कर, ग्वालियर- 474009 (म.प्र.) सम्पर्क: (0751) 2628850, 4030299